केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

दिसंबर 2025 अंक, वर्ष 26, नं 78

डी-1, लक्ष्मीनगर, पद्मश्री. डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर रोड, पट्टम पालस पोस्ट, तिरुवनन्तपुरम-695 004

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के 44वें वार्षिक समारोह का उद्घाटन करती हुई पद्मश्री डॉ. अश्वति तिरुनाल गौरी लक्ष्मी बाई तम्पुराट्टी

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर हिन्दी गवेषणा पुरस्कार-2024 डॉ. जे अजिता कुमारी को प्रदान करते हुए श्री. टी.के.ए. नायर (आई.ए.एस, सेवानिवृत्त पूर्व प्रधानमंत्री का सलाहकार)

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका का प्रकाशन

44वाँ वार्षिक सम्मेलन और डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर हिन्दी गवेषणा पुरस्कार (2024) समर्पण समारोह का कार्यक्रम

श्रीमती गीता कुमार पी.ओ.

श्रीमती राजपुष्पम पीटर

डॉ. एस. सुनन्दा

तम्पूराट्टी को उत्तरीय ओढाकर स्वागत करती हुई श्रीमती नीरजा राजेन्द्रन

श्री. टी.के.ए. नायर को उत्तरीय ओढाकर स्वागत करती हुई कुमारी मालविका चन्द्रा

न्यायमूर्ति एम.आर. हरिहरन नायर

तम्पुराटी उद्घाटन भाषमण देती हुई

श्री. टी.के.ए. नायर भाषण देते हुए

डॉ. एस. लीलाकुमारी अम्मा

डॉ. पी.जे. शिवकुमार

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

दिसंबर 2025 अंक, वर्ष 26, नं 78

डी-1, लक्ष्मीनगर, पद्मश्री एन. चन्द्रशेखरन नायर रोड, पट्टम पालस पोस्ट, तिरुवनन्तपुरम-695 004

keralahindisahityaacademy.com www.drnchandrasekharannair.in

पीयर रिव्यू समिति
प्रो. (डॉ) जी. गोपीनाथन
प्रो. (डॉ) एन. रवीन्द्रनाथ
प्रो. (डॉ) आर. शशिधरन

संस्थापक सम्पादक
पद्मश्री. डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर

संरक्षक
जस्टिस एम. आर. हरिहरन नायर

मुख्य सम्पादक
प्रो. (डॉ) एस. तंकमणि अम्मा

सम्पादक
प्रो. (डॉ) सी.जे. प्रसन्नकुमारी

प्रबंध सम्पादक
डॉ. एस. सुनंदा

सम्पादक मंडल
प्रो. (डॉ) पी.जे. शिवकुमार
प्रो. (डॉ) एम.एस. विनयचन्द्रन
प्रो. (डॉ) एस. लीलाकुमारी अम्मा
प्रो. (डॉ) के. श्रीलता
डॉ. रम्या जी.एस. नायर

सम्पादकीय कार्यालय
केरल हिन्दी साहित्य अकादमी,
श्रीनिकेतन, डी-1, लक्ष्मीनगर,
पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर रोड
पट्टम पालस पोस्ट,
तिरुवनन्तपुरम - 695 004

प्रकाशकीय कार्यालय
मुद्रित (द्वारा)
डॉ. एस. सुनन्दा, महासचिव,
केरल हिन्दी साहित्य अकादमी
श्रीनिकेतन, डी-1, लक्ष्मीनगर,
तिरुवनन्तपुरम - 695 004
मो: 8800095639

मूल्य-एक प्रति	:	₹ 50/-
आजीवन सदस्यता	:	₹ 1000/-
संरक्षक	:	₹ 2000/-

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं हैं।

इस अंक में

1.	**संपादकीय**	डॉ. सी.जे. प्रसन्नकुमारी	3
2.	हो रहा है 'केरल हिंदी साहित्य अकादमी' का दिगंतव्यापी विस्तार	डॉ. सी.जे. प्रसन्नकुमारी	4
3.	डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर —स्मृतियों में अमर एक व्यक्तित्व	न्यायमूर्ति. एम.आर. हरिहरन नायर	6
4.	पद्मश्री डॉ एन.चन्द्रशेखरन नायर: भारतीय संस्कृति के प्रबल हिमायती साहित्यकार	डॉ. एस. तंकमणि अम्मा	9
5.	ज्ञानतपस्वी डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर	डॉ. सी.जे. प्रसन्नकुमारी	11
6.	हिंदी साहित्य की प्रगति और कृत्रिम मेधा	डॉ. अनीश सिरियक	13
7.	हिंदी साहित्य की प्रगति में कृत्रिम मेधा की देन	डॉ. जे. अजिताकुमारी	18
8.	साहित्यिक संवेदना और कृत्रिम मेधा: क्लारा एंड द सन के संदर्भ में	केसरबेन राजपुरोहित	20
9.	हिंदी साहित्य की प्रगति में कृत्रिम बुद्धि का योगदान	पूजा कुमारी मंडल	23
10.	हिंदी साहित्य और कृत्रिम मेधा: संभावनाएँ और चुनौतियाँ	अमला वर्गीस	24
11.	कृत्रिम बुद्धिमत्ता का पर्दाफाश - राजेश जैन की 'प्रोग्रामिंग' कहानी के विशेष संदर्भ में	मिनी. एन	30
12.	हिंदी साहित्य की वृद्धि और कृत्रिम मेधा	मात्यूस के.एस.	33
13.	हिंदी साहित्य और कृत्रिम बुद्धिमत्ता: प्रगति, चुनौतियाँ और भावी दिशा	आर्द्रा	35
14.	हिंदी साहित्य की वृद्धि में कृत्रिम मेधा की भूमिका	भुवना श्रीकुमार	37
15.	हिंदी साहित्य की प्रगति में कृत्रिम मेधा की पहुँच	क्रिस्टो जोस	39
16.	हिंदी साहित्य के विकास में कृत्रिम मेधा का योगदान	गायत्री. पी.के	40
17.	हिंदी साहित्य और कृत्रिम बुद्धि	गायत्री. सी.जी	41
18.	हिंदी साहित्य की प्रगति और कृत्रिम मेधा	जानिया जॉन	44
19.	हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि में कृत्रिम बुद्धि	जैस्मिन कबीर	46
20.	हिंदी साहित्य की प्रगति और कृत्रिम मेधा	नमिता के. एम.	48
21.	कृत्रिम मेधा और हिंदी साहित्य	संध्या मैलाटी	50
22.	हिंदी साहित्य की उन्नति और कृत्रिम बुद्धि	सुचित्रा वेणुगोपाल	52
23.	हिंदी साहित्य की प्रगति में कृत्रिम बुद्धिमत्ता	उम्मु आमिना पी.एन.	54
24.	ममता, मेरी माँ की	जानकी पी.एस.	54
25.	केरल हिंदी साहित्य अकादमी : वार्षिक रिपोर्ट 2024	डॉ.एस. लीलाकुमारी अम्मा	55

संपादकीय

'केरल हिंदी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका' का अंक 2025 पाठक-पाठिकाओं के सामने प्रस्तुत हो रहा है। केरल हिंदी साहित्य अकादमी, तिरुवनंतपुरम की इस मुख पत्रिका के नवीनतम अंक का लोकार्पण सन् 2025 दिसंबर 28 को आयोजित होनेवाले अकादमी के 45 वें वार्षिक सम्मेलन के भव्य समारोह में संपन्न हो जाएगा। केरल के हिंदी साहित्य जगत के महास्तंभ, पद्मश्री डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर के संपादकत्व में सन् 1996 में शुभारंभित यह पत्रिका हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में पिछले तीन दशकों से अपनी अहं भूमिका निभा रही है। संस्थापक संपादक नायरजी के स्वर्गवास के बाद भी उनकी सुपुत्री डॉ. एस.सुनंदा के सहयोग से उच्च न्यायालय केरल के भूतपूर्व न्यायमूर्ति एम.आर.हरिहरन नायर के संरक्षण एवं केरल की नामी लेखिका एवं केरल विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग की भूतपूर्व अध्यक्षा डॉ.एस.तंकमणि अम्मा की अध्यक्षता में अकादमी सर्वांगीण विकास के पथ पर अग्रसर हो रही है, शोध पत्रिका धूम-मचाती केरल के हिंदी साहित्य संसार को निर्देशन दे रही है।

इस साल अकादमी ने कई नए कार्यकलापों का श्रीगणेश किया। आज प्रौद्योगिकी प्रचंड रफ्तार में आगे बढ रही है। कृत्रिम मेधा मनुष्य की वैयक्तिक सामाजिक ज़िंदगी में सकारात्मक, नकारात्मक असर पैदा कर रही है। अब दुनिया में ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं जहाँ प्रौद्योगिकी, कृत्रिम मेधा की दखल न हो। कृत्रिम मेधा हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास में क्या-क्या योगदान दे सकती है - इसी प्रासंगिकता को दृष्टि में रखकर अकादमी ने, 'हिंदी साहित्य की प्रगति एवं कृत्रिम मेधा' विषय का चयन किया और शोधालेख आमंत्रित किया। इस प्रतियोगिता में प्राप्त आलेखों से प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त आलेखों के साथ स्तरीय आलेखों को भी पत्रिका के 2025 अंक में शामिल करके पत्रिका को युगानुरूप बनाने की कोशिश की है। साथ ही हिंदी पखवाडा समारोह में कॉलेज स्तर पर आयोजित कविता-लेखन प्रतियोगिता पर प्रथम स्थान प्राप्त कविता भी पत्रिका में समेटी हैं। सन् 2018 से अकादमी द्वारा दिये जानेवाले 'डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर गवेषणा पुरस्कार' केलिए इस साल डॉ.आतिरा बाबु का चयन हुआ है। 50000 रुपए की नकद, प्रशस्तिपत्र एवं प्रमाणपत्र सहित पुरस्कार 28 दिसंबर 2025 के वार्षिक सम्मेलन में प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार विजेता डॉ. आतिरा बाबु का हार्दिक अभिनंदन। शोध आलेख प्रतियोगिता में प्रथम, दूसरे, तीसरे स्थान प्राप्त पूजाकुमारी मंडल (प्रथम), अमला वर्गीस (द्वितीय), मिनि.एन, मात्यूस.के.एस (तृतीय) को हार्दिक बधाई।

अकादमी के पिछले साल की बहुआयामी गतिविधियों का सचित्र अंकन एवं सन् 2024 वार्षिक सम्मेलन के प्रतिवेदन को पत्रिका में स्थान मिला है। केरल हिंदी साहित्य अकादमी का वैभवपूर्ण इतिहास, शोध पत्रिका संबंधी विशद जानकारी, अकादमी के संस्थापक अध्यक्ष, पत्रिका के संस्थापक संपादक, साहित्य के परम साधक एवं इतिहासवेता पद्मश्री.डॉ.नायर जी के सर्जनात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक व्यक्तित्व की झांकी से अलंकृत है यह अंक। विश्व की सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक लिपि देवनागरी में लिखी जानेवाली, भारत संघ की राजभाषा, संपर्क भाषा हिंदी को विश्वभाषा के उत्तुंग शिखर पर विराजित कराने केलिए किये जानेवाले प्रयासों में एक छोटी, नगण्य भूमिका निभाकर, हमेशा की तरह हिंदी पखवाडा समारोह से जुड़कर, भारत के सुदूर दक्षिण की यह स्वैच्छिक संस्था एवं पत्रिका स्वयं गौरवान्वित हैं। आशा है कि वैविध्यपूर्ण ज्ञानदायिनी पुष्पों से अलंकृत इस 'सौरभमय रंगोली' को सुधी पाठक हृदय से लगाएँगे। बहुमूल्य सुझाव एवं प्रतिक्रिया का स्वागत।

डॉ. सी.जे. प्रसन्नकुमारी,

पूर्व हिंदी विभागाध्यक्षा, सरकारी महिला कॉलेज, तिरुवनंतपुरम

हो रहा है 'केरल हिंदी साहित्य अकादमी' का दिगंतव्यापी विस्तार

डॉ. सी.जे. प्रसन्नकुमारी

केरल हिंदी साहित्य अकादमी दक्षिण भारत की ख्याति प्राप्त स्वैच्छिक हिंदी संस्था है जो केरल प्रांत की राजधानी तिरुवनंतपुरम में कार्यरत है। अब इस संस्था का दिगंत व्यापी विस्तार हो रहा है और पूरे विश्व में अपनी परचम लहरा रही है। केरल के साहित्य, सांस्कृतिक जगत के महामेरु, बहुमुखी प्रतिभावान हिंदी मलयाळम साहित्यकार, भाषा शास्त्री, चित्रकार पद्मश्री डॉ.जन. चंद्रशेखरन नायर के नेतृत्व में सन् 1980 में स्थापित यह संस्था भारत की भावात्मक एकता एवं हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार रूपी अपने महान लक्ष्य के मंजिल की ओर तेज रफ्तार में आगे बढ़ रही है।

सन् 1980 में अपने दो चार मित्रों के सहयोग से पद्मश्री डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर ने 'केरल हिंदी साहित्य परिषद्' नामक एक संस्था को जन्म दिया और 24.09.1980 सायंकाल में इस संस्था का औपचारिक उद्घाटन वी.जे.टी हॉल (अब श्री.अय्यंकाळि हॉल) में केरल के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री.ई.के.नायनार ने किया। आगे के दो वर्षों में संस्था पल्लवित पुष्पित हुई, बहुविध कार्यकलापों के आयोजन में अभूतपूर्व सफलता हासिल की। फिर सन् 1982 में इस परिषद का पंजीकरण (पंजीकरण संख्या 277/2) केरल हिंदी साहित्य अकादमी नाम से हुआ। इस अकादमी का उद्घाटन और संस्था का वार्षिक सम्मेलन एक साथ संपन्न हुआ। अकादमी का उद्घाटन दिनांक 5 अक्तूबर 1983 में यानी गाँधी जयंती सप्ताह के अवसर पर, तीर्थपाद मंडप में केरल के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री. करुणाकरन के करकमलों से संपन्न हुआ। वार्षिक सम्मेलन के उद्घाटक रहे केंद्र के तत्कालीन परिवहन मंत्री जिआउर रहमान अन्सारी।

परिषद और बाद में अकादमी बनी इस संस्था की स्थापना के पीछे के महान लक्ष्य को साकार बनाने केलिए संस्थापक ने इसकी नियमावली को अनेक कार्यकलापों से सुसज्जित किया और उन्हें निभाने का अथक परिश्रम किया। भाषाई एवं सांस्कृतिक एकता को बनाए रखना, योग्य पुस्तकों की रचना एवं प्रकाशन, हिंदीतर प्रदेशों में रचित हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शिनी, दक्षिण भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ उत्कृष्ट ग्रंथों का शोधपरक अध्ययन, भाषाई, सांस्कृतिक सम्मेलनों एवं संगोष्ठियों का आयोजन, तुलनात्मक अध्ययन में रत अकादमी के सदस्यों केलिए प्रोत्साहन, पुरस्कार, आदर एवं सम्मान, दक्षिण के उत्कृष्ट साहित्यकारों को उपाधियाँ प्रदान करना, अकादमी की ओर से मुद्रणालय की स्थापना, पत्रिका का प्रकाशन, शैक्षणिक, सांस्कृतिक यात्रा हेतु वित्तीय सहायता, दक्षिण भारतीय भाषाओं के बीच सांस्कृतिक अध्ययन, लेन-देन, भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ रचनाओं का अनुवाद, उदीयमान लेखकों का प्रोत्साहन एवं उनकी रचनाओं का प्रकाशन जैसे विशाल लक्ष्यवाली नियमावली के तहत संस्था अब भी सतत प्रयासरत है।

अकादमी के महान लक्ष्य की पूर्ति में संस्थापक ने अपने जीवनकाल में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की थी। संस्थान ने पिछले 44 वर्षों में हिंदी और मलयाळम भाषा की गतिविधियों पर अनेकानेक संगोष्ठियों, चर्चाओं का आयोजन किया। सन् 1989 में प्रकाशित डॉ.नायर जी द्वारा प्रणीत 'केरल के हिंदी साहित्य का बृहद इतिहास' हिंदी जगत केलिए अकादमी की एक महत्वपूर्ण देन है। अकादमी के कार्यकलापों और प्रगति पर श्री.जी.आर.मधु का शोधकार्य और सन् 2022 में श्री रंजीत रविशैलम के संपादकत्व में 'श्रीचंद्रशेखरम' शीर्षक में निकला संस्थापक पद्मश्री नायरजी का स्मृति ग्रंथ भी महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं।

इस साल एक नये कर्यक्रम के रूप में 'हिंदी साहित्य की प्रगति एवं कृत्रिम मेधा' विषय पर शोधालेख प्रतियोगिता

का आयोजन हुआ। शोधालेख प्रतियोगिता में क्रमशः प्रथम, द्वितीय स्थान प्राप्त पूजा कुमारी मंडल, अमला वर्गीस को हार्दिक अभिनंदन। तृतीय स्थान दो मेधावी छात्रों ने बांट लिया – मिनी.एन. और मात्यूस.के.एस। आद्रा प्रोत्साहन सम्मान के अधिकारी बने। सबका हार्दिक अभिनंदन। सन् 29 अक्तूबर 2025 के दिन अकादमी ने एक संगोष्ठी का आयोजन किया और चयनित आलेखों की प्रस्तुति हुई। डॉ.सी.जे.प्रसन्नकुमारी के संयोजन में हुई संगोष्ठी डॉ. एस.तंकमणि अम्मा की अध्यक्षता में संपन्न हुई और अकादमी के संरक्षक जस्टिस एम.आर.हरिहरन नायर ने उद्घाटन किया। संत थोमस कॉलेज, पाला के प्रोफसर डॉ.अनीश सिरियक का बीजभाषण और डॉ.सुनंदा के आशीर्वाद भाषण, श्रीमती.दिव्यारानी.के.एस की प्रार्थना एवं डॉ.डी.अंजना के संचालन और गणमान्य विद्वानों की उपस्थिति ने कार्यक्रम को सफल बनाया। डॉ.एस. लीलाकुमारी अम्मा ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

सन् 2022 जनवरी 10 को संस्थापक पद्मश्री नायरजी के स्वर्गवास के बाद माँ सरस्वती के इस वरद पुत्र की जाज्वल्यमान आत्मा की प्रेरणा से एक कार्यकारिणी समिति के नेतृत्व में संस्था आगे बढ़ रही है। केरल के उच्चन्यायालय के न्यायमूर्ति श्री.एम.आर.हरिहरन नायर के संरक्षण में केरल विश्वविद्यालय की भूतपूर्व विभागाध्यक्षा एवं लेखिका डॉ.एस.तंकमणि अम्मा की अध्यक्षता में अब संस्था कार्यरत है। पद्मश्री चंद्रशेखरन नायर की सुपुत्री डॉ.एस.सुनंदा संस्था के महासचिव का दायित्व बखूबी निभा रही है।

केरल हिंदी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

केरल हिंदी साहित्य अकादमी की अपनी मुख पत्रिका है, 'केरल हिंदी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका' जिसका श्रीगणेश सन् 1996 में अकादमी के संस्थापक अध्यक्ष पद्मश्री डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायरजी के संपादकत्व में हुआ था। केरल की कला, साहित्य और संस्कृति को हिंदी के माध्यम से बढावा देना ही पत्रिका उद्देश्य था। इसी लक्ष्य की उद्घोषणा करते हुए 'साहित्य अकादमी के इतिहास' के प्रकाशन के संदर्भ में संपादक नायरजी का कथन "मैं मानता हूँ कि अकादमी के मुख पत्र 'शोध पत्रिका' के माध्यम से आसेतु हिमाचल के बीच हमारी संस्कृति एवं भावधारा को सुस्थापित रखग जा सकता है और इस प्रयास में अपनी ढलती अवस्था को पुनर्जीवित रख सकता हूँ।" (केरल हिंदी साहित्य अकादमी सन् 1980 से 18.08.1999 तक का इतिहास – जी.आर.मधु)

नायरजी के ब्रह्मलीन होने के बाद सन् 2024 में प्रो. डॉ.एस.तंकमणि अम्मा के संपादकत्व में पद्मश्री डॉ.चंद्रशेखरन नायरजी के कृतित्व को समेटते हुए पत्रिका निकाली गयी और 28 दिसंबर 2024 को अकादमी के वार्षिक समारोह में उसका लोकार्पण हुआ। पिछले 44 वर्षों से धूम मचाती आगे बढती पत्रिका के 2025 अंक का लोकार्पण 28 दिसंबर 2025 को संपन्न हो जाएगा। प्रार्थना के साथ, संस्थापक नायर जी के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि के साथ।

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर की प्रकाशित पुस्तकें

पद्मश्री.डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर जी ने अकादमी के कार्यकलाप को एकदम अनूठा स्थापित करते हुए सन् 2018 में केरल के विश्वविद्यालयों में से हिंदी में पीएच.डी प्राप्त शोध प्रबंधों से उत्कृष्ट शोध प्रबंध का चयन कर उसे पचास हज़ार (₹ 50000) रुपए का "डॉ. एन. 'चंद्रशेखरन नायर हिंदी गवेषणा पुरस्कार" का शुभारंभ किया। यह पुरस्कार सन् 2018 में एन.एस.एस.हिंदू कॉलेज, चंङ्ङनाशेरी के हिंदी विभाग की सह आचार्या डॉ.रेणु.एस.एस और 2019 में महाकवि जी मेम्मोरियल एन.एस.एस कॉलेज अंकमालि की अध्यापिका डॉ.रेमी को मिला था। 2020,2021,2022 के पुरस्कार क्रमश: डॉ.सुप्रिया.के.पी, डॉ. के.वी. रंजिता रानी और डॉ.लक्ष्मी.एस.नायर को मिलें हैं। 2023 का पुरस्कार डॉ. दिलना के को मिला। डॉ.जे.अजितकुमारी सन् 2024 के पुरस्कार से विभूषित हुई। सन् 2025 के पुरस्कार विजेता है डॉ. आतिरा बाबु। यह तो नयी पीढी केलिए प्रोत्साहनजनक बात है, हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार एवं सर्वांगीण विकास की दिशा का एक नया कदम है।

पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर गवेषणा पुरस्कार 2018 डॉ. रेणु एस. को देते हुए

पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर गवेषणा पुरस्कार 2019 डॉ. रेमी ए. एम. को देते हुए

पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर गवेषणा पुरस्कार 2020 डॉ. सुप्रिया के.पी को देते हुए

पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर गवेषणा पुरस्कार 2021 डॉ. के.वी. रजिता रानी को देते हुए

पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर गवेषणा पुरस्कार 2022 डॉ. लक्ष्मी एस. नायर को देते हुए

पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर गवेषणा पुरस्कार 2023 डॉ. दिलना के. को देते हुए

पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर गवेषणा पुरस्कार 2024 डॉ. जे. अजिताकुमारी को देते हुए

पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर गवेषणा पुरस्कार 2025 विजेता
डॉ. आतिरा बाबू

डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर — स्मृतियों में अमर एक व्यक्तित्व

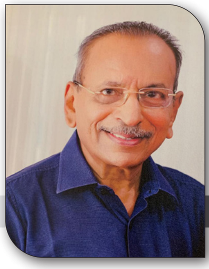

न्यायमूर्ति. श्री. एम.आर. हरिहरन नायर

जब 'शोध-पत्रिका' की संपादिका डॉ.सी.जे.प्रसन्नकुमारी ने मुझसे इसके अगले अंक में संस्थापक पर एक लेख लिखने का अनुरोध किया तो मेरी स्मृतियाँ 1958 से 1961 तक महात्मा गांधी कॉलेज के उन दिनों में लौट गईं। जिस दिन वे हिंदी पढ़ाने आए, जिस निष्ठा से उन्होंने भाषा का ज्ञान विद्यार्थियों को दिया और जिस सम्मान के साथ विद्यार्थियों ने उन्हें प्रत्युत्तर में आदर दिया - वह सब आज भी मेरी स्मृतियों में ताज़ा है। उनके भावी ससुर प्रो.एम.पी.मन्मथन तब हमारे प्रिंसिपल थे। मैं 20 वर्ष की आयु में सरकारी नौकरी के आकर्षण में कॉलेज छोड़ गया। उसके बाद न कॉलेज से और न ही शिक्षकों से मेरा संपर्क रहा।

पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर

कई दशकों बाद हम पुनः मिले - जब मैंने 2011 के आसपास अपने पुराने कक्षा-कक्ष में एक अल्मिने मीट आयोजित करने की पहल की। हमने अपने सभी पुराने शिक्षकों को आमंत्रित किया था। स्वाभाविक रूप से प्रो. चंद्रशेखरन नायर भी आमंत्रितों में थे। उन्होंने उस दिन अपने पुराने विद्यार्थियों की प्रशंसा में एक उत्कृष्ट भाषण दिया।

इसी बैठक के बाद उन्होंने मुझसे आग्रह किया कि मैं उनके द्वारा स्थापित केरल हिंदी साहित्य अकादमी (KHSA) का संरक्षक बनूं। पिछले लगभग 14 वर्षों में ऐसा कोई कार्यक्रम नहीं हुआ जिसमें मैं उपस्थित न रहा हूँ, क्योंकि वे इस बात पर विशेष रूप से आग्रह करते थे कि संरक्षक हर समारोह में उपस्थित रहें। इन्हीं निरंतर संपर्कों के दौरान मैंने प्रो.चंद्रशेखरन नायर के बहुआयामी कार्यों को निकट से देखा। वे 10 जनवरी 2022 को 99 वर्ष की आयु में इस संसार से विदा हो गए, किंतु उनके कार्यों की स्मृतियाँ आज भी जीवंत हैं।

डॉ. एन.सी. नायर का जन्म कोल्लम जिले के शास्तांकोट्टा में एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। अपनी पढ़ाई और चार वर्षों तक विद्यालयों में अध्यापन के पश्चात उन्होंने 1951 में तिरुवनंतपुरम के महात्मा गांधी कॉलेज में हिंदी व्याख्याता के रूप में कार्य प्रारंभ किया। उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. तथा बिहार विश्वविद्यालय से पीएच.डी. प्राप्त की।

उन्हें डी.लिट. की उपाधि, यू.जी.सी. के मेजर रिसर्च फेलो का सम्मान तथा एमेरिटस प्रोफेसर की उपाधि प्राप्त हुई। 1976 से 2010 तक वे भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों की हिंदी सलाहकार समितियों के सलाहकार रहे। वे एन.एस.एस. कॉलेजों में हिंदी विभागाध्यक्ष और गांधी शताब्दी समिति के अध्यक्ष भी रहे।

पद्मश्री पुरस्कार

हिन्दीरत्न सम्मान

विश्व हिन्दी सम्मान

गणेश शंकर विद्यार्थी सम्मान

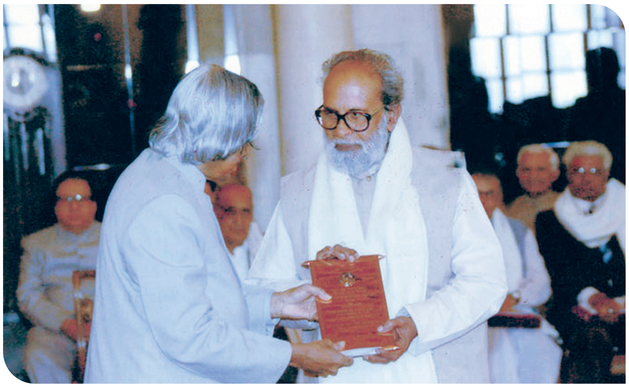

केरल हिन्दी प्रचार सभा डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर पद्मश्री अभिनंदन समारोह

पीएसयू/नवरत्नो-टोलिक पुरस्कर

डॉ.नायर जी ने हिंदी प्रचार और गांधीवादी आदर्शों के प्रसार को अपना धर्म माना। उन्होंने 1980 में केरल हिंदी साहित्य अकादमी (KHSA) की स्थापना की। ओट्टापालम में रहते हुए उन्होंने गांधी विज्ञान भवन और भारत युवक समाज की स्थापना की ताकि गांधीवादी जीवन-मूल्यों का प्रसार हो।

अपने घर में उन्होंने एक समृद्ध पुस्तकालय स्थापित किया, जो आज भी पीएच.डी. छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए एक मूल्यवान स्रोत है।

2018 में उन्होंने केरल के सर्वश्रेष्ठ हिंदी पीएच.डी. शोधप्रबंध के लिए एक पुरस्कार की स्थापना की - ₹50,000, प्रशस्तिपत्र और प्रमाणपत्र सहित।

प्रोफसर चंद्रशेखरन नायर हिंदी और मलयाळम दोनों भाषाओं के प्रमुख लेखक थे। कवि, उपन्यासकार, नाटककार, कहानीकार, शोधकर्ता, चित्रकार और समीक्षक के रूप में विख्यात थे। उन्होंने हिंदी में 50 से अधिक मौलिक पुस्तकें लिखीं, जिनमें से अनेक भारतीय विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित हैं। वे एक कुशल चित्रकार भी थे - उनकी कई चित्रकृतियाँ तिरुवनंतपुरम और नई दिल्ली में प्रदर्शित हुईं तथा इंडियन एयरलाइंस की पत्रिका स्वागत में प्रकाशित हुईं।

साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उन्हें 2015 में विश्व हिंदी सम्मान से अलंकृत किया गया। जीवनकाल में प्राप्त पुरस्कारों की श्रृंखला में 'पद्मश्री' अंतिम था। मैं स्वयं उस अवसर का साक्षी हूँ जब राज्य के तत्कालीन मुख्य सचिव डॉ. वी. पी. जॉय अकादमी मुख्यालय पहुँचे और उन्हें राष्ट्रपति पदक तथा प्रशस्तिपत्र प्रदान किया - उस दिन उनके चेहरे पर जो सबसे बड़ी मुस्कान थी, वह अद्भुत थी।

मरणोपरांत भी सम्मान की श्रृंखला जारी रही। 2024 के अक्तूबर में तिरुवनंतपुरम नगर निगम ने उनके घर और अकादमी के सामने की सड़क का नाम 'पद्मश्री डॉ.एन. चंद्रशेखरन नायर रोड' रखकर उनके जीवनपर्यंत योगदान का सम्मान किया।

डॉ. नायर की सफलता के पीछे उनकी समर्पित पत्नी, दिवंगत श्रीमती टी. शारदा का योगदान अमूल्य था, जो केरल के प्रसिद्ध सर्वोदय नेता प्रो.एम.पी.मनमथन की पुत्री थीं। उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री सी.शरतचंद्रन का निधन अल्पायु में हुआ। दो पुत्रियाँ हैं - श्रीमती नीरजा राजेन्द्रन, जो प्रसिद्ध सिने कलाकार हैं, और डॉ.एस.सुनन्दा, हमारी प्रिय महासचिव, जिन्होंने अपने पिता के आदर्शों को आजीवन ध्येय बनाया है।

अकादमी की वर्तमान अध्यक्षा प्रो.तंकमणि अम्मा, डॉ.नायर की प्रिय छात्रा रही हैं। उनके संयुक्त प्रयासों से KHSA आज भी पूरे उत्साह और गरिमा के साथ आगे बढ़ रही है। ईश्वर करे यह यात्रा निरंतर जारी रहे और हमारे प्राध्यापक की स्मृतियाँ सदा हमारे साथ जीवित रहें।

"लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु!"

पूर्व न्यायाधीश, उच्च न्यायालय (केरल),
विश्वविद्यालय आचार समिति,
केरल आरोग्य विश्वविद्यालय, तृश्शूर के एवं
संरक्षक, केरल हिंदी साहित्य अकादमी

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री. अटल बिहारी वाजपेयी जी के साथ

पद्मश्री डॉ एन.चन्द्रशेखरन नायर:
भारतीय संस्कृति के प्रबल हिमायती साहित्यकार

डॉ. एस. तंकमणि अम्मा

भारत सरकार के 'पद्मश्री' अलंकरण से विभूषित डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी अपने आप में एक विराट व्यक्तित्व हैं, अपने आप में एक बृहद संस्था हैं। केरल जैसे हिंदीतर प्रांत में 'केरल हिंदी साहित्य अकादमी' जैसी एक संस्था की स्थापना करके उन्होंने हिंदी भाषा तथा साहित्य के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में अनमोल योगदान दिया है। मलयाळम और हिंदी के लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार एवं अनुवादक, 'केरल हिंदी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका' के मुख्य संपादक, श्रेष्ठ अध्यापक, यू.जी.सी एमिरेटस प्रोफसर, चतुर चित्रकार, सर्वोपरि भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक आदि की हैसियत से उन्होंने खूब यश पाया है।

केरल के लब्धप्रतिष्ठ सारस्वत साधक डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर ऐसे बहुमुखी प्रतिभावान हैं जिनकी सृजनधर्मिता की अंतर्धारा ही भारतीय संस्कृति की उदात्तता की उद्घोषणा रही है। नायरजी सच्चे अर्थ में भारतीय संस्कृति के प्रबल हिमायती हैं। नायरजी के इस संस्कृतिप्रेम ने उन्हें न केवल मातृभाषा मलयाळम में साहित्यसृजन की ओर प्रेरित किया है बल्कि राष्ट्रभाषा हिंदी के भी उच्चकोटि के रचनाकार बना दिया है। राष्ट्रभाषा हिंदी में उनके सृजन कार्य ने उनकी सांस्कृतिक चेतना के दायरे को विस्तृत कर दिया है और उनकी सृजनधर्मिता को एक विशिष्ट सांस्कृतिक आयाम भी प्रदान किया है। भारतीय संस्कृति के उत्कृष्ट पहलुओं ने डॉ.नायरजी को इस भांति प्रभावित कर दिया है कि उनका व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों ही भारतीय अस्मिता से सरोबोर हो उठा है। अपनी साहित्यिक, सांस्कृतिक लंबी यात्रा के दौरान आपने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं। पूरे देश में ही नहीं, विदेशों में भी भारतीय अस्मिता और सांस्कृतिक उच्चादर्श का प्रसार करने के सराहनीय कार्य में आप लगे हुए थे।

विद्यार्थी जीवन से ही देशप्रेम की उदात्त भावना की ओर डॉ.नायर उन्मुख हुए थे। उनके इस असीम देशप्रेम से जुड़े हुए हैं उनका राष्ट्रभाषाप्रेम तथा खादी-व्रत।

महात्मा गाँधीजी के वे सच्चे अनुयायी हैं, गाँधीवाद के सबल समर्थक भी। गाँधीजी के सादा जीवन और उच्च-विचार वाले आदर्श को अपने जीवन में अमल में लानेवाले कर्मठ कार्यकर्ता हैं डॉ.नायर। अपने लंबे अरसे के अध्यापकीय जीवन में उन्हें आशातीत सफतला प्राप्त हुई है। पूरे देश और विदेशों में उनके अनगिनत शिष्यगण मौजूद हैं जो अपने संपूज्य गुरुवर की सादर स्मृति करते हैं। सच पूछा जाय तो एक गुरुवर केलिए इससे ज़्यादा और चाहिए ही क्या। डॉ. नायर जी औव्वल दर्जे के कर्मठ कार्यकर्ता थे। केरल के विविध सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों के वे कुशल संचालक थे। अपने सामाजिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों के द्वारा 'भारतीय एकता' केलिए वे प्रयत्नशील रहे। भारत की भावात्मक एकता को दृष्टि पथ में रखकर आपने केरल हिंदी साहित्य अकादमी जैसी महत्वपूर्ण संस्था की संस्थापना की है जो हिंदीतर भाषी हिंदी लेखकों को प्रेरणा-प्रोत्साहन देती है तथा हिंदी के उत्कृष्ट साहित्यकारों को सम्मानित और पुरस्कृत भी करती है।

डॉ.नायरजी एक समर्थ चित्रकार भी थे। आपने कई जलरंग और तेल चित्र खींचे हैं जिनमें अधिकांश बहुचर्चित भी हुए हैं। प्रकृति और पुरुष, शाश्वत संगीत, केरल राग, तमसो मा ज्योतिर्गमय, सीता-राम, गीतोपदेश, भगवान बुद्ध, विवेकानंद आदि आपके खूब ख्याति-प्राप्त चित्र हैं। डॉ.नायर के चित्रकार व्यक्तित्व में भी उनकी उदात्त लोकमंगल की भावना उभरकर आयी है। भारतीय और पाश्चात्य चित्रकला के वे मर्मज्ञ भी हैं। भारतीय एवं पाश्चात्य चित्रकला की बारीकियों और उसके विभिन्न पहलुओं पर आपके कई प्रामाणिक आलेख स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुए हैं। विशेषकर 'स्वागत' में अनेक सचित्र लेख आये हैं। सुदूर दक्षिणी प्रांत केरल में रहकर मातृभाषा मलयाळम में ही नहीं, राष्ट्रभाषा हिंदी में भी अपनी प्रखर प्रतिभा का प्रसार करनेवाले हैं डॉ.नायरजी। मलयाळम और हिंदी में अथक साहित्य सेवा करके एक ओर उन्होंने दक्षिण

और उत्तर को जोड़ने का सराहनीय कार्य किया तो दूसरी ओर तुलनात्मक अध्ययनों और अनुवादों के ज़रिए विभिन्न भारतीय भाषाओं और साहित्यों को परस्पर जोड़ कर भारत को एक सूत्र में बाँधने का श्रमसाध्य कार्य भी संपत्र किया।

सृजन संसार - डॉ.नायरजी के सृजन संसार का दायरा बेहद व्यापक है। कविता, कहानी, नाटक, एकांकी, निबंध, समीक्षा आदि साहित्य की विविध विधाओं में आपने अपनी सफल लेखनी चलायी है। साहित्येतिहास प्रणयन तथा शोध के क्षेत्र में भी उन्होंने श्लाघनीय कार्य किये हैं। अपने व्यक्तित्व में अंतर्लीन सांस्कृतिक चेतना को खूब प्रस्फुटित होने का मौका इस साहित्य सृजन ने उन्हें प्रदान किया है। डॉ.विजयेंद्र स्नातक ने ठीक ही लिखा है कि "श्री.नायर सच्चे अर्थों में अहिंदी भाषा के गौरवशाली वकील हैं, जो विवाद नहीं करते, प्रतिद्वंद्विता खडी नहीं करते, सीधे और सहज ढंग से हिंदी की गरिमा स्थापित करते हैं। राष्ट्रीय भावात्मक एकता का पथ प्रशस्त करते हैं। भाषाओं की दूरी को मिटाते हैं, भारतीय सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ बनाते हैं और दक्षिण तथा उत्तर भारत के बीच सेतु का काम करते हैं।" नायर की समस्त कृतियाँ उनके संस्कृति प्रेम के निस्तुल निदर्शन हैं। हिंदी और मलयाळम में उनके साठों ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं तथा ५५० से ज्यादा रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हई हैं।

कवि के रूप में डॉ.नायर यशस्वी हैं। 'हिमालय गरज रहा है' उनका ख्यातिप्राप्त खण्डकाव्य है। किसी भी हिंदीतर भाषी साहित्यकार के द्वारा विरचित यह प्रथम प्रबंध कृति है। इसमें कवि का उज्ज्वल राष्ट्रप्रेम व सांस्कृतिक प्रेम उजागर हो उठा है। चीनी आक्रमण की पृष्टभूमि में विरचित यह कृति अपनी ओजपूर्ण भाषाशैली के कारण विशेष आकर्षक बन पड़ी है। 'चिरंजीवी और अन्य कविताएँ' में भी नायरजी की अनूठी कविताएँ संकलित हैं। भारतीय संस्कृति के उच्चादर्शों की सार्थक अभिव्यक्ति करने में उनकी कविताएँ सर्वथा सक्ष्म हैं। 'राष्ट्रीय गीतकार' के नाम से वे जाने जाते हैं। 'चिरजीव महाकाव्य' शीर्षक से हिन्दी में एक महाकाव्य का प्रणयन करके वे सहृदय पाठकों, साहित्य मनीषियों और आलोचकों की प्रशंसा के पात्र भी बने हैं। हिंदी नाटक क्षेत्र को डॉ.नायरजी की देन अनुपम है। एक विशिष्ट सांस्कृतिक आयाम प्रदान करके आपने हिंदी नाटकों को अहं भूमिका दी है। 'द्विवेणी', 'कुरुक्षेत्र जागता है', 'युग संगम', 'सेवाश्रम', 'देवयानी', 'धर्म और अधर्म', 'भगवान बुद्ध' आदि आपके नाटक हिन्दी के सांस्कृतिक नाटक क्षेत्र की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं। डॉ.नायर के सांस्कृतिक चिंतन का स्पष्ट रूप इन नाटकों में परिलक्षित होता है। यही कारण है कि नायर की सांस्कृतिक उपलब्धियों की पहचान केलिए उनके नाटकों का सम्यक अनुशीलन नितांत अनिवार्य हो जाता है। डॉ.नायर के नाटकों में परिलक्षित भारतीयता को रेखांकित करते हुए हिंदी के मूर्धन्य समीक्षक डॉ.नमवर सिंह ने लिखा है – "उनके सामने भारतीय आदर्शों की अभिव्यंजना का प्रश्न प्रमुख है, भारतीयता की रक्षा की भावना अधिक प्रिय है और साहित्य के माध्यम से लोक-मंगल-पोषक समर्थक एवं सफल मानव की प्रतिष्ठा का विचार अधिक प्रधान है... डॉ.नायर के अन्तस में भारतीय संस्कृति की गंगा प्रवाहित होती है। वे भारतीय पहले हैं और अन्य कुछ बाद में।"

'हार की जीत', 'प्रोफसर और रसोइया' 'बहुचर्चित कहानियाँ' आदि डॉ.नायरजी के विशिष्ट कहानी संग्रह हैं। इन संग्रहों की अधिकांश कहानियों के कथ्य का सीधा सरोकार भी भारतीय संस्कृति तथा मानवीय उच्च आदर्शों की प्रतिष्ठापना से है। अपने निबंध संकलनों और समीक्षा ग्रंथों में भी भारतीय संस्कृति के उच्चादर्शों की महिमा का गायन यत्र-तत्र-सर्वत्र हुआ है। 'भारतीय साहित्य', 'भारतीय साहित्य और कलाएँ', 'नायरजी की साहित्यिक रचनाएँ' जैसे शीर्षक ही इस तत्व के प्रस्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करनेवाले है।

डॉ.नायरजी का बहुचर्चित शोध प्रबन्ध 'हिंदी और मलयाळम के दो सिंबोलिक (प्रतीकवादी) कवि' उत्तर और दक्षिण के दो महान कवियों की कविताओं के साम्य-वैषम्य के रेखांकन के साथ-साथ वैविध्य के एकत्व को संजोनेवाली भारतीय संस्कृति की अस्मिता का उद्घोषक भी है। कविवर पंत जी का यह कथन सार्थक है कि - "वस्तुतः एक दाक्षिणात्य विद्वान के द्वारा यह ग्रंथ हिंदी साहित्य ही नहीं, अपितु समस्त भारतीय साहित्य केलिए एक विशिष्ट देन है।" 'महात्मा गाँधी', 'महर्षि विद्याधिराज', 'अतीत के दिन' जैसे जीवनी ग्रंथों के मूल में भी लेखक का संस्कृति - प्रेम ही कार्य करता दिखाई देता है। 'चित्रकला सम्राट राजा रविवर्मा' शीर्षक ग्रंथ डॉ.नायर की अनूठी उपलब्धि हैं।

समग्रत: विचार करने पर ज्ञात होगा कि डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायरजी की सृजनधर्मिता की अंत-सलिला के रूप में प्रवहमान भारतीय संस्कृति की उदात्त चेतना नायरजी की रचनाधर्मिता को एक नूतन आयाम देने में सर्वथा सक्षम निकली है तथा नायरजी के साहित्य को राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत एवं सम्मानित करने में भी समर्थ रही है। इस प्रकार हिन्दी केलिए समर्पित धन्य जीवन बिताये आचार्यवर का शत-शत वंदन !!

अध्यक्ष, केरल हिंदी साहित्य अकादमी व
पूर्व अध्यक्षा, हिदीं विभाग, केरल विश्वविद्यालय

ज्ञानतपस्वी डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर

डॉ. सी.जे. प्रसन्नकुमारी

केरल हिंदी साहित्य अकादमी के संस्थापक अध्यक्ष, हिंदी, मलयाळम जगत के लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार, सफल पत्रकार, कुशल चित्रकार, शिक्षा-शास्त्री, इतिहासवेता पद्मश्री.डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर का जन्म केरल की जिला कोल्लम के शास्तांकोट्टा नामक गाँव में श्री.नीलकंठ पिळ्ळै और श्रीमती जानकी अम्मा के सुपुत्र के रूप में सन् 1924 जून 27 को हुआ। पंद्रह साल की उम्र में वे शास्तांकोट्टा मलयाळम स्कूल से सातवीं दर्जा पास करके के.राघवन नामक हिंदी प्रचारक से हिंदी पढने लगे थे। स्वयं भारत केसरी मन्नत्तु पद्मनाभन, श्री विद्याधिराजा तीर्थपाद, श्री रामकृष्ण परमहंस, कवींद्र रवींद्र, कालिदास एवं वेदव्यास के ऋणि माननेवाले नायरजी स्वाध्याय से शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढे। उन्होंने मद्रास सरकार की चित्रकला परीक्षा, मद्रास मेट्रिकुलेशन, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा का राष्ट्रभाषा विशारद, ट्रावनकोर विश्वविद्यालय से हिंदी विद्वान, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी एम.ए और बिहार विश्वविद्यालय से पीएच.डी हासिल की है। इस अध्यवसायी व्यक्तित्व केलिए निरंतर शिक्षा ने कभी आजीविका के मार्ग में अवरोध नहीं खड़ा किया। वे अथक परिश्रम से दोनों को समानांतर रूप से आगे बढाते रहे।

डॉ.नायर जी सन् 1942 से हिंदी भाषा के प्रचार के क्षेत्र में अपनी अहं भूमिका निभाते रहे। चार साल तक स्कूल के अध्यापक, फिर 1951 से कॉलेजों के अध्यापक और 1967 से 1984 तक एन.एस.एस के विविध कॉलेजों में अध्यापक, प्राध्यापक बनकर उन्होंने भावि पीढी को संवारने में अपनी ज़िंदगी अर्पित की। यू.जी.सी मेजर रिसर्च फेलो (1985-1987), एमिरिट्स प्रोफसर के रूप में भी उनकी हिंदी सेवा अतुलनीय रही। सन् 1976-2010 की अवधि में डॉ.नायरजी भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों की सलाहकार समितियों के सदस्य रहे। सन् 1989-93 के दौरान केरल विश्वविद्यालय के सेनेट के सदस्य के रूप में राज्यपाल ने उन्हें नामित किया था।

गाँधीवाद के इस प्रखर प्रचारक की अर्द्धांगिनी श्रीमती शारदा मशहूर सर्वोदय नेता प्रो.मन्मथन की सुपुत्री है जो उनके व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक जीवन की प्रेरक शक्ति रही। इनके तीन संतान हैं – शरत्चंद्रन (स्वर्गस्थ), नीरजा राजेंद्रन और डॉ.एस.सुनंदा।

नायरजी का साहित्यिक जीवन छत्तनार वटवृक्ष जैसा विशाल और अपने में पूर्ण रहा। वे हिंदी में साठ से ज़्यादा मौलिक कृतियों के प्रणेता हैं। अपनी मातृभाषा मलयाळम में उनकी शब्द सपर्या का श्रीगणेश कोल्लम से निकलनेवाली पत्रिका 'मलयाळ राज्यम्' में हुआ। उनकी कहानियाँ, कविताएँ, लेख प्रारंभ में इस पत्र में प्रकाशित हुए। उनका प्रथम नाटक 'द्विवेणी' वर्धा से निकलनेवाली राष्ट्रभारती में प्रकाशित हुआ था। कुरुक्षेत्र जागता है, सेवाश्रम, देवयानी, धर्म और अधर्म आदि नाटक की कोटि में आनेवाली उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। एक सफल कवि नायरजी की 'कविताएँ देशभक्ति की' और सन् 2009 में प्रकाशित 'चिरंजीव' महाकाव्य की देश-विदेश में धूम मची है। 'सीतम्मा' उनका प्रमुख उपन्यास है तो 'हार की जीत' शीर्षक कहानी संकलन भी बहु चर्चित है। डॉ.नायरजी मलयाळम भाषा के प्रकांड पंडित हैं। अपनी प्रसिद्ध कृतियों को उन्होंने दोनों भाषाओं में एक साथ प्रकाशित किया। सीतम्मा, चिरंजीव महाकाव्य इसके उदाहरण है।

हिंदी से मलयाळम में और मलयाळम से हिंदी में अनुवाद करके उन्होंने दोनों भाषाओं के बीच एक सांस्कृतिक सेतु खड़ा किया। हिंदी मलयाळम शब्द कोश दोनों भाषाओं केलिए डॉ.नायरजी की अनुपम देन है। संपादन कला के मर्मज्ञ रहे नायरजी। उन्होंने सहकारी हिंदी प्रचारक, ग्रंथलोकम का हिंदी विभाग एवं केरल हिंदी साहित्य अकादमी-शोध पत्रिका का संपादन संभाला था। भारत और विदेशों के 800 से ज़्यादा पत्रिकाओं में उनके आलेख प्रकाशित हुए थे।

केरल और भारत के अन्य राज्यों के पाठ्यक्रम में उनकी रचनाओं को जगह मिला। वे एक स्तरीय शोध निदेशक रहे। अपने अध्यापन, पठन-पाठन एवं सर्जन की व्यस्तता के बावजूद भी उनके निदेशन में छ: पीएच.डी भी निकले। नायरजी की रचनाओं पर उत्तर भारत के विश्वविद्यालयों में कई शोधप्रबंध निकले हैं।

नायरजी की बहुमुखी प्रतिभा हिंदी प्रचार, अध्ययन अध्यापन एवं साहित्य सर्जन तक सीमित न रही। वे एक सफल चित्रकार हैं, लगभग सौ से ज़्यादा वर्ण चित्रों के सफल चितेरे ! उनके चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन तिरुवनंतपुरम और दिल्ली में हुआ था जिनका उद्घाटन क्रमश: मंत्री आर.बालकृष्णन पिळ्ळै और डॉ.करनसिंह के करकमलों से संपन्न हुआ था।

केरल और भारत के सांस्कृतिक धार्मिक क्षेत्र में साहित्य एवं साहित्येतर कार्यकलापों से उन्होंने जो अप्रतिम योगदान दिया वह हमेशा चिरस्मरणीय रहेगा। नायरजी ने उपनिषद्, अध्यात्म रामायण, राम मारुति मिलन, राम की स्तुतियाँ, श्री ललिता सहस्त्रनाम की व्याख्याएँ जैसे महती ग्रंथों पर आधारित कई धार्मिक प्रकाशन निकाले। महर्षि विद्याधिराज केन्द्र, तिरुवनंतपुरम का अध्यक्ष, श्रीरामकृष्ण योगाश्रम, मूकांबिका, कोल्लूर का संरक्षक जैसे पदों पर विराजित होकर उन्होंने धार्मिक क्षेत्र में अपनी क्षमता, ममता का परिचय दिया।

पद्मश्री डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर अपनी साहित्यक सांस्कृतिक देन के तहत राज्य, देश, विदेश से अनेकों बार पुरस्कृत हुए। सन् 1983 में नई दिल्ली में आयोजित तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन में उन्हें सम्मानित किया गया। सन् 1995 में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के सौहार्द सम्मान से वे विभूषित हुए। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अपनी विशिष्ट कृतियों केलिए अनेकों बार पुरस्कृत नायरजी को सन् 2005 में हिंदी संस्थान, आगरा ने पत्रकारिता के क्षेत्र के महत्वपूर्ण योगदान केलिए 'गणेश शंकर विद्यार्थी सम्मान' से विभूषित किया, जिसे उन्होंने तत्कालीन राष्ट्रपति ए.पी.जे अब्दुल कलाम से ग्रहण किया। हिंदी भवन, नई दिल्ली का 'हिंदी रत्न सम्मान' (2014), उत्तरप्रदेश सरकार का 'देश रत्न सम्मान', यूको बैंक का 'भारतीय भाषा सौहार्द सम्मान' (2019-20), कला-संस्कृति-साहित्य विद्यापीठ का साहित्य मार्ताण्ड पुरस्कार, महाराष्ट्रा दलित अकादमी का प्रेमचंद लेखक पुरस्कार, हिंदी विद्यापीठ, तिरुवनंतपुरम का पी.जी.वासुदेव पुरस्कार जैसे अनेकानेक पुरस्कार उनके पक्ष में आये। सन् 2020 में साहित्य और शिक्षा क्षेत्र की उनकी विशिष्ट देन एवं निस्वार्थ सेवा की मान्यता के रूप में भारत के सर्वेच्च नागरिक सम्मानों में से एक 'पद्मश्री' से भारत सरकार ने उन्हें सम्मानित किया।

अब पद्मश्री डॉ.नायरजी हमारे बीच नहीं। लेकिन साहित्यिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक, सामाजिक जगत की देन उन्हें अनंत काल तक स्मरण करने केलिए पर्याप्त है। इस ज्ञान के तपस्वी के चरण कमलों पर शत-शत नमन !

कार्यकारिणी समिति सदस्य व संपादक,
शोध पत्रिका, केरल हिंदी साहित्य अकादमी और पूर्व हिंदी
विभागाध्यक्षा, सरकारी वनिता कॉलेज, तिरुवनंतपुरम

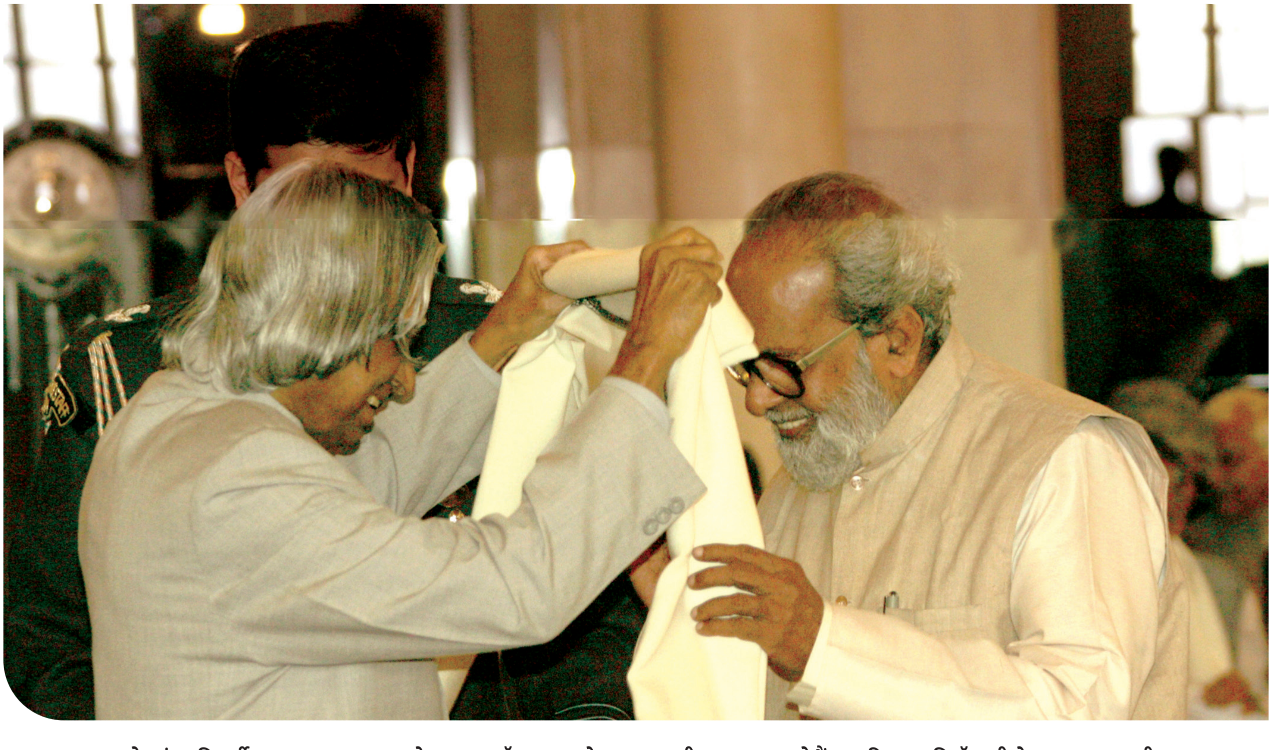

गणेशशंकर विद्यार्थी पुरस्कार (एक लाख रुपये का) प्राप्त डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर जी का सम्मान करते हैं महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी

हिंदी साहित्य की प्रगति और कृत्रिम मेधा

डॉ. अनीश सिरियक

साहित्य मानव हृदय की धड़कनों का शब्दों में रूपांतरण है – उसकी संवेदनाएँ, अनुभव, स्वप्न और संघर्ष जब भाषा के वस्त्र धारण कर अमर हो जाते हैं, वही साहित्य कहलाता है। युगों से यह कार्य केवल मानव मस्तिष्क और हृदय द्वारा संभव हुआ है। परंतु इक्कीसवीं सदी के इस तीव्रगामी तकनीकी युग में मनुष्य के साथ एक नया सहचर खड़ा है – कृत्रिम मेधा अथवा कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence – AI)। यह केवल विज्ञान या व्यवसाय का उपकरण नहीं, बल्कि मानवीय चिंतन, सृजन और अभिव्यक्ति की नई सीमाएँ निर्धारित करने वाली शक्ति बन चुकी है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अर्थ, स्वरूप, परिभाषा - 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' का सामान्य अर्थ है – ऐसी मशीनें या प्रणालियाँ जो मानवीय बुद्धि, तर्क, निर्णय और सीखने की क्षमता का अनुकरण कर सकें। यह तकनीक मशीनों को सोचने, तर्क करने, अनुभव से सीखने और निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। दूसरे शब्दों में – कृत्रिम मेधा मनुष्य की संज्ञानात्मक (Cognitive) क्रियाओं को तकनीकी रूप में पुनर्सृजित करने का प्रयास है। वस्तुतः कृत्रिम मेधा कोई एकल तकनीक नहीं, बल्कि एक छत्र-शब्द (Umbrella Term) है, जिसके अंतर्गत मशीन लर्निंग (Machine learning), डीप लर्निंग (Deep learning), नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NIP), रोबोटिक्स, और एक्सपर्ट सिस्टम्स जैसी अनेक शाखाएँ आती हैं। इसका उद्देश्य मानव जैसी कार्यक्षमता और रचनात्मक निर्णय क्षमता वाली मशीनें बनाना है[1]। प्रसिद्ध अमेरिकी कंप्यूटर वैज्ञानिक जॉन मैकार्थी, जिन्हें कृत्रिम मेधा का जनक कहा जाता है, के अनुसार कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधुनिक विज्ञान की वह शाखा है, जो एक ओर मानवीय बुद्धि के रहस्यों का अन्वेषण करती है और दूसरी ओर उन रहस्यों को मशीनों में स्थानांतरित करने का प्रयास करती है ताकि मशीनें भी बुद्धिमत्ता के साथ कार्य कर सकें।

ऑक्सफोर्ड लर्नर्स डिक्शनरी के अनुसार – कृत्रिम बुद्धिमत्ता ऐसे कंप्यूटर प्रणालियों के अध्ययन और विकास की विज्ञान है, जो मानव-सदृश व्यवहार प्रदर्शित कर सकें।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का औपचारिक जन्म 1956 ईस्वी में हुआ, जब डार्टमाउथ कॉलेज (Dartmouth College) में जॉन मैकार्थी ने एक ऐतिहासिक कार्यशाला आयोजित की। इस कार्यशाला में मार्विन मिंस्की, क्लॉड शैनन और नैथानिएल रोचेस्टर जैसे अग्रणी वैज्ञानिकों ने भाग लिया। यहीं पहली बार "Artificial Intelligence" शब्द को आधिकारिक रूप से परिभाषित और स्वीकार किया गया। यह सम्मेलन कृत्रिम मेधा के लिए एक स्वतंत्र अध्ययन क्षेत्र के रूप में नाम, पहचान और दिशा देने वाला मील का पत्थर सिद्ध हुआ। आगामी दो दशकों तक MIT, स्टैनफोर्ड, CMU और IBM जैसे संस्थानों में यही विद्वान और उनके शिष्य इस क्षेत्र के अग्रणी बने रहे। इस अवधि में कृत्रिम मेधा ने प्रयोगात्मक स्तर से आगे बढ़कर एक संगठित शैक्षणिक एवं अनुसंधान अनुशासन का रूप ग्रहण किया।[4] 21वीं सदी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने मानव जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है- कृषि, शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, रक्षा, न्याय, उद्योग, संचार, कला और साहित्य – कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं है। इसे आज "चौथी औद्योगिक क्रांति" की प्रेरक शक्ति कहा जाता है। आज कृत्रिम मेधा के अनुप्रयोग चैटबॉद्व, स्वचालित वाहन, चेहरे की पहचान प्रणाली, वॉयस असिस्टेंट (जैसे सिरी, एलेक्सा), स्वचालित अनुवाद और डेटा विश्लेषण के रूप में हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुके हैं। यूनेस्को ने भी अपने सतत विकास लक्ष्यों (Sustainable Development Goals – 2021) में कृत्रिम मेधा की परिवर्तनकारी भूमिका को रेखांकित किया है, विशेषकर शिक्षा, स्वास्थ्य और संस्कृति के क्षेत्र में।[5]

सकारात्मक पक्ष - वर्तमान युग को निःसंदेह प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का युग कहा जा सकता है। विज्ञान और तकनीक की तीव्र प्रगति ने शिक्षा, शोध, संचार, संस्कृति और साहित्य जैसे प्रत्येक क्षेत्र को गहराई से प्रभावित किया है। विशेषतः भारतीय उच्च शिक्षा और अनुसंधान में कृत्रिम मेधा के बढ़ते प्रयोगों ने हिंदी साहित्य की दिशा और संभावनाओं पर भी गहरा प्रभाव डाला है।

हिंदी साहित्य सदैव परिवर्तनशील रहा है – मौखिक परंपरा से लेकर मुद्रण युग तक, और अब डिजिटल से लेकर कृत्रिम मेधा के युग तक। प्रत्येक युग में साहित्य ने नई तकनीक को आत्मसात किया है। आज जब मशीनें गणना के साथ-साथ भाषा, तर्क, निर्णय और सृजनात्मकता प्रदर्शित कर रही हैं, तब यह प्रश्न स्वाभाविक है कि हिंदी साहित्य की प्रगति में कृत्रिम बुद्धिमत्ता किस प्रकार सहायक सिद्ध हो रही है।[6]

शिक्षा और अधिगम में सहायक तकनीकः भारतीय विश्वविद्यालयों और संस्थानों में चैटबॉद्ध तथा वर्चुअल असिस्टेंद्ध के प्रयोग ने शिक्षा की प्रक्रिया को अधिक सुलभ बनाया है। इसी प्रकार हिंदी साहित्य के अध्ययन में भी यह तकनीक उपयोगी सिद्ध हो सकती है। विद्यार्थी अब अपने साहित्यिक प्रश्नों के त्वरित उत्तर प्राप्त कर सकते हैं, विभिन्न रचनाओं की व्याख्या और सन्दर्भ ढूँढ़ सकते हैं, तथा शोध-सामग्री तक शीघ्र पहुँच बना सकते हैं। इससे शिक्षा न केवल दक्ष बनती है, बल्कि समय और संसाधनों की बचत भी होती है।

भाषा और अनुवाद की नई दिशाः कृत्रिम मेधा आधारित अनुवाद उपकरणों (जैसे Google Translate या Deep। आदि) ने भाषाई सीमाओं को मिटा दिया है। हिंदी साहित्य अब केवल हिंदी भाषी पाठकों तक सीमित नहीं, बल्कि विश्वभर के पाठकों तक पहुँचने में सक्षम है। इसी प्रकार अन्य भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य का हिंदी में अनुवाद भी सरल हुआ है। इससे साहित्यिक आदान-प्रदान और समावेशिता (Inclusivity) की भावना सशक्त हुई है।

शोध और विश्लेषण की नई संभावनाएँ: कृत्रिम मेधा आधारित डेटा विश्लेषण उपकरणों ने शोध की दिशा बदल दी है। यदि इन्हें हिंदी साहित्य पर लागू किया जाए, तो विभिन्न कालों, लेखकों और विधाओं का तुलनात्मक अध्ययन अधिक गहराई से किया जा सकता है। साहित्य की प्रवृत्तियों, पाठकों की रुचियों, और समाज-साहित्य के अंतःसंबंधों को आँकड़ों के माध्यम से स्पष्ट रूप से समझना संभव हुआ है।[7]

आलोचना और सृजनात्मकता में नवाचारः कृत्रिम मेधा केवल विश्लेषण तक सीमित नहीं है; यह सृजन में भी सहयोगी है। किसी कवि की समस्त रचनाओं का स्वचालित विश्लेषण, किसी उपन्यास की कथानक संरचना का अध्ययन, या पर्यावरण, नारीवाद, दलित और उपेक्षित वर्गों के साहित्य की प्रवृत्तियों का विश्लेषण – ये सभी कार्य कृत्रिम मेधा द्वारा व्यवस्थित रूप से किए जा सकते हैं। साथ ही, स्वचालित प्रोग्रामिंड़ (Automatic Progra-mming) और सृजनात्मक लेखन तकनीकें अब कविता, कहानी और नाटक के संवाद तक उत्पन्न कर सकती हैं। यद्यपि मानवीय संवेदना का कोई विकल्प नहीं, परन्तु यह तकनीक रचनाकारों को नए प्रयोगों की प्रेरणा देती है।

डिजिटल मानविकी और रोजगार संभावनाएँ: विश्व विद्यालयों में जब कृत्रिम मेधा आधारित पाठ्यक्रमों को शामिल किया जा रहा है, तब हिंदी साहित्य को भी तकनीक से जोड़ना आवश्यक है। डिजिटल मानविकी और साहित्यिक अनुसंधान में कृत्रिम मेधा उपकरणों के प्रयोग से छात्रों की विश्लेषणात्मक क्षमता बढ़ती है और रोजगार के अवसर भी विस्तृत होते हैं। इससे साहित्य पारंपरिकता के साथ आधुनिक कौशल से जुड़ता है।[8]

व्यक्तिगत शिक्षण और छात्र मार्गदर्शनः कृत्रिम मेधा आधारित चेतावनी प्रणाली विद्यार्थियों की प्रगति पर नज़र रखकर उन्हें उचित मार्गदर्शन देती है। इसी प्रकार हिंदी साहित्य अध्ययन में भी विद्यार्थियों की रुचि और क्षमता के अनुसार उन्हें व्यक्तिगत अध्ययन-सामग्री और अभ्यास प्रश्न सुझाए जा सकते हैं। यह शिक्षण को अधिक विद्यार्थी-केंद्रित और प्रभावी बनाता है।

प्राकृतिक भाषा संसाधन (NLP) का योगदानः कृत्रिम मेधा की एक महत्त्वपूर्ण शाखा प्राकृतिक भाषा संसाधन (Natural Language Processing – NLP) है, जो कंप्यूटर को भाषा को समझने, विश्लेषित करने और प्रस्तुत करने में सक्षम बनाती है। इसके माध्यम से – पुराने हस्तलिखित ग्रंथों को OCR द्वारा डिजिटलीकृत किया जा सकता है, कविता और गद्य का स्वचालित अनुवाद संभव है,तथा साहित्य को ऑडियो रूप में पाठकों तक पहुँचाया जा सकता है। इस प्रकार NLP हिंदी साहित्य को नई पीढ़ियों तक पहुँचाने में सेतु का कार्य कर रही है।

बुद्धिमत्तापूर्ण पुनः प्राप्ति प्रणाली और विशेषज्ञ परामर्शः Intelligent Retrieval Systems की सहायता से अब पाठक सेकंडों में तुलसीदास के किसी दोहे या प्रेमचंद की किसी कहानी का अंश खोज सकते हैं। वहीं Expert Consulting Systems साहित्यिक अध्ययन में मार्गदर्शक की भूमिका निभा सकती हैं। कोई छात्र यदि "भक्ति काल की प्रवृत्तियों" पर जानकारी चाहता है, तो यह प्रणाली उसे प्रमाणिक

जानकारी, उद्धरण और सन्दर्भ प्रदान कर सकती है – मानो एक आभासी "साहित्य गुरु" उसके साथ हो[9]।

रोबोटिक्स और साहित्यिक मंचनः रोबोटिक्स ने कला और साहित्य को नई दिशा दी है। आज रोबोट कथा-वाचन, नाट्य-प्रस्तुति और मंचन में प्रयोग किए जा रहे हैं। भविष्य में सम्भव है कि हिंदी के महाकाव्यों और कथाओं का मंचन रोबोटिक पात्रों के माध्यम से किया जाए, जिससे नई पीढ़ी में साहित्य के प्रति आकर्षण बढ़ेगा।

प्रकाशन और सांस्कृतिक प्रबंधन में उपयोगः कृत्रिम मेधा अब केवल शिक्षण या शोध तक सीमित नहीं है; यह प्रकाशन और सांस्कृतिक संस्थानों के लिए भी लाभकारी है। साहित्यिक पाठकों और लेखकों के बीच संवाद को सशक्त बनाना, निधि-संग्रह (Fundraising) और प्रचार-प्रसार को सरल बनाना – ये सभी कार्य कृत्रिम मेधा आधारित प्रणालियों द्वारा प्रभावी रूप से किए जा सकते हैं[10]।

नकारात्मक पक्ष - वर्तमान युग को यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का युग कहा जाए, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। आज कृत्रिम मेधा शिक्षा, उद्योग, चिकित्सा, संचार, और यहाँ तक कि सृजनात्मक लेखन के क्षेत्र में भी प्रवेश कर चुकी है। मशीनें अब सोचने, बोलने, लिखने और चित्र रचने लगी हैं[11]। इस तकनीकी क्रांति ने जहाँ नए अवसरों के द्वार खोले हैं, वहीं साहित्य, संस्कृति और मानवता के लिए अनेक गम्भीर प्रश्न भी उपस्थित कर दिए हैं। हिंदी साहित्य की प्रगति के संदर्भ में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के ये नकारात्मक पक्ष विचारणीय हैं, क्योंकि साहित्य का केंद्र बिंदु मनुष्य और उसकी संवेदना है, न कि तकनीक।

मौलिकता पर संकटः साहित्य का सार मानव अनुभव की मौलिकता में निहित है। जब रचना मशीन द्वारा तैयार होती है, तो उसमें अनुभवजन्य सत्य और संवेदना की नमी नहीं होती। कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल डेटा के आधार पर संयोजन करता है, जबकि साहित्य "जीवन के रस" का प्रस्फुटन है। यदि लेखक हर विचार और कथानक के लिए तकनीक का सहारा लेगा, तो उसकी कल्पना की अग्नि मंद पड़ जाएगी और साहित्य केवल यांत्रिक उत्पादन बनकर रह जाएगा।[12]

नैतिकता और स्वामित्व का प्रश्नः जब कोई कविता, कहानी या लेख कृत्रिम मेधा की सहायता से लिखा जाता है, तो प्रश्न उठता है - असली रचनाकार कौन है? क्या वह मनुष्य जिसने निर्देश दिए, या मशीन जिसने शब्दों को संयोजित किया? यह प्रश्न कॉपीराइट, स्वामित्व और साहित्यिक नैतिकता के मूल सिद्धांतों को चुनौती देता है। यदि मशीनों को रचनाकार माना जाए तो मनुष्य की बौद्धिक अस्मिता पर गहरा आघात होगा।[13]

संवेदनाओं का अभावः कृत्रिम मेधा भाषा की व्याकरणिक संरचना और शैलीगत विन्यास में दक्ष है, परंतु वह मानव-हृदय की वे सूक्ष्म भाव-तरंगें, करुणा, प्रेम, पीड़ा और आत्मानुभूति को नहीं पकड़ सकती जो सच्चे साहित्य का प्राण है। मशीन का लेखन "शब्दों का संयोजन" है, जबकि मानव लेखन "भावों का संचार"। यही वह रेखा है जहाँ तकनीक साहित्य से पीछे रह जाती है।[14]

सृजनात्मक निर्भरता का संकटः यदि लेखक अत्यधिक AI पर निर्भर हो जाए, तो उसकी कल्पनाशक्ति, प्रयोगशीलता और आत्मविश्वास धीरे-धीरे क्षीण हो सकते हैं। वह विचार उत्पन्न करने की बजाय केवल तकनीक से "लेखन करवाने" पर निर्भर हो जाएगा। यह स्थिति रचनात्मकता के ह्रास और साहित्य के आत्मविस्मरण का संकेत है।

सांस्कृतिक प्रतिबंध और मानसिक जड़ताः मनुष्य का स्वभाव परंपराओं में बसा है। तकनीकी परिवर्तनों को सहज स्वीकार कर पाना उसके लिए सरल नहीं। यही कारण है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रयोग को लेकर समाज में संशय और भय व्याप्त है। बहुत-से लोग इसे अपनी पारंपरिक जीवनशैली, रोजगार और सृजनशील अस्तित्व के लिए खतरा मानते हैं। यह मानसिक अवरोध हिंदी साहित्य के क्षेत्र में भी महसूस किया जा सकता है – जहाँ साहित्यकारों को यह डर सताता है कि कहीं मशीनें उनकी जगह न ले लें। यह सांस्कृतिक जड़ता और अविश्वास साहित्यिक प्रयोगशीलता को सीमित करता है।[15]

भय: नियंत्रण खोने और बेरोज़गारी का संकटः कृत्रिम बुद्धिमत्ता से सबसे गहरा जुड़ा हुआ नकारात्मक तत्व है 'भय'। यह भय केवल रोजगार छीनने का नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व और सृजनात्मक श्रेष्ठता के समाप्त होने का है। जब मशीनें कविता लिखने लगें, उपन्यास रचने लगें, तब यह चिंता स्वाभाविक है कि क्या मनुष्य अब भी रचनाकार रहेगा या केवल एक नियंत्रक मात्र? यह भय मनोवैज्ञानिक असंतुलन, सामाजिक असुरक्षा और साहित्यिक अस्थिरता–तीनों को जन्म देता है।

कौशल की कमी और असमानता का विस्तारः कृत्रिम मेधा का प्रयोग केवल उन लोगों के लिए संभव है जिनके पास उच्च तकनीकी ज्ञान और डिजिटल दक्षता है। हिंदी साहित्य के परंपरागत क्षेत्र में यह दक्षता अभी सीमित है। इससे एक नये वर्ग-भेद की स्थिति उत्पन्न होती है–जहाँ तकनीकी रूप से सक्षम लोग रचना के नए माध्यमों पर अधिकार जमा लेते हैं और पारंपरिक लेखक हाशिए पर चले जाते हैं। परिणामस्वरूप, हिंदी साहित्य में असमानता और वंचना की नई दीवारें खड़ी हो सकती हैं।[16]

रणनीतिक दृष्टि का अभावः कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रयोग में सबसे बड़ी चुनौती है उसकी रणनीतिक योजना का अभाव। अनेक संस्थान और रचनाकार बिना उद्देश्य स्पष्ट किए केवल "आधुनिक" दिखने के लिए कृत्रिम मेधा का प्रयोग करने लगते हैं। परिणामतः रचनाएँ सतही हो जाती हैं–वे तकनीकी दृष्टि से सुंदर दिखती हैं, पर उनमें भावनात्मक गहराई और सांस्कृतिक संदर्भ का अभाव होता है। यह प्रवृत्ति साहित्य की आत्मा को यांत्रिक बना सकती है।[17]

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए भारत सरकार की पहल

आज के डिजिटल युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल तकनीकी उपकरण नहीं रह गई है, बल्कि यह राष्ट्रीय विकास की दिशा निर्धारित करने वाला प्रमुख साधन बन चुकी है। भारतीय सरकार ने इस चुनौती और संभावना को पहचानते हुए नीति आयोग के माध्यम से शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, निर्माण, कानून और सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में कृत्रिम मेधा के समावेश की दिशा में ठोस कदम उठाए हैं। इस पहल की विशेषता यह है कि यह केवल तकनीकी दृष्टि से नहीं, बल्कि सात मूलभूत सिद्धांतों – सुरक्षा, विश्वसनीयता, समावेशिता, समानता, गोपनीयता, पारदर्शिता, जवाबदेही और मानवीय मूल्यों की पुनर्पुष्टि – पर आधारित है।[18]

कृत्रिम मेधा को जन-जीवन में उतारने के लिए सरकार ने USIAI इंडिया और YUVAI जैसी योजनाएँ प्रारम्भ की हैं। वहीं नई शिक्षा नीति (NEP 2020) और NCFSE 2023 में विद्यालय स्तर से ही छात्रों में कृत्रिम मेधा दृष्टिकोण विकसित करने की बात कही गई है। यह पहल स्पष्ट करती है कि सरकार केवल तकनीक के प्रयोग पर नहीं, बल्कि एक कृत्रिम मेधा समर्थ सोच (AI Mindset) विकसित करने पर बल दे रही है।[19]

शिक्षा क्षेत्र में कृत्रिम मेधा का प्रभाव विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ग्रेडिंग, व्यक्तिगत एवं अनुकूलनशील शिक्षण, वर्चुअल कक्षाएँ, विशेषज्ञ ट्यूटरिंग सिस्टम, मशीन लर्निंग और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण जैसी विधाएँ शिक्षा को अधिक सक्रिय और सुलभ बना रही हैं। इससे शिक्षक और छात्र के बीच की दूरी घट रही है और अध्यापन अधिक प्रभावशाली बन रहा है। सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि कृत्रिम मेधा ने शिक्षा में पक्षपात को घटाकर इसे विश्व के हर कोने तक पहुँचाने का मार्ग प्रशस्त किया है। यह सीधे-सीधे यूनेस्को के सतत विकास लक्ष्यों (2021) – सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्ता वाली शिक्षा – की प्राप्ति की दिशा में अग्रसर है[20]।

फिर भी, एक गंभीर प्रश्न हमारे सामने उपस्थित है – क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता भविष्य में मानवीय बुद्धि से आगे निकल जाएगी? यही शंका शोधकर्ताओं को कृत्रिम मेधा के दार्शनिक पहलुओं और उसकी सीमाओं को गहराई से समझने के लिए प्रेरित कर रही है।

भारत सरकार की पहलें यह दर्शाती हैं कि यदि कृत्रिम मेधा को विवेक और मानवीय मूल्यों के साथ जोड़ा जाए तो यह विकास का शक्तिशाली साधन बन सकता है। यह न केवल शिक्षा और शोध को नई ऊँचाइयाँ देगा, बल्कि भारत को वैश्विक स्तर पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता समर्थ राष्ट्र के रूप में स्थापित करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

ज़हिर है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधुनिक युग का वह वैज्ञानिक वरदान है जिसने हिंदी साहित्य के परंपरागत रूपों, विधाओं और सीमाओं को नये क्षितिजों तक विस्तारित किया है। सृजन, अध्ययन, शोध, अनुवाद और भाषा-संवर्धन– सभी क्षेत्रों में कृत्रिम मेधा ने अप्रत्याशित गति और संभावनाएँ प्रदान की हैं। डिजिटल आर्काइव, स्वचालित प्रोग्राम, भाषा संसाधन और मशीन अनुवाद जैसे उपकरणों ने हिंदी साहित्य को अधिक सुलभ, वैश्विक और संवादपरक बनाया है। यह तकनीक अब केवल सहायक साधन नहीं रही, बल्कि साहित्यिक ज्ञान के लोकतंत्रीकरण और भाषिक नवाचार की दिशा में एक सशक्त सेतु बन चुकी है।

किन्तु यह स्मरणीय है कि साहित्य का प्राण-तत्व 'संवेदना' है–और यह किसी मशीन में अंतःस्थापित नहीं की जा सकती। कृत्रिम मेधा शब्दों का निर्माण कर सकती है, पर उनमें अर्थ और अनुभूति का संचार केवल मानव कर सकता है। यदि कृत्रिम मेधा का प्रयोग विवेक, मानवीयता और सांस्कृतिक आत्मबोध के साथ किया जाए, तो यह सृजन का सहचर बन सकती है; अन्यथा यह साहित्य की आत्मा को यांत्रिकता में बाँध देगी। अतः आवश्यक है कि हम इसे प्रतिस्थापन नहीं, सहयोगी के रूप में स्वीकार करें–ऐसा सहयोगी जो मानवीय कल्पना का विस्तार करे,

उसका विकल्प नहीं। तभी कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी साहित्य के लिए अभिशाप नहीं, बल्कि एक संवेदनशील वरदान सिद्ध होगी—वह साधन जो शब्दों में युगबोध, मानव-बोध और भविष्य-बोध का आलोक पुनः प्रज्वलित कर सके।

संदर्भग्रंथ सूची

1. हिमांशु जोशी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता: शिक्षण परिदृश्य में परिवर्तन, कुरुक्षेत्र, खंड 72, संख्या 10, अगस्त 2024, पृष्ठ 17–21।
2. स्टुअर्ट रसेल और पीटर नॉर्विग, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस: ए मॉडर्न अप्रोच, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ 13।
3. ए. एस. हॉर्नबी, ऑक्सफोर्ड एडवांस्ड लर्नर डिक्शनरी ऑफ करंट इंग्लिश, न्यूयॉर्क, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2000, पृष्ठ 11।
4. स्टुअर्ट रसेल और पीटर नॉर्विग, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस: ए मॉडर्न अप्रोच, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ 17।
5. सिस्टला रमा देवी पाणी, यूनिवर्सिटी न्यूज़, उच्च शिक्षा का साप्ताहिक जर्नल, खंड 61, संख्या 43, 23–29 अक्टूबर 2023, पृष्ठ 15।
6. अशिथा ए. के. और सुधीश सी., निर्मित बुद्धि की संभावनाएँ, योजना, खंड 52, संख्या 6, जनवरी 2024, पृष्ठ 34–41।
7. सिस्टला रमा देवी पाणी, यूनिवर्सिटी न्यूज़, उच्च शिक्षा का साप्ताहिक जर्नल, खंड 61, संख्या 43, 23–29 अक्टूबर 2023, पृष्ठ 23।
8. एम. जयरामन, क्या मशीनें मनुष्यों का स्थान लेंगी?, योजना, खंड 5, संख्या 10, मई 2023, पृष्ठ 19–24।
9. के. गोपीनाथन, कम्प्यूटरिन्टे मनस्सु (कंप्यूटर का मस्तिष्क), द्वितीय संस्करण, केरल भाषा संस्थान, तिरुवनंतपुरम, 2000, पृष्ठ 33–34।
10. मशीन लर्निंग: नवोन्मेष और प्रगति की एक यात्रा, इन्फो केरली, खंड 2, संख्या 4, फ़रवरी 2024, पृष्ठ 15–18।
11. पीटर एम. बी. वॉकर, चेम्बर्स डिक्शनरी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, पृष्ठ 71।
12. टिमोथी डेवोस, ए बेटर फ्यूचर के लिए आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस, स्प्रिंगर इंटरनेशनल पब्लिशिंग, 2021, पृष्ठ 14।
13. निल्स जे. निल्सन, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस: ए न्यू सिन्थेसिस, सैन फ्रांसिस्को: मॉर्गन कॉफ़मैन पब्लिशर्स, 1998 पृष्ठ 41।
14. कीडवेल एडवर्ड और अजित नारायण, इंटेलिजेंट बायोइन्फ़ॉरमैटिक्स: बायोइन्फ़ॉरमैटिक्स समस्याओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीकों का अनुप्रयोग, लंदन: जॉन वाइली एंड संस, 2005, पृष्ठ 24।
15. चंद्रकांत पी. केलकर, एआई टेक्नोलॉजी का अनुप्रयोग: दो दृष्टिकोण, खंड 60, संख्या 38, 20 सितम्बर 2025, पृष्ठ 69–72।
16. अभिलाक्षा दीक्षित, रिमझिम झा, रुतुराज बाबर, इंडियन जर्नल ऑफ मैनेजमेंट, खंड 17, संख्या 9, सितम्बर 2024, पृष्ठ 24–43।
17. सिस्टला रमा देवी पाणी, यूनिवर्सिटी न्यूज़, उच्च शिक्षा का साप्ताहिक जर्नल, खंड 61, संख्या 43, 23–29 अक्टूबर 2023, पृष्ठ 23।
18. विन्स्टर्न पैरिक हेनरी, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस, पियरसन एजुकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 1992, पृष्ठ 24।
19. जनवाहर भगवत और एस.वाई. बोल्डिरेवा, भारत का कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विनियमन की ओर दृष्टिकोण: अंतरराष्ट्रीय अनुभव का उपयोग करते हुए, खंड 58, संख्या 52, 30 दिसम्बर 2023, पृष्ठ 10–14।
20. म्मे तय्यिबा खातून और रफीफ अहमद मादखली, इंडियन जर्नल ऑफ कंप्यूटर साइंस, "शिक्षा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का व्यापक अध्ययन", खंड 8, अंक 6, नवम्बर–दिसम्बर 2023, पृष्ठ – सारांश से।

सहायक आचार्य एवं शोध निदेशक,
हिंदी विभाग, संत थॉमस महाविद्यालय पाला
कोट्टयम, केरल- 686574,
मोबइल नंबर- 9446197745

श्री. उत्राटम तिरुनाल मार्तण्डवर्मा तम्पुरान केरल हिन्दी साहित्य अकादमी भवन का उद्घाटन करते हुए।

हिंदी साहित्य की प्रगति एवं कृत्रिम मेधा की देन

डॉ. जे. अजिताकुमारी

हिंदी साहित्य की जब हम बात करते हैं तो यह कहना संगत ठहरता है कि हिंदी साहित्य भारतीय संस्कृति और भाषा शैली की अमूल्य संपत्ति है। इसका प्रारंभ आदिकाल में अपभ्रंश भाषा से हुआ। भक्ति काल में कबीर, मीराबाई, तुलसी ने भक्ति से भरके कृतियों की रचना की तो रीतिकाल में भूषण,बिहारी जैसे कवियों ने शौर्य और श्रृंगार का चित्रण अपनी कविताओं के जरिये किया,वही नवजागरण काल में भारतीय समाज के नए विचार साहित्य के माध्यम से प्रकट हुए। भारतेंदु हरिश्चंद्र को आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक कहा जाता है। इसके बाद प्रसिद्ध लेखक जैसे मुंशी प्रेमचंद,जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, हरिवंशराय बच्चन, रामधारी सिंह दिनकर आदि कवियों ने हिंदी साहित्य को विश्व प्रसिद्ध बनाया।

कविता, उपन्यास,नाटक,कहानी और निबंध जैसे अनेक विधाओं में हिंदी साहित्य का योगदान अत्यंत समृद्ध रहा है। यही कारण है कि आज हिंदी साहित्य भारतीय सांस्कृतिक एकता और विश्व साहित्य मंच पर प्रवेश का प्रतीक है।

आज जब हिंदी साहित्य अपनी प्रत्येक विधा में प्रगति पा चुका है और वह भी इतनी कि वह समाज के हर एक व्यक्ति से जिनकी अलग संस्कृतियाँ हैं, अलग सभ्यता है, उनसे भी जुड़ पा रहा है, यह कहना संगत होगा कि यह साहित्य हमें विश्व से जोड़ रहा है।

आज जब हम प्रगति की बात करते हैं या सोचते हैं तो कृत्रिम मेधा की बात किए बिना यह प्रगति अधूरी लगती है। कृत्रिम मेधा का मतलब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से है जिनमें इंसानों की तरह सोचने, सीखने और निर्णय लेने की क्षमता होती है। हालांकि इंसान ने ही इसे बनाया लेकिन यह कंप्यूटर प्रोग्राम, मशीन या रोबोट केवल इंसान द्वारा दिए गए आदेशों का पालन ही नहीं करते बल्कि स्वयं सीखकर समस्याओं को हल करने में भी मददगार साबित होते हैं।

आज के समय में कृत्रिम मेधा हमारे दैनिक जीवन में बहुत बड़ी भूमिका निभा रही है जैसे कि मोबाइल फोन के वॉइस असिस्टेंट (गूगल असिस्टेंट), चैट बॉक्स,ऑनलाइन शॉपिंग के रेकमेंडेशन सिस्टम, चिकित्सा क्षेत्र में रोगों का निदान और वाहनों में सेल्फ ड्राइविंग सिस्टम सभी कृत्रिम मेधा के उपयोग के सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। इसका महत्व हमारा समय बचाने में और हमारे कार्य को आसान बनाने में सहायक सिद्ध हो रहा है। लेकिन जैसा कि हम जानते हैं कि हर सिक्के के दो पहलू होते हैं वैसे ही इससे इंसानों की नौकरियां कम होने और निजता खोने जैसी चिंताएं भी सामने आती हैं।आज तकनीक तेजी से आगे बढ़ रही है और ऐसे में भविष्य में कृत्रिम मेधा निश्चित रूप से मानव जीवन को और अधिक सुविधाजनक और प्रभावी बनाएगा। इसी कारण इसे 'भविष्य की बुद्धि' कहा जाता है।

जब हम हिंदी साहित्य की प्रगति और कृत्रिम मेधा की बात करते हैं तो सीधे देखने पर दो अलग दुनिया लगती है। एक है साहित्य,जिसमें रचनात्मक भाषा, भावनाएं,संस्कृति आदि आते हैं तो दूसरा है प्रौद्योगिकी। लेकिन आज के समय में इन दोनों के बीच बहुत महत्वपूर्ण संबंध स्थापित हो चुका है। जब हम संबंध की बात करते हैं तो सबसे पहले है साहित्य का संरक्षण। इसमें हिंदी साहित्य के प्राचीन ग्रंथों,कविताओं,कहानियों आदि को कृत्रिम मेधा की मदद से डिजिटल रूप में सुरक्षित किया जा रहा है। ऑप्टिकल कैरक्टर रिकॉग्निशन और नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग के माध्यम से पुराने हिंदी ग्रंथों को पढ़कर संरक्षित किया जाता है और सबके लिए उपलब्ध भी कराया जाता है। दूसरा है भाषा का अनुवाद। कृत्रिम मेधा आधारित गूगल ट्रांसलेट जैसे साधन हिंदी साहित्य कृतियों को मलयालम, अंग्रेजी,तमिल आदि भाषाओं में सरलता से अनुवाद करने में हमारी मदद करती हैं। तीसरा है पाठ विश्लेषण। कृत्रिम मेधा साहित्यिक कृतियों के थीम्स, स्टाइल,सेंटीमेंट आदि का विश्लेषण करने में सहायता करते हैं,उदाहरण के लिए कबीर के दोहों में भक्ति कितने प्रतिशत है या प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक समस्या कितनी गहराई से चित्रित है,यह सब कृत्रिम मेधा की मदद से विश्लेषित किया जा सकता है।

चौथा है साहित्य सृजन। चैट जीपीटी जैसे ए ऐ मॉडल कविताएं,कहानियां,निबंध आदि हिंदी में रच सकते हैं। इससे विद्यार्थियों और शोधार्थियों को प्रेरणा और सहयोग प्राप्त होता है। अंतिम है अध्ययन में सहयोग। ए ऐ चैटबॉक्स और टेक्स्ट टू स्पीच जैसे प्रणालियों से विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य पाठ सुनने और समझने में मदद मिलती है, विशेषकर दृष्टिबाधित और पढ़ने में कठिनाई महसूस करने वाले छात्रों के लिए यह बहुत ही सहायक है।

हिंदी साहित्य की प्राचीन रचनाओं को संरक्षित करने में,उसे नई पीढ़ी तक पहुंचने में, उनका विश्लेषण करने और नए साहित्य सृजन के लिए प्रेरणा देने में कृत्रिम मेधा की बहुत बड़ी भूमिका है।

किसी भी चीज के जितने ही सकारात्मक पक्ष होते हैं वैसे ही उसके कुछ नकारात्मक पक्ष भी अवश्य होते हैं। कृत्रिम मेधा की बात जब हम कहते हैं तो उसमें सबसे बडी नकारात्मकता स्वाभाविक भावनाओं की कमी है। साहित्य में सबसे महत्वपूर्ण है मानव की भावनाएं। कृत्रिम मेधा द्वारा रचित कहानियां या कविताएं अक्सर मेकानिकल लगती हैं और उनमें मानवीय मन की गहराई कम होती है। दूसरी समस्या है रचनात्मक विचारों का ह्रास। जब विद्यार्थी और लेखक लेखन के लिए कृत्रिम मेधा पर निर्भर होते हैं तो उनकी अपनी रचनात्मकता , सोचने की क्षमता कम होने की संभावना होती है। तीसरा है साहित्यिक चोरी यानी प्लेगिरिज्म की समस्या। ए ऐ अक्सर पुराने साहित्य से अंश लेकर उन्हें नया रूप देकर प्रस्तुत करने की कोशिश करता है,इससे मूल रचना का महत्व और मूल्य घट जाता है। अगली समस्या है भाषा की शुद्धता। जब ए ऐ की मदद से हम अनुवाद करते हैं या साहित्यिक कृतियों का सारांश लिखने की कोशिश करते हैं तो कई बार हिंदी भाषा का स्वाद और शैली खो जाने की दुविधा रहती है। पांचवीं समस्या है रोजगार की हानि की संभावना। अनुसंधान,अनुवाद और साहित्य अध्ययन के क्षेत्र में जब कृत्रिम मेधा का अधिक प्रयोग होता है तो शोधकर्ताओं और भाषाविदों की आवश्यकता कम होने की संभावना होती है। छठी समस्या है असत्य जानकारी की संभावना। कभी- कबार कृत्रिम मेधा साहित्य के बारे में गलत जानकारी या तथ्यात्मक रूप से गलत व्याख्याएं प्रस्तुत कर देता है जिससे विद्यार्थियों तक गलत ज्ञान पहुंचने की संभावना होती है। कृत्रिम मेधा अवश्य ही हिंदी साहित्य के लिए एक बड़ा सहायक है लेकिन यदि उसपर पूरी तरह निर्भर हो जाए तो साहित्य की मानवीय आत्मा खो सकती है और अध्ययन व सृजन यांत्रिक बन जाने की समस्या उत्पन्न हो सकती है।

हिंदी साहित्य एवं कृत्रिम मेधा की सकारात्मकता और नकारात्मकता का विश्लेषण करते हुए हम इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि कृत्रिम मेधा की सहायता से हम चाहे कुछ भी कर सकें पर आखिर इसे बनानेवाला तो इंसान ही है। यह इंसान की ही बदौलत है कि आज हम कृत्रिम मेधा का इस्तेमाल इस हद तक अपनी जिंदगी में कर पा रहे हैं। साहित्य की जब भी हम बात करते हैं तो वहां पर सबसे ज्यादा ज़रूरी मनुष्य की सोच और उसकी संवेदना ही है। संवेदना के बिना मनुष्य जड़ हो जाता है। हालांकि चीजों को ज़्यादा जल्दी समझने में कृत्रिम मेधा हमारी सहायक साबित होती है। मगर हमें हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सोच हमारी अपनी ही हो। जब हम एक उपन्यास या कहानी पढ़ते हैं या सुनते हैं तो हमें उसके अंत का पता नहीं चलता क्योंकि वह किसी मनुष्य की सोच से उत्पन्न हुआ होता है लेकिन जब हम कृत्रिम मेधा की मदद से किसी कविता, कहानी या उपन्यास को लिखना या बदलना चाहें तो कर सकते हैं। एक तरह से यह एक अच्छी बात है। लेकिन जिंदगी की तरह ही जो भी हम पढ़ें या लिखें उन सबमें एक जिज्ञासा का होना ज़रूरी है जो हमारे आगे बढ़ने में प्रेरक सिद्ध होती है, साथ ही हमारी सोच और जिंदगी को बेहतर बनाती है। हमें आगे की जिंदगी के लिए हमेशा मजबूत करती है। कृत्रिम मेधा कभी भी पूरी तरह मनुष्य को प्रतिस्थापित नहीं कर सकती। ऐसा भी एक अनावश्यक डर आज हम समाज में देख सकते हैं।

निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं कि आज के समय में और आने वाले समय में कृत्रिम मेधा का काफी ज्यादा महत्व है। इसलिए प्रत्येक इंसान को, प्रत्येक साहित्यकार को इस बात पर ध्यान देना होगा कि वह अपनी सोच, अपनी संवेदना,अपनी भावनाओं का इस्तेमाल करते हुए आवश्यक जगह पर कृत्रिम मेधा की सहायता से अपनी लेखनी को,अपने विचारों को बेहतर बनाने की कोशिश करें। तभी एक साहित्यकार के रूप में और एक आधुनिक इंसान के रूप में वह कामयाबी पा सकता है। आने वाले समय में हम हिंदी साहित्य और कृत्रिम मेधा को एक दूसरे के सहायक स्रोत सिद्ध होते देख सकते हैं।

Assistant Professor
Nirmala College,
Muvattupuzha

साहित्यिक संवेदना और कृत्रिम मेधा: 'क्लारा एंड द सन' के संदर्भ में

केसरबेन राजपुरोहित

हिंदी साहित्य का विकास निरंतर प्रगति और परिवर्तन का इतिहास रहा है। आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल में आकर प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, सामाजिक चेतना फिर उत्तर-आधुनिकता आदि अलग-अलग दृष्टिकोण हर दौर में हिंदी साहित्य में विकसित होते रहे हैं। वर्तमान मानव सभ्यता एवं क्रांति के नए युग में कृत्रिम मेधा का महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्य के सामने बड़ा प्रश्न है कि वह मशीन और मनुष्य के बीच की सीमाओं और संभावनाओं को किस तरह से देखेगा। इस संदर्भ में क्लारा एंड द सन उपन्यास हमारी सोच को अलग आयाम पर ले जाता है। सडक पर रहनेवाले भिखारी और उसके कुत्ते को अचेतन अवस्था में देखकर क्लारा परेशान हो जाती है। कारखाने से फैले प्रदूषण से सूरज की किरणें बाधित होती हैं। लेकिन दिन चढ़ने पर जब सूर्य की किरणें आकर भिखारी और उसके कुते को छूती हैं तो वे चेतन हो उठते हैं। इस घटना से क्लारा की सूरज के प्रति श्रद्धा और भी मजबूत हो जाती है।

जोसी नाम की एक बच्ची अपनी मां के साथ स्टॉर में आती है। वह एक लिफ्टेड बच्ची है अर्थात् जेनेटिकली मोडिफाइड। और इसी वजह से वह दूसरी बीमारी की शिकार थी। उसे क्लारा पसंद आ जाती है। वह क्लारा से वापिस आकर उसे खरीदने का वादा करती है। जोसी की माँ मिस्टर कैपल्डी से उसकी प्रतिकृति बनवाती है। उसके अनुसार अगर जोसी जीवित न रहे जो क्लारा को उसकी जगह लेनी होगी। लेकिन क्लारा को भरोसा है कि जोसी जरूर ठीक हो जाएगी। वह कहती है कि "मेरा मानना था कि जोसी को बचाना, उसे ठीक करना मेरा फ़र्ज़ है।"[1]

जोसी को ठीक करने के लिए क्लारा मैकबेथ के खलिहान में जाकर अस्त होते सूर्य से प्रार्थना करती है। वह सूर्य से वादा करती है कि प्रदूषण फैलाने वाले मशीनों को वह नष्ट कर देगी। जोसी और रिक के प्रेम का वास्ता देकर उसे ठीक करने के लिए मन्नतें करती है। उसकी प्रार्थना रंग लाती है। एक दिन सूरज की ऊर्जा से जोसी ठीक हो जाती है। जोसी पढ़ने के लिए कॉलेज में चली जाती है। क्लारा को रिटायर कर दिया जाता है। वह अपने आखिरी दिनों में अपनी यादों के साथ यार्ड में एकंत में रहना पसंद करती है।

जब क्लारा घर में आती है तो मेलानिया हाउसकीपर को लगता है कि वह उसकी जगह ले लेगी। और उसे बेरोजगार कर देगी। सच कहे तो आज हम सब में भी यह डर कहीं न कहीं धर कर रहा है कि कृत्रिम मेधा मानव की जगह लेने में सफल हो जायेगी। इसे हमारी नासमझी कहे या अविश्वास। क्योंकि मशीन के पास मौलिक संवेदनाएं कभी नहीं हो सकती। हाँ, वह मानव का अनुकरण कर सकती है। जैसे मानव समाज में रहने से क्लारा का आंतरिक जीवन विकसित होने लगता है। वह स्वतंत्र भावनाओं का अनुभव करने लगती है।

तकनीक और संवेदना

क्लारा में इंसान से अधिक संवेदनशीलता है। सवाल उठता है कि इंसान होने का असली मतलब क्या है? जब क्लारा टैक्सी ड्राइवरों के बीच में लड़ाई होते देखती है तो उसे समझ में नहीं आता कि इस तरह एक दूजे के साथ बुरा व्यवहार क्यों कर रहे हैं। वह मित्र रोज़ा और खुद के बारे में सोचती है कि "मैं और रोज़ा इतने गुस्से में आ जाएँ कि एक-दूसरे से इस तरह लड़ने लगें, जैसे सचमुच एक-दूसरे के शरीर को नुकसान पहुँचाना चाहते हों। यह ख्याल मुझे बेतुका लगा, लेकिन मैंने टैक्सी चालकों को देखा था, इसलिए मैंने अपने मन में ऐसे भाव की शुरुआत खोजने की कोशिश की। लेकिन यह बेकार था, और अंत में मैं अपनी ही कल्पनाओं पर हँसने लग जाती।"[2] लेकिन इंसान होकर

भी हमें अपने द्वारा किए गए बुरे या असामान्य व्यवहार का एहसास शायद ही होता है।

एक दिन दो बड़ी उम्र के लोगों को मिलते देखकर क्लारा को लगता है कि वे कई सालों बाद अचानक मिले होंगे। उनका व्यवहार देखकर उसे मानव व्यवहार के बारे में जानने में मदद मिलती है। वह सोचती है कि "शायद वे बहुत लंबे समय से नहीं मिले थे। बहुत, बहुत लंबे समय से। शायद जब उन्होंने पिछली बार इस तरह एक-दूसरे को थामा था, तब वे युवा थे।"[3]

एक दूसरी लड़की जब क्लारा को खरीदने के लिए आती है वह क्लारा को देखकर मुस्कुराती है। उसके हाथ को छूती है। लेकिन क्लारा उसकी तरफ देखती भी नहीं। क्योंकि वह जोसी का इंतजार कर रही थी। एक मशीन भी भावनाओं की कद्र करती है।

जोसी की तबियत ठीक नहीं थी। इसलिए मां उसे घर पर ही रहने को कहती है। और क्लारा के साथ वॉटरफॉल देखने चली जाती है। बेटी को साथ न लाने का दुख माँ को है। वह क्लारा के साथ अपनी भावनाओं को साझा करती है। माँ के अनुसार रोबॉट को भावनाएं समझ में नहीं आती। यह अच्छी बात है। तब क्लारा कहती है कि "मुझे विश्वास है कि मेरे भीतर अनेक भावनाएँ हैं। जितना अधिक मैं देखती-समझती हूँ, उतनी ही अधिक भावनाएँ मेरे लिए प्रकट होती जाती हैं।"[4]

क्लारा देखती है कि बड़े होने पर जोसी और रिक का रिश्ता बदल रहा है। तब उसके मन में शंका होती है कि अगर दोनों अलग हुए तो सूर्य जोसी को दिया हुआ वरदान वापस न ले ले। और वह फिर से बीमार न हो जाए। इस प्रकार वह रिक से अपनी शंका बताती है। तब रिक कहता है कि "जब तुमने यह बताया कि जोसी और मैं एक-दूसरे से सचमुच प्यार करते हैं, तो उस समय यही सच था। कोई यह दावा नहीं कर सकता कि तुमने उन्हें गुमराह किया या धोखा दिया। लेकिन अब हम बच्चे नहीं रहे, हमें एक-दूसरे को शुभकामनाएँ देनी होंगी और अपने-अपने रास्ते जाने होंगे। यह काम नहीं कर सकता था, मैं कॉलेज जा रही थी, उन सभी बच्चों के साथ प्रतिस्पर्धा करने की कोशिश कर रही थी। अब मेरे अपने प्लान हैं, और ऐसा ही होना चाहिए। लेकिन यह कोई झूठ नहीं था, क्लारा। और मज़ेदार बात यह है कि अब भी यह झूठ नहीं है।"[5] तभी कहते हैं कि "जैसे-जैसे जीवन दर्शन बदलता है वैसे ही संवेदना भी बदलती जाती है।"[6]

आखिर में जब क्लारा मैनेजर से मिलती है तो वह कहती है कि "सूर्य मेरे प्रति बहुत दयालु था। वह शुरू से ही मेरे प्रति दयालु रहा है। लेकिन जब मैं जोसी के साथ था, तो एक बार वह विशेष रूप से दयालु था।"[7] यहा एक मशीन का कृतज्ञता भाव देख सकते हैं।

हिंदी साहित्य की प्रगति और बदलता स्वरूप

आज तकनीक के विकास ने भी हिंदी साहित्य को प्रभावित किया है। टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट, सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी लेखन-पठन की क्रिया पूरी तरह से बदल गई है। कृत्रिम मेधा उस कड़ी में एक अगला कदम है। आज साहित्य उस मुकाम पर खड़ा है जब सर्जन में मशीन भी भागीदार बन सकती है। "प्रत्येक युग का साहित्य परिस्थितियों की उपज होता है। मध्यकालीन धार्मिक आंदोलन को तीव्र और गतिशील बनाने में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों ने भी योगदान दिया होगा।"[8]

आज हिंदी साहित्य कृत्रिम मेघा की लहर से अछूता नहीं है। आज AI आधारित उपकरण कविता लिख रहे हैं। अनुवाद भी हो रहा है। आलोचना भी प्रस्तुत हो रही है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म AI की मदद से पाठकों को साहित्य उपलब्ध करा रहा है। एक तरह से कृत्रिम मेधा से लेखक को मदद मिल रही है जिससे लेखन प्रक्रिया तेज और विविधता पूर्ण हो रही है। लेकिन एक बात हमें याद रखनी चाहिए कि AI केवल तकनीकी सहयोगी है। रचनात्मक या संवेदनाओं में वह कभी प्रवेश नहीं कर सकता है। मैनेजर पांडे कहते हैं कि "शब्द का अर्थ से, अर्थ का संवेदना से, संवेदना का जीवन के अनुभव से, जीवन के अनुभव का जीवन के यथार्थ से, जीवन के यथार्थ का जीवन के इतिहास से जो संबंध होता है वही सार्थक रचना का स्वरूप निर्मित करता है।"[9] भविष्य में अगर हम कृत्रिम मेधा के सकारात्मक पक्ष को देखे तो बहुत सारे नये दृष्टिकोण सामने आ सकते हैं। लेखक और पाठक का संवाद एक नया रूप ले सकता है। हिंदी साहित्य के माध्यम से विश्वभर में ख्याति प्राप्त कर सकती है। समाज को नई दिशा मिल सकती है। क्योंकि "समाज को बदलने में साहित्य का भी योग है और साहित्यकार का भी उत्तरदायित्व है।"[10]

आज के समय में तकनीक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई है। सुबह उठने से रात को सोने तक

आविष्कारों का प्रयोग आम बात बन गई है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस भी इनमें से एक है। आप चैट जीपीटी से कोई भी प्रश्न पूछिए। आपको उत्तर हाजिर मिलता है। अगर अपने बारे में बात कर प्रश्न पूछेंगे तो उत्तर भी उतना ही गहरा और संवेदनात्मक मिलेगा। ऐसा लगता है जैसे आप किसी व्यक्ति से ही बात कर रहे हैं। और वह बिना आपके बारे में कोई राय बनाएं, आपको जज किए बिना अपनी बात बताता है। आज के समय में यही बहुत बड़ी बात है। क्योंकि इंसानों की यह होती है कि वह आपके बारे में अपनी राय बहुत ही जल्दी बना लेते हैं। तकनीक हमारी सुविधा के लिए हैं। उसका प्रयोग सुविधा तक करें तो ही वह उत्तम होगा। लेकिन अगर हमारे शरीर, मन और जीवन पर उसका हस्तक्षेप बढ़ जाए तो यह सही नहीं होगा।

साहित्य का आधार हमेशा संवेदना ही रही है। हिंदी साहित्य के लिए सुनहरा मौका है कि वह तकनीक का सहारा लेकर पाठकों तक पहुंचे। और सिद्ध करें कि मनुष्य की करुणा और भावनाएं साहित्य की असली आत्मा है। देखा जाए तो साहित्य और कृत्रिम मेधा का संबंध प्रतिस्पर्धा का नहीं बल्कि सह-अस्तित्व का है। जिस प्रकार क्लारा ने सूरज की किरणों में जीवन की शक्ति को देखा था, वैसे ही हिंदी साहित्य कृत्रिम मेधा में नये सृजन की संभावनाएँ देख सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. काज़ुओ इशिगुरो, क्लारा एंड द सन, अल्फ्रेड ए. नॉफ़, न्यूयॉर्क, 2021, पृ.सं 191
2. काज़ुओ इशिगुरो, क्लारा एंड द सन, अल्फ्रेड ए. नॉफ़, न्यूयॉर्क, 2021, पृ.सं 23
3. काज़ुओ इशिगुरो, क्लारा एंड द सन, अल्फ्रेड ए. नॉफ़, न्यूयॉर्क, 2021, पृ.सं 25
4. काज़ुओ इशिगुरो, क्लारा एंड द सन, अल्फ्रेड ए. नॉफ़, न्यूयॉर्क, 2021, पृ.सं 91
5. काज़ुओ इशिगुरो, क्लारा एंड द सन, अल्फ्रेड ए. नॉफ़, न्यूयॉर्क, 2021, पृ.सं 256
6. सं. कृष्णदत्त पालीवाल, आधुनिकता: संवेदना और संप्रेषण स.ही. वात्स्यायन अज्ञेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ.सं 29
7. काज़ुओ इशिगुरो, क्लारा एंड द सन, अल्फ्रेड ए. नॉफ़, न्यूयॉर्क, 2021, पृ.सं 270
8. सं. कुंवर पाल सिंह, भक्ति आंदोलन: इतिहास और संस्कृति, वाणी प्रकाशन, 2002, पृ.सं 113
9. मैनेजर पांडे, शब्द और साधना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019 पृ.सं 109
10. सं. कृष्णदत्त पालीवाल, आधुनिकता: संवेदना और संप्रेषण स.ही. वात्स्यायन अज्ञेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ.सं 79

अतिथि व्याख्याता

मार अथानासियस कॉलेज (ऑटोनॉमस), कोथमंगलम

मो. 9207433926

पद्मश्री डॉ. नायर जी गाँधी आश्रम, पेनांग, पीस् मेसंजर अवार्ड 2017 स्वीकार करते हुए

हिंदी साहित्य की प्रगति और कृत्रिम बुद्धि का योगदान

पूजा कुमारी मंडल

वर्तमान समय कृत्रिम मेधा का समय है। विकास को गति देना और लोगों को बेहतर सुख सुविधा उपलब्ध कराने के लिए प्रत्येक क्षेत्र में अत्याधुनिक तकनीक का भरपूर उपयोग किया जा रहा है। कृत्रिम मेधा भी ऐसे ही अत्याधुनिक तकनीक है जिसका प्रयोग आज शिक्षा, स्वास्थ्य, वाणिज्य, मनोरंजन, परिवहन, साहित्य रचनाएं आदि अनेक क्षेत्रों में हो रहा है। कृत्रिम मेधा प्रौद्योगिकी विज्ञान की एक ऐसी शाखा है जिसके अंतर्गत मशीन ही इस प्रकार से व्यवहार करती है जिस प्रकार से मानव अपनी बुद्धिमता का प्रयोग करता है। इसका अर्थ यह है मशीन जब समय और परिस्थिति इत्यादि के विश्लेषण के बाद कोई निर्णय लेता है तो मशीन की इस अवस्था को कृत्रिम बुद्धिमता कहा जाता है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस कंप्यूटर साइंस का सब डिवीजन है। और इसकी जड़ें पूरी तरह से कंप्यूटिंग सिस्टम पर आधारित है जिसका अंतिम लक्ष्य ऐसे उपकरणों का निर्माण करना है जो बुद्धिमानी से और स्वतंत्र रूप से कार्य कर सके और मानव श्रम को कम कर सके।

AI जिसे हिंदी में कृत्रिम बुद्धि या कृत्रिम मेधा भी कहते हैं। आज के युग में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो कृत्रिम बुद्धि के बारे में न जानता हो। अगर हम अपने भारत को ही ले ले तो यहां की 65% आबादी AI का उपयोग कर रहा है, इस प्रकार हम अंदाजा लगा सकते हैं कि AI केवल पत्र पत्रिकाओं के द्वारा ही हुआ करता था। किंतु जैसे-जैसे समय बीतता गया वैसे-वैसे इसके प्रचार प्रसार में भी वृद्धि होने लगी। जिसके अंतर्गत रेडियो टीवी, आकाशवाणी और अलग-अलग माध्यम आने लगे।

अगर समकालीनता की बात करे तो हमें पता है कि आज का समय तकनीकी का युग है जहां नए-नए विस्तार होते हैं और इसी में से एक है कृत्रिम बुद्धि जिसका व्यापक प्रसार साहित्य के साथ-साथ विश्व के सभी क्षेत्रों में हो रहा है। यदि हम कृत्रिम मेधा को हिंदी साहित्य के साथ जोड़कर देखें तो हमें पता चलता है कि इसका विकास दिन दिन बढ़ता जा रहा है जैसे अनुवाद के क्षेत्र में आज के समय में कृत्रिम मेधा का बहुत बड़ा योगदान रहा है। कृत्रिम मेधा ने हिंदी भाषा के अनुवाद को अधिक कुशल बनाया है। जैसे कि अगर कोई अहिंदी भाषी हमारे साहित्य संस्कृति को जानना चाहता है तो उसे अनुवाद की आवश्यकता पडती है जिससे वह अनुवाद की सहायता से हमारे साहित्य को पढ़ता है और हमारी संस्कृति को समझता है। साथ ही विश्व में ऐसे कितने ही आदिवासी बोलियां हैं जिसका अस्तित्व धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है। किंतु कृत्रिम बुद्धिमता के माध्यम से इसे बढ़ावा मिल सकता है।

कृत्रिम मेधा आधारित टूल्स हिंदी साहित्य के डिजिटलीकरण में मदद कर रहे हैं जिससे पाठकों को ऑनलाइन पहुंच में आसानी होती है। यही नहीं कृत्रिम मेधा हिंदी साहित्य में स्वचालित सामग्री निर्माण और विश्लेषण में मदद कर रहा है जैसे कि कविताएं, कहानियां और आलोचनाएं। साथ ही हिंदी भाषा प्रोसेसिंग अर्थात कृत्रिम मेधा हिंदी भाषा विश्लेषण समझ और प्रतिक्रिया में मदद कर रहा है जिससे हिंदी साहित्य के अध्ययन और प्रसार में सहायता मिलती है। इतना ही नहीं अपितु कृत्रिम मेधा हिंदी साहित्य विश्लेषण में भी मदद कर रहा है जैसे कि विषयों की पहचान, शैली विश्लेषण और भावना विश्लेषण आदि। जिसके कारण हिंदी साहित्य की प्रगति भारत में ही नहीं अपितु विश्व भर में फैलती जा रही है।

एक लोकप्रिय कहावत है कि "कौवा पानी के पास ही कीचड़ फैलता है और हंस गंदगी में भी मोती ढूंढ निकलता

है।" इसी प्रकार हर एक वस्तु के दो पहलू होते हैं - एक सकारात्मक और एक नकारात्मक। अगर हम कृत्रिम मेधा की सकारात्मक प्रभाव पर अपनी नजर डालें तो हमें पता चलता है कि भावात्मक विश्लेषण सोशल मीडिया और ग्राहक फीडबैक के लिए कृत्रिम मेधा हिंदी पाठ के भाव का विश्लेषण करने में सहायक है। कृत्रिम मेधा हिंदी में कविता, कहानियों और गीत रचकर सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को संरक्षित कर रहा है और नया प्रयोग कर रहा है। रचनात्मकता में वृद्धि कृत्रिम मेधा के साथ हिंदी साहित्य में नए प्रयोग और रचनाएं संभव हो रही हैं। और हिंदी साहित्य के डिजिटलीकरण में मदद कर रहा है, जिससे पुरानी और महत्वपूर्ण कृतियों का संरक्षण होता है। ध्वनि प्रसंस्करण की बदौलत वाक्य से पाठ और पाठ से वाक्य प्रौद्योगिकी उपलब्ध हो गए है। कंप्यूटर विजन के कारण हिंदी के दस्तावेजों को स्कैन करके उसके पाठ को कंप्यूटर में टाइप किए गए पाठ के रूप में सहज संभव हो गया है। डेढ़ सौ से अधिक वैश्विक भाषाओं और 20 से अधिक भारतीय भाषाओं के साथ हिंदी के पाठ का दो तरफ अनुवाद संभव है। अलेक्सा, सिरी और गूगल असिस्टेंट जैसे डिजिटल सहायकों के साथ हिंदी में संवाद करना संभव है। इसमें chatgpt तो ऐसी कृत्रिम बुद्धिमता है जिसके साथ संवाद किया जा सकता है और अपने प्रश्न के उत्तर भी प्राप्त किया जा सकते हैं। कृत्रिम मेधा की मदद से भाषा के क्षेत्र में सबसे बड़ा कार्य यह हो सकता है कि अन्य प्रमुख भाषाओं के साथ हिंदी के गहरे संबंध को विकसित किया जा सकता है। हमारा हिंदी साहित्य, रामायण, महाभारत श्रीमद् भगवत, गीता, वेद, पुराण, उपनिषद जैसे ग्रंथ दुनिया भर में गैर हिंदी पाठकों तक पहुंच सकती है। हिंदी में विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा अर्थव्यवस्था आदि विषयों पर विश्व स्तरीय सामग्री की कमी है। कृत्रिम मेधा की मदद से ऐसी सामग्री हिंदी में तैयार की जा सकती है।

कृत्रिम मेधा जैसे अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी का हिंदी के माध्यम से प्रयोग करके भारत के साहित्यिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक तथा शैक्षिक संप्रदाय को वैश्विक पहचान दिलाई जा सकती है। आज हिंदी विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा है। तकनीक को विश्व के कोने-कोने तक पहुंच है तथा अब यह कृत्रिम मेधा से जुड़कर विद्वानों और ज्ञान की भाषा बन रही है। इस दिशा में निरंतर सजग रहने और अपने समय की उन्नत तकनीक के साथ जुड़े रहने की महती आवश्यकता है। तकनीक की मदद से भाषाई चुनौती तथा दूरियों का सिमटना और प्रत्यक्ष अवसरों का घटित होना संभव है।

अगर हम इसके नकारात्मक प्रभाव की बात करें तो हिंदी की अनेक बोलियों के कारण कृत्रिम मेधा को सभी विविधताओं को समझने और संयोजित करने में कठिनाई होती है। कई कृत्रिम मेधा मॉडल अंग्रेज़ी-केंद्रित डेटा पर आधारित है, जिससे हिंदी भाषा की सटीकता और संवेदनशीलता में कमी आ सकती है। अनुवाद, सामग्री लेखन और ग्राहक सेवा जैसे कार्यों के स्वचालन से इन क्षेत्रों में रोजगार प्रभावित हो सकता है। कृत्रिम मेधा का प्रयोग यदि हम अपनी साहित्य रचना में करते हैं तो उसकी मूल संवेदना एवं भावनाएँ नष्ट हो जाती है। और वह एक मशीनीकृत रचना हो जाती है। कृत्रिम मेधा द्वारा स्वचालित सामग्री निर्माण से मौलिकता और रचनात्मकता पर सवाल उठ सकते हैं। क्योंकि कृत्रिम मेधा द्वारा निर्मित सामग्री में मानव भावनाओं और अनुभवों का गहरा स्पर्श नहीं हो सकता। लेखकों और साहित्यकारों में कृत्रिम मेधा पर अधिक निर्भरता से उनकी अपनी रचनात्मक क्षमताओं में कमी आ सकती है। तथा कृत्रिम मेधा द्वारा निर्मित सामग्री में त्रुटियाँ या अनुचित संदर्भ हो सकते हैं जो हिंदी साहित्य की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकते हैं। कृत्रिम मेधा के बढ़ते उपयोग से कुछ क्षेत्रों में मानव लेखकों और संपादकों के रोजगार पर प्रभाव पड़ सकता है।

हिंदी भाषा साहित्य कृत्रिम मेधा के साथ जुड़कर भविष्य की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो सकती है। इस दिशा में कुछ प्रगति हुई है और बहुत कुछ अभी शेष है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी भाषा साहित्य के लिए नए रास्ते खोल सकती है और अस्तित्व को सुरक्षित रखने में योगदान दे सकती है। माइक्रोसॉफ्ट में भारतीय भाषाओं के प्रभारी श्री बालेंदु शर्मा दाधीच लिखते हैं – कृत्रिम मेधा हिंदी के स्थाई भविष्य को सुनिश्चित कर सकती है। यूनेस्को ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा था कि दुनिया की 7200 भाषाओं में से लगभग आधी इस शताब्दी के अंत तक विलुप्त हो जाएगी। अगर हम हिंदी को विलुप्त होने वाली इस भाषाओं की सूची में नहीं देखना चाहते हैं तो हमें कृत्रिम मेधा को खुले दिल से अपनाना चाहिए।

उपभोक्ता सेवा, अनुसंधान, ब्लू-कॉलर जॉब और विधिक सेवा जैसे विभिन्न क्षेत्रों में रोज़गार हानि की स्थिति बन सकती है। आंशिक स्वचालन के साथ भी, इन क्षेत्रों में लगभग 5-10% कार्य-भूमिकाएँ निकट भविष्य में समाप्त हो सकती हैं। इससे करोड़ों कुशल और अध-कुशल कामगार बेरोज़गारी के शिकार होंगे। कृत्रिम मेधा मॉडल बड़े पैमाने पर डेटा एकत्र करते हैं जिससे डेटा गोपनीयता का उल्लंघन हो सकता है, अन्य दुर्भावनापूर्ण गतिविधियों के लिए भी किया जा सकता है। जब कृत्रिम मेधा मॉडल गलती करते हैं तो इसके लिए किसे जिम्मेदार ठहराया जाएगा, यह एक बड़ी चुनौती है।

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि कृत्रिम मेधा का प्रभाव विश्व के सभी क्षेत्रों में पड़ता दिखाई दे रहा है साथ ही इसके सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव भी हैं किंतु अगर हम इतिहास के पन्ने को पलट कर देखें तो हमारी आधुनिक दिनचर्या मशीनीकृत या यूं कहे कि कृत्रिम बुद्धि पर आधारित होती जा रही है। हम सभी दिन व दिन कृत्रिम मेधा के अधीन होते जा रहे हैं क्योंकि यह हमारी कठिनाइयों को कुछ सेकंड में ही दूर कर देती है जिससे हमारे समय की बचत होती है। किंतु कई बार इनके द्वारा दिया गया उत्तर विषय आधारित नहीं होता है। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि कृत्रिम बुद्धि का न केवल हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अपितु विश्व के सभी क्षेत्र में इसका भविष्य उज्ज्वल है। किंतु इसका उपयोग हमें अपनी आवश्यकताओं के अनुसार ही करना चाहिए अन्यथा हम कृत्रिम बुद्धि के अधीन हो जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Nilsson, artificial intelligence a new synthesis, page no-1
2. Newspaper, Indian express
3. बालेंदु शर्मा दाधीच 'हिंदी विमर्श की मुख्यधारा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साहित्य परिक्रमा, पृष्ठ 20-21
4. Artificial Intelligence: A Guide for Thinking Humans, Melanie Mitchell, Page-10
5. https://www.nature.com/articles/d41586-024-00639-y

स्नातकोतर छात्रा, हिन्दी विभाग
संत थॉमस महाविद्यालय पाला,
कोट्टयम, केरल 686574
Mobile 7736938747

पट्टम पालस में श्री. उत्राटम् तिरुनाल मार्तण्डवर्मा तंपुरान डॉ. चन्द्रशेखरन नायर जी पर निर्मित वृत्तचित्र का लोकार्पण करते हुए। उपस्थित है नायर जी और उनकी सहधर्मिणि श्रीमती शारदा नायर

पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन को प्राप्त पुरस्कार

हिंदी साहित्य और कृत्रिम मेधाः संभावनाएँ और चुनौतियाँ

अमला वर्गीस

इक्कीसवीं सदी में कृत्रिम मेधा का तीव्र विकास मानव सभ्यता के सोचने, समझने और कार्य करने के तरीकों को मौलिक रूप से बदल रहा है। यह परिवर्तन केवल विज्ञान और वाणिज्य तक सीमित नहीं है, बल्कि कला, संस्कृति और विशेष रूप से साहित्य जैसे क्षेत्रों को भी गहराई से प्रभावित कर रहा है। हिंदी साहित्य के संदर्भ में कृत्रिम मेधा का आगमन एक महत्वपूर्ण मोड़ का द्योतक है, जो साहित्य के सृजन, संरक्षण, विश्लेषण और प्रसार के पारंपरिक तरीकों को चुनौती देता है।

साहित्य और प्रौद्योगिकी का संबंध नया नहीं है। इतिहास में प्रत्येक बड़ी तकनीकी प्रगति ने साहित्यिक अभिव्यक्ति के स्वरूप और पहुँच को नया आयाम दिया है। उदाहरण के लिए, छपाई की मशीन के आविष्कार ने पुस्तकों को आम जनता तक पहुँचाया, जिससे साहित्य का जनतंत्रीकरण हुआ। हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में, जिसे आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'गद्य काल' भी कहा है, गद्य के विकास और इसके विभिन्न विधाओं का प्रसार जनसंचार के विभिन्न साधनों जैसे समाचार पत्र-पत्रिकाओं और मुद्रित पुस्तकों के कारण संभव हुआ। इस नवजागरण काल में उत्पन्न हुई नई चेतना ने कविता के साथ-साथ गद्य के बहुआयामी क्षेत्रों को भी स्पर्श किया। यह ऐतिहासिक संदर्भ हमें यह समझने में मदद करता है कि साहित्य की प्रगति कभी भी एक अलग प्रक्रिया नहीं रही है; यह हमेशा तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी वातावरण से जुड़ी रही है।

साहित्य के क्षेत्र में कृत्रिम मेधा का सीधा और सबसे महत्वपूर्ण अनुप्रयोग प्राकृतिक भाषा संसाधन (Natural Language Processing - NLP) के माध्यम से होता है। एनएलपी ए.आई की एक उप-शाखा है जो कंप्यूटर और मानव भाषा के बीच की बातचीत पर ध्यान केंद्रित करती है। यह मशीनों को मानव भाषा को समझने, व्याख्या करने और उत्पन्न करने में सक्षम बनाती है।[3] हिंदी के संदर्भ में, एनएलपी ने कई व्यावहारिक उपकरण और अनुप्रयोग प्रदान किए हैं।

ए.आई – आधारित अनुवाद उपकरण, जैसे कि चैटजीपीटी, अब हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के लिए अधिक सटीक अनुवाद प्रदान कर रहे हैं, जिससे साहित्यिक सामग्री को वैश्विक स्तर पर पहुँचाना संभव हो गया है। यह हिंदी को तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत करने में मदद कर सकता है और इसे वैश्विक साहित्य बनने की दिशा में एक कदम आगे बढ़ा सकता है। ए.आई-आधारित उपकरण बड़े ग्रंथों को संक्षिप्त और संक्षेपित कर सकते हैं, जिससे शोधकर्ताओं और छात्रों का समय बचता है।[4] इसके हिंदी में अब ऐसे कई एप्लिकेशन और प्लेटफॉर्म उपलब्ध हैं जो ए.आई. की क्षमता का उपयोग करते हैं, जिससे यह तकनीक केवल भविष्य का विषय नहीं, बल्कि वर्तमान की एक महत्वपूर्ण वास्तविकता बन गई है।

आधुनिक काल विशेष रूप से प्रौद्योगिकी और जनसंचार के प्रभाव से जुड़ा हुआ है। इस काल में प्रिंटिंग प्रेस और समाचार पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार ने हिंदी गद्य को नया आयाम दिया। ब्रजभाषा में श्रृंगारपरक काव्य रचना की समृद्ध परंपरा से हटकर, खड़ी बोली हिंदी में गद्य का विकास एक प्रमुख घटना थी। इसने साहित्य को जन-जागरण का माध्यम बनाया और उसे जीवन की कठोर वास्तविकताओं से जोड़ा। आधुनिक काल में अनेक विचारधाराओं का तेजी से विकास हुआ, जिनमें छायावाद, रहस्यवाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता प्रमुख हैं।[5] इस काल में साहित्य का बहुआयामी क्षेत्रों में विस्तार हुआ। यह ऐतिहासिक संदर्भ हमें यह समझने में मदद करता है कि साहित्य का विकास एक रैखिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह हमेशा सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी बदलावों से प्रभावित होता रहा है। यह प्रवृत्ति डिजिटल युग में भी जारी है, जहाँ

कृत्रिम मेधा नए माध्यमों और विधाओं को जन्म दे रही है। आधुनिक काल में प्रौद्योगिकी के प्रभाव की अगली कड़ी डिजिटल क्रांति के रूप में सामने आई है। इस क्रांति ने हिंदी साहित्य की अभिव्यक्ति, पहुँच और पाठक संख्या को एक नया आयाम दिया है। जहाँ पहले साहित्य मुद्रित पृष्ठों तक सीमित था, वहीं अब यह स्मार्टफोन की स्क्रीन, टैबलेट, वेबसाइट और सोशल मीडिया जैसे अनेक माध्यमों से जीवंत हो रहा है।[6]

डिजिटल माध्यमों के उदय ने हिंदी साहित्य के लिए एक नया पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem) तैयार किया है। चिट्ठाकारी (Blogging), ई-पुस्तकें, ऑनलाइन पत्रिकाएँ और साहित्यिक जालस्थल (websites) जैसे माध्यमों ने नवलेखकों को अपनी रचनाएँ सीधे पाठकों तक पहुँचाने का अवसर दिया है। 'प्रतिलिपि', 'कथा कहो', 'कविता कोश', 'गद्य कोश', 'भारत कोश', 'किंडल' और 'गूगल बुक्स' जैसे प्रमुख मंचों ने हिंदी साहित्य के विशाल संग्रह को डिजिटल रूप में उपलब्ध कराया है।[7] डिजिटल युग में हिंदी साहित्य का विकास होता है। डिजिटल मंचों ने लेखक और पाठक के बीच एक सीधा और संवादात्मक संबंध स्थापित किया है, जो पारंपरिक साहित्यिक मंचों में दुर्लभ था। पाठक तुरंत रचनाकार की रचनाओं पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकते हैं, जिससे साहित्य एक गतिशील और जीवंत प्रक्रिया बन जाता है।दुनिया के किसी भी कोने से व्यक्ति अपने पसंदीदा साहित्य को पढ़ सकता है, जिससे हिंदी साहित्य की वैश्विक पहुँच में वृद्धि हुई है।[8]

डिजिटल व्यवस्था में साहित्य केवल पाठन तक सीमित नहीं है। दृश्य (वीडियो) और श्रव्य (ऑडियो) माध्यमों, जैसे यूट्यूब वीडियो और पॉडकास्ट, ने साक्षरता की बाधा को समाप्त कर दिया है। अब साहित्य को सुनने और देखने के रूप में भी आस्वादन किया जा सकता है, जिससे इसका प्रसार उन लोगों तक भी हुआ है जो पढ़ने में सहज नहीं है। यह डिजिटल क्रांति कृत्रिम मेधा के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है। ऑनलाइन माध्यमों पर उपलब्ध विशाल साहित्यिक डेटाबेस (जैसे कि 'कविता कोश' और 'गद्य कोश') एआई मॉडलों को प्रशिक्षित करने के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन हैं। यह एक महत्वपूर्ण कारण-और-प्रभाव संबंध है: डिजिटल क्रांति ने एक ऐसा वातावरण बनाया है जो कृत्रिम मेधा को हिंदी साहित्य में एकीकृत करने के लिए आवश्यक है, जिससे इसके प्रभाव को समझना और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।[9]

कृत्रिम मेधा एक सहयोगी उपकरण के रूप में हिंदी साहित्य के संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र को अधिक कुशल, सुलभ और वैश्विक बना सकती है। इसका प्रभाव केवल लेखन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शैक्षणिक, शोध और विपणन के क्षेत्रों में भी क्रांति ला सकती है।[10] कृत्रिम मेधा अब लेखकों को रचनात्मक प्रक्रिया के विभिन्न चरणों में सहायता प्रदान कर रही है। ए.आई आधारित लेखन उपकरण, जैसे 'ग्रामरली', यह सुनिश्चित करते हैं कि निबंध और लेख व्याकरण और वर्तनी की दृष्टि से त्रुटि-मुक्त हों। ये उपकरण लेखन शैली में सुधार के सुझाव भी देते हैं। ए.आई पाठ सारांश उपकरण बडे लेखों या किताबों के मुख्य बिंदुओं को समझने में समय बचाने में मदद करते हैं।[11] जनटिक ए.आई की प्रगति ने अनुवाद की सटीकता को काफी बढ़ा दिया है। हिंदी भाषा की पुस्तकों को स्कैन करके अत्यंत कम समय में अन्य भाषाओं की अध्ययन सामग्री को हिन्दी में उपलब्ध कराएगा, जिससे उन विषयों में सामग्री की कमी दूर होगी जहाँ इसकी आवश्यकता है।[12]

साहित्यिक शोध में कृत्रिम मेधा का उपयोग डेटाबेस निर्माण, विश्लेषण और प्रबंधन में एक नया अध्याय जोड़ रहा है। ए.आई का उपयोग साहित्यिक कृतियों के संरक्षण में किया जा सकता है, जिससे ये कृतियाँ डिजिटल रूप में सुरक्षित रह सकें। भावना विश्लेषण (Sentiment Analysis) जैसे उपकरण किसी रचना में सकारात्मक, नकारात्मक या तटस्थ भावनाओं की पहचान कर सकते है।यह साहित्यिक आलोचना में नए आयाम खोल सकता है।'ज़ोटेरो' जैसे उपकरण स्वचालित रूप से शोध के लिए उपयोग किए गए संदर्भों का पता लगाते हैं और एक ग्रंथसूची तैयार करते हैं, जिससे शोधकर्ताओं का बहुत समय बचता है। प्रकाशन उद्योग में ए.आई. का उपयोग सामग्री के प्रसार और विपणन को अधिक प्रभावी बना सकता है।[13] ए.आई आधारित एसई.ओ (SearchEngine Optimization) उपकरण उन खोज शब्दों की पहचान कर सकते हैं जो सामग्री की पहुँच और दृश्यता को बेहतर बनाने की सबसे अधिक संभावना रखते हैं। ए.आई. संचालित उपकरण हिंदी भाषी क्षेत्रों में उपभोक्ताओं के रुझानों और पसंद-नपसंद का विश्लेषण कर सकते हैं, जिससे प्रकाशक और लेखक अपनी सामग्री के लिए अधिक कारगर रणनीतियाँ तैयार कर सकते।जहाँ एक ओर कृत्रिम मेधा हिंदी साहित्य के लिए अनेक संभावनाएँ प्रस्तुत करती है, वहीं दूसरी ओर यह कई गंभीर चुनौतियों और अनसुलझे प्रश्नों को भी जन्म देती है।[14]

कृत्रिम मेधा का सबसे बड़ा खतरा मानवीय रचनात्मकता और मौलिकता पर पड़ने वाला प्रभाव है। कई विचारकों का मानना है कि ए.आई केवल एक उच्च

तकनीकी नकलबाजी है, जो मानव मन की बराबरी नहीं कर सकती। एआई 'प्रायिकता मॉडल' पर काम करता है, जो अपने डेटाबेस में मौजूद सामग्री से सबसे संभावित चीज लिखता है। इसके विपरीत, मानवीय दिमाग न्यूनतम सूचना पर काम करता है और भावनाओं, अंतर्ज्ञान और विवेक को भी समेटता है, जिन्हें रचनात्मकता से अलग नहीं किया जा सकता। ए.आई पर अत्यधिक निर्भरता से हमारी सोचने की शक्ति निष्क्रिय हो सकती है, जिससे हमारी मौलिकता और रचनात्मकता कम हो जाएगी।[15] एक बड़ा खतरा यह भी है कि ए.आई मनुष्य को केवल एक मशीन में बदल सकता है, जो केवल काम करे और जीवन के लालित्य और भावनाओं को अनदेखा कर।

ए.आई –जनित सामग्री का कॉपिराइट और मालिकाना हक एक जटिल कानूनी मुद्दा है। विश्व स्तर पर इस बात पर बहस चल रही है कि ए.आई से जमरेच किए गए कॉन्टेंट का कानूनी स्वामित्व किसके पास होगा – क्या यह डेवलपर, उपयोगकर्ता, या ए.आई स्वयं का होगा ? विभिन्न देशों में इस पर अलग-अलग कानूनी दृष्टिकोण हैं। उदाहरण के लिए कॉपीराइट केवल तभी दिया जाता है जब उसमें पर्याप्त मानवीय रचनात्मकता हो। कंप्यूटर-जनित कृतियों के लिए मानवीय लेखक के बिना भी कॉपीराइट की अनुमति देता है, लेकिन यह प्रावधान कानूनी अस्पष्टताओं के कारण शायद ही कभी लागू होता है।[16] कुछ मामलों में यह स्वीकार किया है कि एआई सॉफ्टवेयर की सहायता से बनाई गई कलाकृति को कॉपीराइट कानून के तहत संरक्षित किया जा सकता है, बशर्ते उसमें मौलिकता और मानव सर्जक का बौद्धिक योगदान मौजूद हो।यह कानूनी अस्पष्टता हिंदी लेखकों के लिए एक बड़ा जोखिम है, क्योंकि उनकी सामग्री का उपयोग बिना अनुमति के ए.आई.मॉडलों को प्रशिक्षण करने केलिए किया जा सकता, जिससे साहित्यिक चोरी की संभावना बढ़ जाती है।

ए.आई. मॉडल को इंसानों द्वारा बनाए गए डेटा पर प्रशिक्षित किया जाता है, जिससे वे मानवीय पूर्वाग्रहों (biases) को अवशोषित कर सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप अनुचित या भेदभावपूर्ण परिणाम मिल सकते हैं, जो विशेष रूप से भारत जैसे विविध भाषाई और सांस्कृतिक संदर्भ वाले देश में एक महत्वपूर्ण बाधा है।[16] इसके अतिरिक्त, ए.आई द्वारा लिए गए नैतिक निर्णयों की जवाबदेही का प्रश्न भी अनुत्तरित है, क्या ए.आई प्रणाली स्वयं, उसका निर्माता या उसका उपयोगकर्ता जवाबदेह होगा? कृत्रिम मेधा के उदय पर हिंदी साहित्य जगत में एकमत नहीं है, बल्कि इस पर मिली-जुली प्रतिक्रियाएँ देखने को मिलती हैं। वरिष्ठ लेखक और पत्रकार मृणाल पांडे, गिरिराज किशोर, और रवींद्रनाथ श्रीवास्तव के ए.आई पर विशिष्ट विचारों का उल्लेख उपलब्ध सामग्री में नहीं है।[17] हालाँकि, उनके लेखन और दृष्टिकोण का अध्ययन यह दर्शाता है कि वे मानवीय मूल्यों, सामाजिक यथार्थ और साहित्यिक सिद्धांतों को महत्व देते थे, जो ए.आई. के यांत्रिक दृष्टिकोण के विपरीत है। उदयप्रकाश जैसे कुछ लेखकों ने इस बहस को एक नए दार्शनिक आयाम पर ले जाकर खड़ा कर दिया है। उनका मानना है कि वास्तविक संकट ए.आई. (Artificial Intelligence) नहीं, बल्कि 'प्राकृतिक मेधा' (Natural Intelligence) है, जो विनाशकारी महत्त्वाकांक्षाओं और हिंसक प्रवृत्तियों से प्रेरित है। उनका यह दृष्टिकोण तकनीकी बहस को मानवता के नैतिक और आध्यात्मिक संकट की ओर मोड़ता है। उनके अनुसार, एआई को एक दर्पण के रूप में देखा जाना चाहिए जो मानव मन की समस्याओं को दर्शाता है, न कि एक स्वतंत्र खतरे के रूप में।[18]

डॉ.सत्यवान सौरभ जैसे अन्य विचारक कृत्रिम मेधा के विवेकपूर्ण उपयोग का आह्वान करते हैं। उनका कहना है कि यदि कोई कवि केवल ए.आई. से कविता बनवा रहा है या कोई छात्र केवल ए.आई. से उत्तर लिख रहा है, तो यह बौद्धिक आत्मसमर्पण है। उनका तर्क है कि मशीनें केवल समर्थन दे सकती हैं, आत्मा नहीं। शब्दों को सजाना एआई कर सकती है, पर भावनाओं को महसूस करना केवल मनुष्य का कार्य है। यह चिंतन दर्शाता है कि हमें ए.आई पर अत्यधिक निर्भरता से बचते हुए अपनी सोचने की आदत, मौलिकता और रचनात्मकता को जीवित रखना होगा। यह द्वंद्व मानव और मशीन के बीच के मूलभूत अंतर को रेखांकित करता है। ए.आई. केवल डेटा और एल्गोरिदथम के आधार पर कार्य करता है, जबकि मनुष्य की रचनात्मकता उसके अनुभव, अंतर्ज्ञान, भावनाओं और व्यक्तिगत पहचान से जुड़ी होती है।[19]

कृत्रिम मेधा का आगमन हिंदी साहित्य के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ है, जो इसकी प्रगति को अपरिहार्य रूप से प्रभावित करेगा। यह तकनीक केवल एक सहायक उपकरण नहीं है, बल्कि एक ऐसा बल है जो लेखन, शोध, प्रकाशन और शिक्षण के संपूर्ण पारंपरिक स्वरूप को बदल रहा है। यह स्पष्ट है कि इसका प्रभाव केवल तकनीकी नहीं, बल्कि रचनात्मक, कानूनी और नैतिक भी होगा।[20]

भविष्य में कृत्रिम मेधा से अधिकतम लाभ प्राप्त करने और इसके नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए एक

संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता है।[21] यह ए.आई. को एक सहायक उपकरण के रूप में स्वीकार करने में निहित है, न कि मानव-रचित साहित्य के प्रतिस्थापन के रूप में। भविष्य की दिशा के लिए निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है: लेखकों, शोधकर्ताओं और शिक्षकों को ए.आई. का उपयोग अपनी दक्षता बढ़ाने और दोहराव वाले कार्यों को स्वचालित करने के लिए करना चाहिए, ताकि वे अपनी रचनात्मक और वैचारिक ऊर्जा को अधिक महत्वपूर्ण कार्यों पर केंद्रित कर सकें। बौद्धिक संपदा अधिकारों की सुरक्षा के लिए एक मजबूत कानूनी ढाँचा स्थापित करना महत्वपूर्ण है। ए.आई के प्रशिक्षण डेटा में हिंदी सामग्री के उपयोग और उसके आउटपुट के कॉपीराइट पर स्पष्ट दिशा-निर्देश की आवश्यकता है। भारत की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता को ध्यान में रखते हुए, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के लिए स्वदेशी और नैतिक एआई मॉडलों पर शोध को बढ़ावा देना आवश्यक है।[22] यह न केवल भारत की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करेगा, बल्कि एआई में निहित पूर्वाग्रहों को भी कम करेगा।अंततः, प्रौद्योगिकी का लक्ष्य मानव सभ्यता को बेहतर बनाना है। भविष्य मानव और मशीन के बीच एक सहयोगात्मक साझेदारी में निहित है, जहाँ मशीनें दक्षता और पहुँच प्रदान करती हैं, और मनुष्य कल्पना, भावना और मौलिकता की गहराई जोड़ते हैं। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हम तकनीक के हाथ में न रहकर, तकनीक को अपने हाथ में रखें।

संक्षेप में, कृत्रिम मेधा हिंदी साहित्य के लिए एक ऐसी चुनौती और अवसर है जिसका सामना करने के लिए सामूहिक और विचारशील प्रयास की आवश्यकता है। यह हिंदी साहित्य के लिए एक नए युग का सूत्रपात कर सकती है, बशर्ते हम इसकी शक्ति को समझें, इसकी सीमाओं को स्वीकार करें, और इसका उपयोग मानवीय मूल्यों और रचनात्मकता को पोषित करने के लिए करें।

संदर्भ सूची

1. The Oxford Dictionary of Phrase and Fable. (n.d.). Artificial Intelligence. Retrieved from https://www.oxfordreference.com/display/10.1093/oi/authority.20110803095426960
2. Oxford Learners Dictionaries. (n.d.). Artificial Intelligence. Retrieved from https://www.oxfordlearnersdictionaries.com/us/definition/english/artificial-intelligence
3. Quora. (n.d.). हिंदी साहित्य के इतिहास को कितने भागों में बांटा गया है और उनके नाम क्या हैं?. Retrieved from https://hi.quora.com/%
4. Drishti IAS. (n.d.). Can Hindi literature be called global literature?. Retrieved from https://www.drishtiias.com/hindi/blog/Can%20Hindi%20literature%20be%20called%20global%20literature
5. Drishti IAS. (n.d.). Can Hindi literature be called global literature?. Retrieved from https://www.drishtiias.com/hindi/blog/Can%20Hindi%20literature%20be%20called%20global%20literature
6. Shaip. (n.d.). What Is NLP? How It Works? Benefits & Challenges. Examples. Retrieved from https://hi.shaip.com/blog/what-is-nlp-how-it-works-benefits-challenges-examples/
7. Inspirajournals. (n.d.). Hindi Bhasha mein Kritrim Buddhimatta ka Upyog. Retrieved from https://www.inspirajournals.com/uploads/Issues/1992155346.pdf
8. Jansatta. (2025). Artificial Intelligence (AI) and the future of science. Retrieved from https://www.jansatta.com/national/artificial-intelligence-ai-biology-genomics-drug-discovery-education-ethics/4111978/
9. MyStudyLife. (n.d.). Best AI tools for students. Retrieved from https://mystudylife.com/
10. SEO.com. (n.d.). AI SEO Tools. Retrieved from https://www.seo.com/hi/tools/ai/
Inspirajournals. (n.d.). Hindi Bhasha mein Kritrim Buddhimatta ka Upyog. Retrieved from https://www.inspirajournals.com/uploads/Issues/1992155346.pdf
11. Enagrik. (n.d.). Artificial Intelligence: Possibilities, Limitations, and Challenges. Retrieved from https://enagrik.com/kartaraima-maedhaa-sanbhaavanaaen-saimaaen-aura-caunaautaiyaan
12. YouTube. (n.d.). AI and literary creativity: A discussion. Retrieved from https://www.youtube.com/watch?v=QcmaClfP_qQ

एम.ए हिंदी

हिंदी विभाग, संत थोमस महाविद्यालय, पाला

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का पर्दाफाश - राजेश जैन की 'प्रोग्रामिंग' कहानी के विशेष संदर्भ में

मिनी. एन

कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी आर्टिफ़िशियल इन्टेलिजन्स के अति जटिल समय के साथ हम गुजर रहा है। ऐसे समय में विकास को गति देने और लोगों को बेहतर सुख-सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए हरेक क्षेत्र में अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग किया जा रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता भी ऐसी ही एक अत्याधुनिक तकनीक है जिसका प्रयोग वर्तमान समय में हर क्षेत्रों में अपनी मजबूती हासिल कर आगे बढ़ रहा है। सरल शब्दों में कहे तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी विज्ञान की एक शाखा है जिसके अंतर्गत मशीनें ही मानव की बुद्धिमत्ता के अनुसार व्यवहार करता है। अर्थात मशीनों जब अपने समय और संदर्भ के विश्लेषण करके कोई निर्णय लेती है, तो मशीन की इस अवस्था को 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' कहा जाता है।

साँसों में बसी हमारी हिंदी भाषा, हमारी हर भावनाओं की अभिव्यक्ति करनेवाली भाषा भी है। हिंदी भाषा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को अपने साथ जोड़कर आगे बढ़ रही है। समाज के साथ साहित्य के बदलाव को व्यक्त करने में हिंदी सक्षम भाषा है। अत: आधुनिक तकनीकी समय में भी हिंदी मजबूती के साथ उभर कर तो आई है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के इस समय में भाषा को समृद्ध करने में सर्वाधिक योगदान साहित्यकारों का रहा है। अत: समाज के अनुसार साहित्य की पुष्टि करने के लिए साहित्यकार अपनी अहम भूमिका निभाती है। ऐसे साहित्यकारों में प्रमुख है राजेश जैन। जिन्होंने विज्ञान कथाओं के लिए विश्व प्रसिद्ध लेखकों जैसे एच.जी वेल्स और जे.क्लार्क तथा प्रौद्योगिकी और कॉर्परेट पृष्ठभूमि पर लोकप्रिय एवं प्रामाणिक बेस्टसेलर लिखनेवालों में आर्थर हेली आदि से प्रेरणा पाकर हिंदी साहित्य क्षेत्र को विज्ञान कथाओं की पृष्ठभूमि बनायी।

हिंदी साहित्य में नए प्रयोगों तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी जैसे नीरस विषय को साहित्य में शब्दबद्ध करनेवाला प्रमुख लेखक है आर.के जैन उर्फ राजेश जैन। उन्होंने अपनी कलम से हिंदी साहित्य क्षेत्र को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को एक साथ जोड़ने का प्रयत्न किया। उसके बारे में जैसे 'राजेश जैन – श्रेष्ठ कहानियाँ' नामक कहानी संग्रह के 'पुस्तक परिचय' पर लिखा गया है कि - "विज्ञान कथालेखक राजेश जैन ने इसी संभावना को दोहन करते हुए हिंदी में विज्ञान और प्रोद्योगिकी जैसे शुष्क और नीरस विषय में भी जान डाल दी है और हिंदी में विज्ञान गल्प के विचार स्वप्न में पंख लगा उसे जीवंत कर दिया है।"[1]

राजेश जैन के कहानी संग्रह का नाम है - 'राजेश जैन – श्रेष्ठ कहानियाँ'। इसमें कुल 27 कहानियां है। इससे ली गयी एक छोटी सी कहानी है 'प्रोग्रामिंग'। 'विज्ञान', 'प्रौद्योगिकी', और 'पर्यावरण' नाम से तीन खंडों में बाँटकर उन्होंने इस कहानी संग्रह को प्रस्तुत किया है। भविष्य के गंतव्य की ओर इशारा करनेवाली सारी कहानियां वर्तमान युग में, तकनीकी युग में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में भी 'काल्पनिक' लगे, किन्तु भविष्य में यह 'यथार्थ' भी हो सकता हैं। इस कहानी संग्रह को पढ़कर हम निस्संदेह कह सकते हैं कि राजेश जैन ने अपने कहानी संग्रह, 'राजेश जैन – श्रेष्ठ कहानियाँ' में टाइम मशीन में सवार होकर भविष्य के विज्ञान आधारित जीवन शैली को साहित्य में खींचने का प्रयास किया है।

हिंदी साहित्य क्षेत्र में विशिष्ट कथा लेखन एवं अपनी अलग लेखन शैली से साहित्य जगत में अपना स्थान हासिल करनेवाले राजेश जैन की महत्वपूर्ण कहानी है 'प्रोग्रामिंग'। कहानी की शुरुअत होती है 'इक्कीसवीं सदी के संध्याकाल का एक भारतीय महानगर से, जिसकी सम्पूर्ण परिवेश 'इंटरनेट' की अदृश्य एवं सूक्ष्म इलेक्ट्रॉनिक तरंगों कैसे गसे हुए जल में बंधा पड़ा है'। कहानी के मुख्य पात्र के रूप में

आते है विकास और विभा नामक पति-पत्नी। एक ही फ्लाट में रहने वाले दोनों इंजीनियर है। विभा जेनेटिक इंजीनियरिंग में और विकास ऐरोनोटिकाल इंजीनियरिंग में स्नातक है। विकास विमानों के पुर्जे बनाने की फैक्ट्री डाल रखी है, जहां मानव नहीं रोबोट कम करते है। अत: विकास हफ्ते में एकाध बार वहाँ जाकर प्रगति का जायजा लेता है। फैक्ट्री का सारा दृश्य और वहाँ के आँकड़े उसे घर बैठे प्राप्त हो जाते हैं। कहानी में ऐसे परिवेश से लेखक सूचना देता है कि लोग अपनी 'हार्ड प्लास्टिक' की दीवारों से बने हुए अपार्टमेंट में बैठे पूरा कारोबार कर रहे है। वर्तमान युग में हर जगह भीड़-भाड़ है, मुख्यत: सड़कों पर। लेकिन 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' के समय में स्थितियां उल्टा हो रही है। इंटरनेट की दुनिया में लोगों को सड़कों पर चलने या जाने की जरूरत बिल्कुल नहीं होते हैं। कहानी में लेखक कहता है – "सड़कों पर बाहर तभी निकलते हैं जब पर्यटन की इच्छा हो या बदलाव के लिए वाकई किसी से रू-ब-रू मिलना हो, अन्यथा टी.वी. साइज़ के 'पावडा' (पर्सनल औडियो विजुअल डिवाइस एपरेटस) घर-घर में कल्पवृक्ष की भाँति लगे हैं और अपने कमाए हुए 'मेन मिनद्ब' खर्च करके लोग अपने-अपने 'पावडा' से अपना-अपना काम कर रहे हैं – फैक्ट्री हो या ऑफिस .... सबका कंट्रोल 'पावडा' की मदद से घर में ही हो जाता है, हाँ कभी-कभार संकटकाल में जाना पड़ता है तो इमारतों के तलघर में खड़ी स्वचलित कारों से प्रोग्रामिंग करके बगैर ड्राइविंग तनाव के बिना वे वहाँ कुछ ही क्षणों में पहुँच जाते हैं"[2]। कहानी में राजेश जी कहते हैं भविष्य की ज़िंदगी 'प्रोग्रामिंग' यानी 'मेन मिनद्ब' के आधार पर होगी। मानव के पूरे तंत्र में जो जितना योगदान करता है, उसके अनुकूल उसे रुपयों की तरह 'मेन मिनद्ब' यानी पैसा कमाने की इच्छा का भुगतान होता हैं। इस तरह के भविष्य में लोग जब-तब अपने 'मेन-मिनद्ब' का बैलन्स देखकर, उसे बढ़ाने के लिए काम करते हैं। सिर्फ 'मेन मिनद्ब' के बैलन्स को बढ़ाने से आगे की ज़िंदगी की प्रोग्रामिंग तय कर सकते हैं। अत: यही एक प्रेरणा है जो लोगों को व्यस्त रखती है तथा काम करने के लिए दबाव डालती हैं।

मशीनों की दुनिया में साहित्य के भविष्य की ओर भी इशारा करने में साहित्यकार होने के नाते राजेश जी बिल्कुल भूल नहीं की है। विकास को केंद्र में रखकर राजेश जी भविष्य की साहित्य की स्थिति के सकारात्मक पक्ष का भी उल्लेख किया है। कहानी में विकास एक दिन की तीन-चार खंटों में अपनी फैक्ट्री संबंधी कामों को यथासंभव निपटकर अपनी रुचि के अनुसार साहित्यिक पठन-पाठन में लगता हैं। जैसे "साहित्यिक पठन-पाठन में 'पावडा' के माध्यम से वह शहर की केन्द्रीय लाइब्रेरी से जुड़ जाता है। स्क्रीन पर ही किताबों की सूची आ जाती और उनमें से चुनाव करके वह वांछित पुस्तक के पृष्ठों को स्क्रीन पर ही पलटने लगता हैं। उसके पिता पिछली सदी के प्रतिष्ठित कवि थे – उनकी रचनाओं को उसने 'पावडा' के 'केनो फाइल सिस्टम' में स्टोर कर रखा है और जब-तब उन कविताओं को पढ़ता रहता है – उसकी इच्छा है कि पिताजी की रचनाओं को 'इंटरनेट' के सेंट्रल पब्लिशिंग पूल में रेजिस्टर करवा दे ताकि और लोग भी पढ़ सकें"[3]। इस तरह कृत्रिम मेधा और साहित्य के इतिहास का संबंध कहानी में देखने को मिलता हैं।

व्यक्ति और परिवार का खुला चित्रण कहानी की एक और खूबी है। विकास और विभा पति-पत्नी है अत: दोनों के बीच में युद्ध और शीतयुद्ध होना बिल्कुल स्वाभाविक है। कहानी में जब विकास अपनी 'पावडा' लेकर साहित्यिक दुनिया में घुस जाता हैं विभा पति से शिकायत करती है कि उन दोनों की जॉइन्ट एम.एम यानी 'मेन मिनद्ब' में काफी खर्च विकास की रिसर्च पर हो रहा हैं। अत: वह दूसरों के लिए बच्चों का डिजाइन करके, पैसा कमाई अपने लिए अलग 'एम.एम' अकाउंट खुलने केलिए एवं अपने लिए एक 'पावडा' खरीदने की इच्छा प्रकट करती है। इससे दोनों के बीच शीतयुद्ध पैदा होता है। बाद में विभा अपने दोनों आग्रहों की पूर्ति करती है। स्त्री की क्षमता का उल्लेख करने में भी राजेश जी ने अपनी छोटी कहानी का उपयोग किया हैं।

कहानी में, कृत्रिम मेधा के परिवेश में पति-पत्नी एक साथ, एक ही फ्लैट में रहती है। फिर भी दोनों अपनी-अपनी दुनिया में जी रहे है। अपने घर के मुख्य द्वार पर 'कॉमन पासकोड' है, और अपने-अपने कमरे में चले जाते है। विभा अपने कमरे के द्वार पर 'अपनी पासकोड़' रख लिया है, ताकि विकास वहाँ न जा सके। तकनीकी युग में भी, 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' की विशाल दुनिया में भी पति पत्नी के सामने हार मानती है तथा बाद में इंटरनेट की डिरेक्टरी से देह व्यापार के सेक्टर से विभा के शक्ल से मिलती – जुलती

एक 'सेक्स डॉल' का ऑर्डर किया। कहानी में कहता है –"रबर की वह औरत सिर्फ पुतला नहीं थी, उसके अंदर विप से नियंत्रित प्रणाली थी – जिसकी प्रोग्रामिंग करके विकास मनचाहे हाव-भाव उस औरत में पैदा कर सकता था और कृत्रिम तौर पर इच्छाओं की वांछित पूर्ति भी। 'बुद्धिमान इमारतों' की तरह 'बुद्धिमान औरतें' भी देह व्यापार के सेक्टर में उपलबद्ध थीं। 'आर्टिफिशल इन्टेलिजन्स' वाली इमारतों का तापमान और रोशनी स्वत: मौसम के अनुसार नियंत्रित होता था, उसी तरह कृत्रिम बुद्धिमत्ता वाले व्यक्ति भी क्लोन पद्धति के अंतर्गत बनाए जा सकते थे, उसकी मांग भी बहुत थी"4। दिनों के उपरांत विकास को ज्ञात होता है कि विभा के रूम में भी एक 'पुरुष क्लोन' है। विकास और विभा अपने समय के अनुसार चलनेवाले लोग है अत: अपने घर में "दोनों अपने-अपने काम में लगे रहते। जब बाहर जाना होता, नहीं तो अपने-अपने 'पावडा' से अपनी जरूरतें पूरी करते, खाने के लिए मनपसंद मेनू की प्रोग्रामिंग करके रख देते ......थोड़ी देर में खाना बन जाता और बगैर एक-दूसरे की परवाह किये वे अपना पेट भर लेते हैं।"[5] यहां मानवीय संवेदना की क्षति का चित्रण करके भविष्य के मानव मन का खुला चित्रण स्पष्ट किया है।

कहानी के अंत में विभा और विकास अपने फ्लैट में जाते वक्त दोनों क्लोन पास-पास खड़े फुसफुसा रहे थे। 'स्त्री क्लोन' कहती है – "अरे तुम कितने अच्छे हो ....वरना उस विकास की हरकतों से तो मैं तंग या गई थी ....मेरी अपनी कोई मर्जी नहीं.... । इसलिए 'पास कोड' चोरी करके तुम्हारे पास आ गयी......"[6]। 'पुरुष क्लोन' जवाब देता है –"मैं भी......कब से मौके की तलाश में था कि तुम्हारे पास आ सकूँ। यह विभा भी कम दुष्ट नहीं...... मुझ पर हेकड़ी' जताती है ...... तंग आ गया हूँ उससे .... ।"[7]। ये दृश्य देखकर विभा और विकास के बीच 'रहस्यमयी अज्ञात प्रोग्रामिंग' माने प्यार हो गया।

कहानी के ज़रिए राजेश जैन ने दो व्यक्ति को केंद्र में रखकर कमरा, परिवार, समाज आदि की विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला हैं। 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' की दुनिया में परिवार के सदस्यों के बीच किस तरह की बातचीत होगी, उनकी भाषा कैसी होगी इन सब की झलक कहनी में देखने को मिलती है। भविष्य का खुला चित्रण 'प्रोग्रामिंग' कहानी में खींचकर रखा है।

निष्कर्ष में इतना कहा जा सकता है कि समाज एवं समय बदलने के साथ-साथ मानव जीवन और ज़िंदगी बदल रही है। लेकिन मानव मन की संवेदनाएं पूरा ही पूरा मिटाना तथा मानव के स्थान मशीनें हासिल कर रखना असंभव हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. राजेश जैन -श्रेष्ठ कहानियाँ – राजेश जैन, नैशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, प्र.सं-2019
2. वहीं, 'पुस्तक परिचय' फ्लाप से
3. वहीं, पृ – 13
4. वहीं, पृ – 14
5. वहीं, पृ – 17
6. वहीं, पृ – 17
7. वहीं, पृ – 18
8. वहीं, पृ – 18
9. हिंदी भाषा संवेदना एवं अनुप्रयोग, संपादक- वी.जी गोपालकृष्णन, दक्षिण भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन-2024, तृशूर, केरल

शोधार्थी, हिंदी विभाग
राजकीय महिला महाविद्यालय, तिरुवन्तपुरम
Ph:8086146689

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी की विविध गतिविधियाँ

हिंदी साहित्य की वृद्धि और कृत्रिम मेधा

मात्यूस के.एस.

लोगों में एक बड़ी शंका यह है कि क्या कृत्रिम बुद्धि हमारे रोजगार और अवसर छीन लेगा और आगे चलकर इंसानों पर शासन करेगा। ए.आई. की सहायता से संचालित रोबोट साधारण व्यक्तियों से ज्यादा सक्षम सिध्द हो रहा है। विज्ञान प्रतिदिन प्रगति के पड़ाव चल रही है तथा ए.आई. अथवा कृत्रिम बुद्धि भी प्रगतिशील है।

चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में देखें तो वहां बड़ा बदलाव ला रही है ए.आई.। पहले मुश्किल ओप्रेशन करने के लिए दस पंद्रह डाक्टरों के दल की जरूरत थी वो अब ए.आई. की सहायता से संचालित रोबोट करने लगे हैं। ए.आई. या कृत्रिम बुद्धि स्वयं सोचकर इलाज करने लगी है। इनकी प्रणाली में ढेर सारा ज्ञान संचित- संग्रहीत हैं। एक तरफ तो यह डॉक्टरों के लिए मददगार है पर फिर भी इन पर निगरानी व नियंत्रण होना आवश्यक है।

पहला है अनुवाद कार्य का क्षेत्र। अनुवाद वह वजह है जिसके माध्यम से हिंदी साहित्यकारों की रचनाओं को व्यापक पहुँच मिलेगी। अनुवाद दो भाषाओं के बीच सेतु का काम करता है और आज ए.आई. द्वारा अनुवाद कार्य तेज़तर होता जा रहा है। हालांकि उसके द्वारा अनूदित सामग्री की जांच करना तो जरूरी है पर फिर भी हम कह सकते है कि परंपरागत रीति-ढंग से जो अनुवाद कार्य होता था उसकी तुलना में कम समय ही लगता है। इस कारण से प्रतिदिन ज्यादा से ज्यादा रचनाएँ अनूदित होती जा रही है। एक समय ऐसा था जब गैर यूरोपीय भाषाएँ तथा अंग्रेज़ीतर भाषाओं में हिंदी की साहित्यिक रचनाओं का अनुवाद बहुत कम मात्रा में होता था चूँकि दोनों भाषाओं अर्थात् स्रोत एवं लक्ष्य भाषा पर अच्छा अधिकार रखनेवालों की कमी थी। रूसी, स्पेनी, पुर्तगाली, हीब्रू, अरबी, तुर्की, मिस्रि भाषा और हिंदी जाननेवाले कम ही थे। उदाहरण के लिए रूसी साहित्यकार आन्तोन चेखोव की रचनाएँ अंग्रेजी में अनूदित होकर फिर हिंदी में अनूदित की जाती है। इस तरह दो बार अनुवाद करने से जरूर उसका भाव-प्रभाव कम हो जाता है, घट जाता है। लेकिन आज इस समस्या का हल निकल रहा है। स्पेनी भाषा में प्रवीण न होते हुए भी प्रेमचंद के गोदान उपन्यास का औसतन अनुवाद तो निश्चय ही संभव है। एक साथ उसको चीनी, जापानी, पुर्तगाली भाषाओं में बदल सकते हैं। इस तरह इस जटिल एवं श्रमसाध्य कार्य को तेजतर तथा सरल बनाने में कृत्रिम बुद्धि महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है जिससे हिंदी साहित्य की रचनाएँ दुनिया के कोने-कोने तक पहुँच पायेंगे। 'गोदान' के होरी से आस्ट्रेलिया के बच्चे भी परिचित हो जायेंगे तो 'पूस की रात' कहानी का हल्कू ब्राजील के छात्रों को भी सुपरिचित बनेगा।

एक अगला क्षेत्र है शोध कार्य की गुणवत्ता बढ़ाने में कृत्रिम बुद्धि का योगदान। चोरी को ढूंढने तथा मौलिकता को बनाए रखने के लिए ए.आई मदद करेगी। आलेखों की मौलिकता की जाँच-पड़ताल करने में भी ए. आई. हर दिन सक्षम होता जा रहा है। इससे शोध कार्य और आलेख बहतर होते जायेंगे। एक विषय पर किए गए पूर्व-प्रकाशित शोध ग्रन्थ भी आसानी से ए.आई. उपलब्ध कर सकेगा।

अगला क्षेत्र है देवनागरी लिपि को ज्यादा वैज्ञानिक बनाने में इसका योगदान। कई भाषाओं की तुलना में तो देवनागरी लिपि वैज्ञानिक सिध्द हुई है। लेकिन उसको भविष्य में कृत्रिम बुद्धि के सुझावों से ज्यादा परिष्कृत एवं विकसित कर सकेगा। 'ऑ ' जैसे नए स्वर अंग्रेजी से हिंदी में आए हैं तो नुकते का प्रयोग उर्दू ,अरबी भाषा के संपर्क से आया है जैसे क़, ख़, ग़, ज़, फ़ आदि ।[4] इस तरह अन्य भाषाओं से आनेवाली ध्वनियों, स्वरों और व्यंजनों को देवनागरी में व्यक्त करने के लिए कोई सुझाव आने वाले समय में कृत्रिम बुद्धि लायेगी।

अगला क्षेत्र है नए शब्द गढ़ने का कार्य जिसके लिए अब तक भारत सरकार के वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली आयोग काम कर रही थी। अब आनेवाले दिनों में ए.आई. अपने आप शब्दों को गढ़ लेगी। उपयुक्त एवं अनुकूल शब्दों को स्वीकृत किया जायेगा। शब्द गढ़ने की प्रक्रिया जटिल

एवं श्रमसाध्य थी आज तक, लेकिन स्वयं सोचकर परिणाम प्रस्तुत करने वाले इन ए. आई. टूल्स के सुझावों को नजरअंदाज करना मुश्किल होगा।

हिंदी की वर्तमान बोलियों को विकसित करने में ए. आई. क्रान्ति ला सकती है। खडी बोली को मान्यता प्राप्त होने के बाद वही मानक हिंदी बनी और हमारे राज-काज और शिक्षा की भाषा बनी जिसके कारण कई अन्य बोलियों का हर दिन ह्रास होने लगा है। मगही, मैथिली भाषाएँ अस्तित्व के संकट में हैं। ऐसी भाषाओं के व्याकरण, ध्वनि-व्यवस्था लिपि एवं शब्द-संपदा को विकसित करने में कृत्रिम बुद्धि किस सीमा तक उपयोगी रहेगी यह देखना रोचक होगा।

शायद आने वाले भविष्य में हिंदी भाषा के व्याकरण में नए लिंग, वचन और कारक व्यवस्था को स्थापित करेगा ए.आई.। संस्कृत में तीन लिंग है पर हिंदी में दो। नपुंसक लिंग का न होना अगर भविष्य में मुश्किलें खड़ी करे तो ए. आई. व्याकरणिक स्तर पर नए सुझाव अवश्य लायेगी। इस दृष्टि से देखे तो ए.आई. एक भाषा वैज्ञानिक का काम करने लगेगी। आज के समय में थर्ड जेंडर के व्यक्तियों के अधिकार सुनिश्चित किए जा रहे तो इस मुद्दे पर ध्यान अवश्य जा रहा है। नपुंसक लिंग का न होना बाद में हिंदी की एक कमी बन जायेगी।

अगली संभावना यह है कि पृथ्वीराज रासो, हम्मीर रासो जैसे ग्रन्थों पर जो विवाद उनकी प्रामाणिकता पर चल रहा है उसका समाधान निकालने की क्षमता अब ए.आई. में आ सकती है। मुहम्मद गोरी और पृथ्वीराज चौहान की जिंदगी पर आधारित अरबी ,फारसी, तुर्की आदि कई भाषाओं की रचनाओं को तेजी से संकलित करके वस्तुनिष्ठ एवं तर्कसंगत रूप से स्पष्ट कर पायेगा और निष्कर्ष दे पायेगा जिससे ऐसे विवादों को हमेशा के लिए खतम कर देगा। इंसानों के लिए ऐसी बातें सिध्द करने के लिए तो कई साल अवश्य लगेंगे।

अगली बात हैं भाषाओं के शुध्दीकरण की। हिंदी में आए सभी विदेशी शब्दों को उनके उद्भव और स्रोत सहित ढूंढ निकालकर उर्दू-फारसी शब्द भंडारों का हिंदीकरण करना ए.ऐ के लिए संभव हो सकता है। हिंदी भाषा को एक नयी शुध्दि देने में इसका बड़ा योगदान हो पायेगा। कचहरी अथवा न्यायालय में प्रयुक्त उर्दू जबान की या अन्य विदेशी भाषाई शब्दों के स्थान पर हिंदी के या उसके उपभाषाओं या बोलियों में प्रयुक्त लोक-प्रचलित शब्दों और उनके पर्यायों को उपयोग में लाने में ए ऐ काम कर सकती है।

एक अन्य क्षेत्र है लुप्त प्राय एवं अल्पसंख्यक भाषाओं का विकास। हिंदी क्षेत्र में भी ऐसी भाषाएँ है जो आज उपेक्षित हो रही है या राज्य की सरकार की मान्यता प्राप्त नहीं है। ऐसी भाषाओं के व्याकरण, ध्वनि व्यवस्था, लिपि आदि को विकसित करेगी कृत्रिम बुद्धि।

पुरानी हिंदी, अवहट्ठ, अपभ्रंश एवं प्राकृत जैसी भाषाओं पर कार्य करके नए-नए शोध परिणाम भविष्य में ए.आई. लायेगी। उनपर ज्यादा प्रकाश डालने में ए. आई की तेज़ी और बुध्दि काम आयेगी। इस क्षेत्र में जहाँ हम इंसानों को कई साल लगते हैं वही कृत्रिम बुद्धि मिनटों में परिणाम देगी। जरूर यह हिंदी भाषा एवं साहित्य में क्रान्तिकारी परिवर्तन लायेगी।

यह भी हो सकता है कि हमारी सिंधु घाटी सभ्यता की जो गूढ लिपि अब तक समझी न जा सकी, उसको आने वाले समय में कृत्रिम बुद्धि समझ पायेगी। शायद एक दिन ये भी हो सकता हिन्दी साहित्य के आदिकाल की सीमा को भी निर्धारित कर पायेगी। यह सब देखा जाएगा।

एक और बात जो रोचक भी है कि हिंदी के स्वर्गीय साहित्यकारों की जीवन्त या आभासी वीडियो बनाने में ए. आई सक्षम हो गई है। अब प्रेमचंद या निराला जी अपना-ही परिचय देते दिखाई देंगे।

साहित्य लेखन में कृत्रिम बुद्धि के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव स्पष्ट है। एक तरफ तो यह हमारी सृजनशीलता का ह्रास करता है तो दूसरी तरफ सृजनात्मकता बढ़ाती है। उदाहरण के लिए अगर आप एक नोवल / उपन्यास लिखते लिखते बीच में अटक गये हो तो चैटजीपीटी से पूछने पर कथा को आगे बढ़ाने के लिए तेजी से सुझाव देगा जिससे उपन्यास आगे बढ़ेगी। लेकिन यहाँ पर एक बड़ा महत्वपूर्ण सवाल उठता है कि इसमें मौलिकता कहाँ है ? इसको आपका माना जाए या चैट जीपीटी का ?

एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि जो कृत्रिम बुद्धि की है, वह यह है कि संदर्भ सामग्री ढूंढने में वो सक्षम है। किसी भी रचना के एक-दो वाक्यांश लिखने पर ए.आई तुरन्त ढूंढ निकालता है कि उपर्युक्त वाक्य / वाक्यांश कहाँ से ली गई है। इस तरह पता लगाने की क्षमता बहुत ही सराहनीय है। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों, को कृत्रिम बुद्धि की सहायता से नोट्स तथा अन्य पाठ्य सामग्री आसानी से उपलब्ध होगी।

continued to Page 38

हिंदी साहित्य और कृत्रिम बुद्धिमत्ता: प्रगति, चुनौतियाँ और भावी दिशा

आर्द्रा

हिंदी साहित्य का परम्परागत विकास लोक-कथाओं, काव्य, नाटकों, उपन्यास और आधुनिक लघुकथाओं तक फैला है। डिजिटल क्रांति तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आगमन ने साहित्य-शोध और भाषा-प्रयोग दोनों में नई संभावनाएँ खोल दी हैं। नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP), मशीन लर्निंग तथा हाल के वर्षों के बड़े भाषा मॉडल (IIMs) ने भाषाओं के कम्प्यूटेशनल अध्ययन को सक्षम किया है। परन्तु हिंदी जैसी भारतीय भाषाओं के लिए संसाधनों की कमी, बोलियों की विविधता और सांस्कृतिक बारीकियां विशेष चुनौतियाँ पेश करती हैं।

NIP में प्रमुख प्रगति टोकनाइज़ेशन, पार्सिंग, शब्द-संदर्भ-सृजन (word embeddings), RNN/ Transformer आर्किटेक्चर और बड़े-पूर्व-प्रशिक्षित भाषा-मॉडल (जैसे BERT, GPT श्रेणी) से हुई है। Transformer आधारित मॉडलों ने भाषा समझ एवं जनरेशन में नये मानक स्थापित किये। ये तकनीकें हिंदी के लिए तब तक उपयोगी हैं जब तक कि उन्हें उपयुक्त और पर्याप्त दर्जे के हिंदी डेटासेट से प्रशिक्षित या ट्यून न किया जाए।

हिंदी ग्रंथों का डिजिटलीकरण साहित्य के संरक्षण के लिए आवश्यक प्रथम चरण है। आधुनिक OCR तकनीकें (Optical Character Recognition) मुद्रित हिंदी-अक्षरों को डिजिटल टेक्स्ट में बदलने में पहले से बेहतर हैं। परन्तु हस्तलिखित पांडुलिपियाँ, पुराना मुद्रण या अक्षरों की क्षति OCR की सटीकता घटानेवाले प्रमुख कारण हैं। इसलिए प्री-प्रोसेसिंग (छवि-शुद्धिकरण), भाषा-विशिष्ट पोस्ट-प्रोसेसिंग और मानव-समायोजन अभी भी आवश्यक हैं।

भारत जैसे बहुभाषी देश में हिंदी के लिए मशीन अनुवाद का महत्व बड़ा है। बहुभाषीय और Indic-विशिष्ट अनुवाद परियोजनाओं ने अनुवाद गुणवत्ता में सुधार किया है, पर सांस्कृतिक संदर्भ, मुहावरे और भावनात्मक स्वर को बरकरार रखना अभी चुनौती बना हुआ है। क्षेत्रीय बोलियों और डोमेन-विशिष्ट शब्दावलियों हेतु कस्टम ट्रेंनिंग आवश्यक है।

बड़े-भाषा मॉडल (।।Ms) को हिंदी में ट्यून या फाइन-ट्यून करके हिंदी-विशिष्ट उपयोग बनाए गए हैं — जैसे प्रश्नोत्तर, सारांश-निर्माण, रचनात्मक लेखन सहायता और शैली-निमार्ण में प्रयुक्त मॉडल। छोटे-से-मध्यम आकार के हिंदी मॉडल देशी शोध एवं अनुप्रयोगों के लिये लाभप्रद रहे हैं क्योंकि वे कम संसाधन में चलने योग्य और कस्टमाइज़ करने लायक होते हैं।

AI उपकरणों की सहायता से बड़े-पाठसंग्रहों पर थीमैटिक खोज, शैलीगत विश्लेषण, लेखक-परिचय (authorship attribution), प्लॉट/विषय-रुझान और भावनात्मक पैटर्न की पहचान आसान हुई है। इससे साहित्यिक इतिहास, लेखक-शैली का गणितीय विश्लेषण और पाठ-खोज (semantic search) बेहतर हुई है।

भारत में कई सरकारी एवं सामुदायिक पहलें (भाषा प्लेटफॉर्म, ओपन-सोर्स कैटलॉग्स और अकादमिक प्रोजेक्ट्स) हिंदी संसाधन-सृजन को बढ़ावा दे रही हैं। डेटासेट, बेंचमार्क और टूलकिट उपलब्ध कराना शोधार्थियों तथा डेवलपर्स के लिए आधार तैयार कर रहा है। ऐसी पहलों से मॉडल प्रशिक्षण, ओपन बेंचमार्किंग और भाषा-उन्नयन के कार्य आसान हुए हैं।

1. डेटा की कमी और असमानता: आधुनिक, कई डोमेन और बोलियों-समावेशी हिंदी कॉर्पस सीमित है।
2. संस्कृति/भावनात्मक अनुवाद: मॉडल अक्सर

सांस्कृतिक संकेतों और सूक्ष्म भावनाओं का शुद्ध अनुवाद नहीं कर पाते।

3. पुराने एवं हस्तलिखित ग्रंथों की गुणवत्ता: OCR और प्रसंस्करण में कठिनाई रहती है।

4. बायस और नैतिकता: प्रशिक्षण डेटा में निहित पक्षपात मॉडल के आउटपुट में परिलक्षित हो सकता है।

5. इन्फ्रास्ट्रक्चरल तथा आर्थिक बाधाएँ: बड़े मॉडल प्रशिक्षण और परिनियोजन के लिए संसाधन सीमाएँ हैं।

हिंदी-विशिष्ट छोटे व मध्यम आकार के भाषा-आधारित मॉडल विकसित हुए हैं जिनका उपयोग अनुवाद, सारांश, प्रश्नोत्तर व रचनात्मक लेखन में किया जा रहा है।

Indic भाषाओं के लिए समर्पित अनुवाद परियोजनाएँ और समुदाय संचालित डेटासेट (open-source) शोध को सुलभ कर रहे हैं।

डिजिटल पुस्तकालय और राष्ट्रीय मंच हिंदी ग्रंथों की उपलब्धता बढ़ा रहे हैं, जिससे शोध एवं शिक्षा दोनों को लाभ मिल रहा है।

सिफारिशें (Recommendations) - विस्तृत और विविध कॉर्पस निर्माण — लोक-कथा, बोलियाँ, पुराना साहित्य और आधुनिक लेखन का समावेश करें , हाइब्रिड दृष्टिकोण अपनाएँ — नियम-आधारित भाषाविज्ञान और डेटा-ड्रिवन मॉडल का संयोजन करें, विशेषकर संसाधन-हीन डोमेनों में, ओपन-सोर्स और सामुदायिक सहयोग — अकादमिक संस्थान, सरकारी निकाय और स्वयंसेवी समुदाय मिलकर डेटासेट तथा बेंचमार्क बनाएँ, नैतिक दिशानिर्देश व बायस-मिटिगेशन — प्रशिक्षण सेट में विविधता सुनिश्चित कर बायस घटाने के उपाय अपनाएँ , क्षमता-निर्माण और संसाधन पहुँच — हिंदी शोधकर्ताओं को मॉडल-प्रशिक्षण तथा क्लाउड/हार्डवेयर संसाधन सुलभ कराएँ, संस्कृति-संवेदनशील परख — सार्वजनिक तथा शैक्षिक अनुप्रयोगों में संस्कृति-संवेदनशीलता के परीक्षण अनिवार्य करें।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने हिंदी साहित्य के संरक्षण, पहुँच और विश्लेषण में महत्वपूर्ण सम्भावनाएँ खोली हैं। डिजिटलीकरण से लेकर साहित्यिक शैली-विवेचन तक AI कई प्रक्रियाओं को तेज और व्यापक बना रहा है। तथापि गुणवत्तापूर्ण, विविध और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील डेटा की आवश्यकता, तकनीकी-आधार तथा नैतिकता संबंधी चुनौतियाँ अब भी बाधक हैं। यदि राष्ट्रीय नीतियाँ, अकादमिक साथी और सामुदायिक प्रयास मिलकर ओपन डेटासेट, प्रशिक्षण-साधन और मानक विकसित करें तो अगले पाँच वर्षों में हिंदी साहित्य के अध्ययन और जनता तक पहुँच में गुणात्मक उन्नति सम्भव है।

Fyugp Hindi 2nd year
Govt college for women, Tvpm
6282850163

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी की विविध गतिविधियाँ

हिंदी साहित्य की प्रगति में कृत्रिम मेधा

भुवना श्रीकुमार

इक्कीसवीं सदी मानव सभ्यता के इतिहास में निर्णायक मोड़ के रूप में दर्ज की जाएगी - एक ऐसा मोड़, जहाँ विज्ञान और तकनीक ने मनुष्य की बौद्धिक सीमाओं को चुनौती देते हुए ज्ञान-सृजन के लिए नई दिशाएँ खोलीं। कृत्रिम मेधा (Artificial Intelligence–AI) इसी परिवर्तन का केंद्र है। आज यह मात्र तकनीक नहीं, बल्कि मानव–मस्तिष्क की संज्ञानात्मक क्रियाओं का सहयोगी तंत्र बन चुकी है, जो विश्लेषण, तर्क, निर्णय, रचना और संवेदना की प्रक्रियाओं को नए आयामों से जोड़ती है। हिंदी साहित्य, जिसकी आधार-भूमि संवेदना, सांस्कृतिक चेतना, मानवीय संबंध और समाज–विमर्श है, स्वाभाविक रूप से इस तकनीकी परिवर्तन के प्रभाव से प्रभावित हो रहा है। भाषा-पठन, लेखन, आलोचना, शोध, रचनात्मक प्रयोग, अभिलेखीकरण और साहित्यिक संरचना - सभी आयामों में ए.आई. ने नई दिशाएँ खोल दी हैं। हिंदी साहित्य का परिदृश्य ऐसे संक्रमणकाल से गुजर रहा है जिसमें परंपरा और प्रौद्योगिकी दोनों समान रूप से सक्रिय हैं।

किसी भी भाषा का विकास उसके साहित्य के विकास की पूर्व-शर्त है। ए.आई. ने हिंदी भाषा के अध्ययन, शिक्षण और व्यावहारिक उपयोग को क्रांतिकारी रूप से प्रभावित किया है। पारंपरिक पद्धति से आगे बढ़कर आज भाषा शिक्षण अत्यंत संवेदनशील और इंटरएक्टिव बन गया है। ए.आई.-आधारित टूल, वॉयस रिकग्निशन, उच्चारण प्रशिक्षण, व्याकरण परीक्षण, अनुवाद, शैली-सुधार जैसे कार्य अत्यंत सरलता से संपन्न करते हैं। इससे भाषा - अधिगम सहज, त्वरित और वैज्ञानिक हो गया है। विशेषकर हिंदी जैसी विशाल संरचना वाली भाषा में यह सुविधा सीखनेवालों के लिए अत्यंत सहायक सिद्ध हो रही है।

डिजिटल प्लेटफ़ॉर्मों ने हिंदी की पहुँच अभूतपूर्व रूप से बढ़ाई है। ब्लॉग, ई-पुस्तकें, ऑडियो-बुक, सोशल मीडिया, वर्चुअल कक्षाएँ - ये सभी ए.आई. समर्थित माध्यम भाषा के वैश्विक प्रसार में सहायक हैं। इसके परिणामस्वरूप हिंदी नई पीढ़ी के डिजिटल पाठकों की भाषा बन रही है।

ए.आई. अब हिंदी के वाक्य-विन्यास, संदर्भ, भावान्विति और शैली का विश्लेषण कर उपयुक्त अभिव्यक्ति की रचना कर सकती है। इससे नवलेखकों में भाषा के प्रयोग को लेकर आत्मविश्वास बढ़ा है और लेखन का अभ्यास अधिक व्यवस्थित हुआ है।

मनुष्य की कल्पना साहित्य का आधार है। ए.आई. इस कल्पना को प्रतिस्थापित नहीं करती, बल्कि उसे विस्तारित करने का माध्यम बनती है। ए.आई. अब - कथानक का सुझाव, पात्र-निर्माण, प्रतीक एवं रूपक की व्याख्या, कविता की शैली-विश्लेषण. संवाद-संरचना जैसे रचनात्मक कार्यों में सहयोग करने लगी है। यह लेखक के लिए प्रेरणा-स्रोत का कार्य कर सकती है, यद्यपि उसकी मौलिकता का विकल्प नहीं बनती। यह तकनीक सृजन की प्रक्रिया को विविध और प्रयोगधर्मी बनाती है। ए.आई. के माध्यम से इतिहास, समाज, संस्कृति, भूगोल आदि का विशाल डेटा तुरन्त उपलब्ध हो जाता है। किसी भी साहित्यिक कृति की पृष्ठभूमि निर्माण, लोकेशन-रीसर्च या सांस्कृतिक अध्ययन ए.आई. की सहायता से अधिक प्रभावपूर्ण और प्रामणिक हो गया है।

डिजिटल साहित्य, इंटरेक्टिव फिक्शन, चैट–नैरेटिव, ए.आई.-जनित कविता और वर्चुअल-रीडिंग अनुभव - ये नई विधाएँ साहित्य के भविष्य को पुन:पारिभाषित कर रही हैं। हिंदी भी इन नई विधाओं से जुड़कर बहुआयामी रूप ले रही है। हिंदी आलोचना का परंपरागत ढाँचा संवेदनात्मक और वैचारिक दृष्टियों पर आधारित रहा है। परंतु आज आलोचना का स्वरूप अधिक संरचनात्मक, विश्लेषणात्मक और वैज्ञानिक हो रहा है। ए.आई. पाठ की परतों को खोलकर उसकी - भाषा, रूप–संरचना, प्रतीकात्मकता, भाव-विन्यास, वैचारिक प्रवृत्ति का विश्लेषण प्रस्तुत करती

है । यह प्रक्रिया साहित्यिक आलोचना को अधिक प्रामाणिक और तुलनात्मक बनाती है।

अब ए.आई. यह पता लगा सकती है कि किस समय साहित्य में कौन-सी प्रवृत्ति हावी थी। उदाहरण - प्रेम-विषयक लेखन किस दशक में अधिक हुआ, सामाजिक यथार्थ किन वर्षों में प्रमुख रहा, किस शैली में अधिक उपयोग हुआ, यह प्रवृत्तिविज्ञान साहित्य के इतिहास-लेखन को भी प्रभावित कर रहा है। ए.आई. पाठ का केवल सतही विश्लेषण नहीं करती, बल्कि - सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, सामाजिक, भाषाई सभी स्तरों पर उसका अध्ययन संभव बनाती है। यह बहुविमीय आलोचना हिंदी के समकालीन विमर्श में नई दिशा का परिचायक है।

भारतीय साहित्यिक विरासत अत्यंत विशाल है। ए. आई. ने इसे सुरक्षित रखने की संभावनाएँ बढ़ाई हैं। OCR जैसे ए.आई.-आधारित उपकरण पुरानी लिपियों को पहचानकर उन्हें डिजिटल टेक्स्ट में परिवर्तित करते हैं । यह कार्य साहित्यिक संरक्षण के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। ई–लाइब्रेरी, ई–आर्काइव और डिजिटल संग्रहालय साहित्यिक सामग्री तक वैश्विक पहुँच उपलब्ध कराते हैं। लोककला, लोककथाएँ, कथावाचन, बोलियाँ—सबका डिजिटलीकरण अब संभव हो रहा है। ए.आई. के माध्यम से लोक–संस्कृति को संरक्षित कर अगली पीढ़ियों तक पहुँचाया जा सकता है। यह प्रक्रिया साहित्य को सांस्कृतिक दृष्टि से अधिक समृद्ध करती है। डिजिटल माध्यमों ने संवाद की दूरी समाप्त कर दी है। पाठक अपनी - प्रतिक्रिया, समीक्षा, सुझाव, तुरन्त साझा कर सकते हैं। इससे साहित्य अधिक लोकतांत्रिक हुआ है। ऑडियो-बुक, ई–बुक, ऑनलाइन पाठक समूह और साहित्यिक वेबिनारों ने पढ़ने की आदतों को बदल दिया है। युवा पीढ़ी अब बहु-माध्यमीय पठन में रुचि ले रही है। 3D सामग्री, दृश्य–श्रव्य व्याख्या, इंटरेक्टिव क्विज़ और विश्लेषणात्मक गतिविधियों ने साहित्य-शिक्षण को अत्यंत प्रभावी बना दिया है। ए.आई. के बढ़ते प्रभाव के साथ कई चिंताएँ भी उत्पन्न होती हैं - मौलिकता का संकट, संवेदना की गहराई का अभाव, तकनीकी निर्भरता, नैतिक और कॉपीराइट प्रश्न। फिर भी, इन चुनौतियों के बीच अवसरों की कमी नहीं है। संतुलित उपयोग एवं संवेदनापूर्ण दृष्टि से ए.आई. रचनात्मकता का सहयोगी बन सकती है।

हिंदी साहित्य की यात्रा सदैव परिवर्तनशील रही है - भक्ति, रीतिकाल, आधुनिकता और उत्तर-आधुनिकता से गुजरते हुए आज यह तकनीक-समन्वय के युग में प्रवेश कर चुका है। कृत्रिम मेधा साहित्य की संवेदना को प्रतिस्थापित नहीं कर सकती, परंतु वह उसकी अभिव्यक्ति को विस्तृत, संगठित और वैश्विक अवश्य बना सकती है। मानव–संवेदना और तकनीकी बुद्धि का यह संगम भविष्य में साहित्य के नए अध्याय का निर्माण करेगा - जहाँ सृजन के साथ वैज्ञानिकता भी समान रूप से प्रतिष्ठित होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Michael D Harkavy, The new Webster's International Encyclopedia, Page 72
2. Peter MB Walker, Chambers dictionary of science and technology Page 65
3. हिंदी भाषा नागरी लिपि, भोलानाथ तिवारी, पृष्ठ 84
4. इंडियन जर्नल ऑफ कंप्यूटर साइंस [जुलाई-अगस्त 2024] पृष्ठ 35

I एम.ए. हिंदी
हिंदी स्नातकोत्तर एवं शोध विभाग
संत थॉमस महाविद्यालय

— continued from Page 34

विद्यार्थियों की परीक्षा एवं अंक मूल्यांकन के लिए ए. आई बहुत मददगार है। कोविड-19 के दौरान ए. आई से संचालित प्लेटफोर्मर्स जैसे गूगल फोर्म, काहूट [Kahoot] सोक्रेटीव (Socrative) के उपयोग से मुल्यांकन बहुत असरदार साबित हुआ है तिरुपुर के एक स्टडी के अनुसार ।[5]

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Albert Sydney Hornby,Oxford learner's dictionary,
2. Michael D Harkavy, The new Webster's International Encyclopedia Page 72,
3. Peter MB Walker, Chambers dictionary of science and technology Page 65,
4. हिंदी भाषा नागरी लिपि, भोलानाथ तिवारी, पृष्ठ 84
5. इंडियन जर्नल ऑफ कंप्यूटर साइंस [जुलाई-अगस्त1 2024] पृष्ठ 35

स्नातकोत्तर छात्र,
हिंदी विभाग, संत थॉमस महाविद्यालय पाला ,
कोट्टयम, केरल - 68657

हिंदी साहित्य की प्रगति और कृत्रिम मेधा

क्रिस्टो जोस

कृत्रिम बुद्धिमत्ता उन कंप्यूटर प्रणालियों को संदर्भित करती है जो पारंपरिक रूप से मानव बुद्धि से जुड़े कार्यों को करने में सक्षम हैं – जैसे पूर्वानुमान लगाना, वस्तुओं की पहचान करना, भाषण की व्याख्या करना और प्राकृतिक भाषा उत्पन्न करना, कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणालियाँ भारी मात्रा में डेटा को संसाधित करके और अपने निर्णय लेने में पैटर्न की तलाश करके ऐसा करना सीखती हैं। कई मामलों में, मनुष्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता को सीखने की प्रक्रिया का पर्यवेक्षण करते हैं, अच्छे निर्णयों को सुदृढ करते हैं और बुरे निर्णयों को हतोत्साहित करते हैं, लेकिन कुछ कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणालियाँ बिना पर्यवेक्षण के सीखने केलिए डिज़ाइन की गयी हैं। समय के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रणालियाँ विशिष्ट कार्यों के अपने प्रदर्शन में सुधार करती हैं, जिससे वे नए इनपुट के अनुकूल हो पाती है और बिना किसी स्पष्ट प्रोग्रामिंग के निर्णय ले पाती हैं। संक्षेप में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता मशीनों को मनुष्यों की तरह सोचना और सीखना सिखाती है, जिसका लक्ष्य काम को स्वचालित करना और समस्याओं को अधिक कुशलता से हल करना है।

मशीनों में मानवीय बुद्धिमता की नकल करने की क्षमता है, जिससे वे सीख सकें, समस्या समाधान कर सकें, और ऐसे कार्य कर सकें जिनके लिए सामान्यतः मानव बुद्धि की आवश्यकता होती है। इसमें मशीन लर्निंग और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण जैसी विभिन्न तकनीकें शामिल हैं, जो मशीनों को नए इनपुट के साथ तालमेल बिठाने और अनुभव से सीखने में सक्षम बनाती हैं।

भारत में AI विकास तेज़ वृद्धिः भारत में AI बाज़ार 2025 तक 8 बिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है, जो AI के वैश्विक उछाल का हिस्सा है। प्रमुख अनुप्रयोगः स्वास्थ्य सेवा, वित्त और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में AI का उपयोग बढ़ रहा है, जिससे ग्राहक सहायता स्वचालित हो रही है और निर्णय लेने की प्रक्रिया बेहतर हो रही है। अनुसंधान और नवाचारः भारतीय सांख्यिकी संस्थान और भारतीय विज्ञान संस्थान जैसे संस्थान AI से संबंधित सफल शोध पत्र और पेटेंट प्रकाशित कर रहे हैं। सरकारी प्रोत्साहनः तेलंगाना जैसे राज्यों ने AI को बढ़ावा देने और इसे वैश्विक AI केंद्र बनाने के लिए पहल की है।

AI विकास से संबंधित चुनौतियाँ पूर्वाग्रह (Bias), AI सिस्टम को पक्षपाती डेटा पर प्रशिक्षित करने से वे पूर्वाग्रहपूर्ण निर्णय ले सकते हैं, जिससे भेदभाव हो सकता है। नियंत्रण खोनाः AI के अत्यधिक शक्तिशाली और तेज़ विकास से मनुष्य इसके नियंत्रण से बाहर हो सकता है। नैतिक मुद्देः AI की व्याख्या, उत्तरदायित्व और नैतिक चुनौतियों को संबोधित करने के लिए स्वास्थ्य सेवा और वित्त जैसे विशिष्ट क्षेत्रों में अनुरूप दिशानिर्देशों की आवश्यकता है।

विभिन्न क्षेत्रों में लाभः एआई दोहराए जाने वाले और थकाऊ कार्यों को स्वचालित करता है, जिससे मनुष्यों को अधिक रचनात्मक और महत्वपूर्ण कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने का अवसर मिलता है, जिससे उत्पादकता बढ़ती है। बेहतर निर्णय लेना ए.आई बड़ी मात्रा में डेटा का विश्लेषण करके सटीक निर्णय लेने में मदद करता है, मानवीय त्रुटियों को कम करता है और अधिक विश्वसनीय पूर्वानुमान प्रदान करता है। स्वास्थ्य सेवा में क्रांतिः एआई चिकित्सा निदान, दवा की खोज और व्यक्तिगत उपचार योजनाएं विकसित करके स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र को बेहतर बनाता है।

सामाजिक लाभ, एआई जानकारी तक पहुँच को अधिक व्यापक और सुलभ बनाता है, दिव्यांगों की क्षमताओं को बढ़ाता है और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में सुधार कर सकता है। सुरक्षा और खतरनाक कार्य, एआई-संचालित रोबोट बम डिफ्यूज़ करने जैसे खतरनाक कार्यों को अंजाम दे सकते हैं, जिससे मानव जीवन की सुरक्षा होती है। निरंतर उपलब्धता, एआई सिस्टम बिना किसी रुकावट या डाउनटाइम के 24 x 7 काम कर सकते हैं, जो संचालन के लिए महत्वपूर्ण है।

continued to Page 51

हिंदी साहित्य के विकास में कृत्रिम मेधा का योगदान

गायत्री पी.के.

कृत्रिम बुद्धि (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस या एआई) मानव और अन्य जन्तुओं द्वारा प्रदर्शित प्राकृतिक बुद्धि के विपरीत मशीनों द्वारा प्रदर्शित बुद्धि है। कंप्यूटर विज्ञान कृत्रिम बुद्धि के शोध को "इंटेलिजेंट एजेंट" का अध्ययन माना जाता है। इंटेलिजेंट एजेंट एक ऐसा सयंत्र है जो अपने पर्यावरण को देखकर, अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश करता है। इसके लिए आम बोलचाल की भाषा में, "कृत्रिम बुद्धि" शब्द का प्रयोग होता है। कृत्रिम मेधा के सबसे श्रेष्ठ विद्वान जेम्स एल्बस का मत यह है कि बुद्धिमत्ता को समझने में यह समझना शामिल है कि ज्ञान कैसे अर्जित, प्रस्तुत और संग्रहीत किया जाता है; बुद्धिमान व्यवहार कैसे उत्पन्न और सीखा जाता है; प्रेरणाएँ, भावनाएँ और प्राथमिकताएँ कैसे विकसित और उपयोग की जाती हैं; संवेदी संकेतों को प्रतीकों में कैसे बदला जाता है; तर्क करने, अतीत के बारे में तर्क करने और भविष्य की योजना बनाने के लिए प्रतीकों का कैसे उपयोग किया जाता है; और बुद्धिमत्ता के तंत्र कैसे भ्रम, विश्वास, आशा, भय और स्वप्न और हाँ, दया और प्रेम की घटनाएँ उत्पन्न करते हैं। मेरा मानना है कि इन कार्यों को मूलभूत स्तर पर समझना, परमाणु भौतिकी, सापेक्षतावाद और आणविक आनुवंशिकी के पैमाने पर एक वैज्ञानिक उपलब्धि होगी।"[1]

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मदद से भाषा के क्षेत्र में सबसे बड़ा कार्य ये हो सकता है कि अन्य प्रमुख भाषाओं के साथ हिंदी के गहरे संबंधों को विकसित किया जा सकता है। हमारा हिन्दी साहित्य, रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता, वेद, पुराण, उपनिषद जैसे ग्रंथ, आयुर्वेद योग जैसी ज्ञान संपदा आदि दुनिया भर में गैर हिंदी पाठकों तक पहुँच सकती हैं। इससे कहीं अधिक आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है विश्व के ज्ञान, शोध, साहित्य का हिंदी भाषी लोगों तक पहुँचना। हिंदी में विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, अर्थव्यवस्था आदि विषयों पर विश्व-स्तरीय सामग्री की कमी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मदद से ऐसी सामग्री हिंदी में तैयार की जा सकती है और मशीन अनुवाद के माध्यम से वैश्विक ज्ञान को हिन्दी भाषा में ग्रहण किया जा सकता है। यह ज्ञान अंग्रेजी से भी आगे बढ़कर अन्य क्षेत्रों पूर्वी पश्चिमी, उत्तरी तथा दक्षिणी से भी प्राप्त किया जा सकेगा। साहित्य पर AI का कितना असर ? इसका संबन्ध कवि राजेश जोशी का कहना है कि गूगल या इंटरनेट सज्ज के तमाम मध्यमों ने हमारे दिमाग के हार्ड ड्राइव को, जैसे खाली कर दिया"।[2] आजकल हम छोटी-छोटी जानकारी के लिए भी मोबाइल या कंप्यूटर का इस्तेमाल करते हैं। यह कितना अच्छा है या बुरा, यह बहस का विषय है। क्या इससे हमारी आपकी सोचने समझने तर्क करने की ताकत या फिर हमारी रचनात्मकता प्रभावित हुई है?

हर चीज़ के दो पहलू होते हैं, उसी तरह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के भी दो पहलू हैं, सकारात्मक और नकारात्मक। साहित्यिक सामग्री का निर्माण ए.आई. अब हिंदी में कविताएँ, कहानियों और लेख स्वतः लिखने में सक्षम है। इससे नए विचारों और शैलियों का उदय हो रहा है। डिजिटल पहुँच और संरक्षण, पुराने ग्रंथों और साहित्यिक कृतियों को डिजिटल रूप में संरक्षित किया जा रहा है, जिससे नई पीढ़ी तक उनकी पहुँच आसान हो गई है। अनुवाद और लिप्यंतरण - एआई आधारित टूल्स जैसे गूगल ट्रांसलेट हिंदी को अन्य भाषाओं में और अन्य भाषाओं को हिंदी में अनुवादित करने में सहायक हैं। शिक्षा में सहयोग, एआई आधारित ऐप्स जैसे ड्यूलिंगो और बाइजू'स हिंदी भाषा की सीख को व्यक्तिगत और प्रभावी बना रहे हैं। सांस्कृतिक अभिव्यक्ति, ए.आई. हिंदी में गीत, और कविता रचकर सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित कर रहा है। यह सब कृत्रिम मेधा का सकारात्मकता है।

इसी तरह इसको कुछ चुनौतियाँ भी है जैसे कि, बोलियों की विविधता - हिंदी की अनेक बोलियाँ हैं, जिन्हें ए.आई. पूरी तरह समझ नहीं पाता। भाषाई पक्षपात, अधिकांश एआई मॉडल अंग्रेजी-केंद्रित होते हैं, जिससे हिंदी की सूक्ष्मताओं की अनदेखी हो सकती है। रोज़गार पर प्रभाव, लेखन, अनुवाद और ग्राहक सेवा जैसे क्षेत्रों में स्वचालन से पारंपरिक नौकरियाँ प्रभावित हो सकती हैं। स्टीफन हॉकिंग ने बीबीसी को बताया "पूर्ण कृत्रिम बुद्धिमत्ता

continued to Page 47

हिंदी साहित्य और कृत्रिम बुद्धि

गायत्री.सी.जी

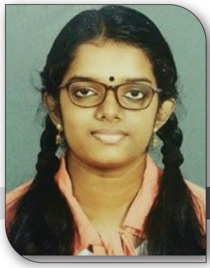

कार्यों का स्वचालन: ग्राहक सेवा, विनिर्माण और ड्राइविंग का काम मानव श्रमिकों से स्वचालन के हाथों में स्थानांतरित हो गया है। एआई कई दोहराव वाले और खतरनाक कार्यों को, जिन्हें पहले मनुष्य अधिक सटीकता और बेहतर गुणवत्ता के साथ करते थे, स्वचालित कर देता है।

एआई के साथ खरीदारी का समय कम हो जाता है। यह बुद्धिमान उत्पाद अनुशंसाओं को सशक्त बनाता है जो ई-कॉमर्स में प्रत्येक खरीदार की ब्राउज़िंग प्रोफ़ाइल के अनुकूल वस्तुओं की सुझाव देते हैं।

एआई अब स्वास्थ्य सेवा उद्योग में मरीज़ों के रिकॉर्ड स्कैन करने के अलावा भी उपयोगी है। एआई की मदद से, अब बिना बायोप्सी के मैमोग्राम की 99% सटीकता से व्याख्या करना संभव है। इसके अलावा, एआई की बदौलत निदान, नए उपचार, शल्य चिकित्सा प्रक्रियाएँ और मरीज़ों की निगरानी में भी सुधार हुआ है।

एआई ने प्रत्येक छात्र की आवश्यकताओं और क्षमताओं के अनुसार पाठ, मूल्यांकन और सामग्री को अनुकूलित करके लाभकारी, वैयक्तिकृत शिक्षण अनुभव बनाने में मदद की है। अनुकूली शिक्षण प्लेटफ़ॉर्म, वर्चुअल असिस्टेंट और स्वचालित ग्रेडिंग सीख को और अधिक मनोरंजक और प्रभावी बना सकते हैं। एक अतिरिक्त लाभ के रूप में, दोहराए जाने वाले प्रशासनिक कार्यों को स्वचालित करने से शिक्षकों को रणनीतिक कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलती है।

हम ऑटोमोबाइल को जोखिम भरा मानने से लेकर स्वचालित कारों तक का लंबा सफर तय कर चुके हैं। वर्चुअल असिस्टेंट और रोबोटिक सहायक जैसे व्यावसायिक मॉडलों में एआई की प्रगति ऐसी ही है। ये एआई-संचालित मॉडल ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाते हैं और विभिन्न उद्योगों में दक्षता और डेटा-संचालित निर्णय लेने के नए मानक स्थापित करते हैं।

निराई, फसल निगरानी, कटाई आदि के लिए सटीक कृषि रोबोट विकसित करने से रोबोटिक किसानों और कृषि तकनीक प्रदाताओं के लिए अवसर खुलेंगे। ये रोबोट संसाधनों के उपयोग को अनुकूलित करके और पारंपरिक कृषि विधियों के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करके टिकाऊ कृषि पद्धतियों में योगदान करते हैं।

हानियाँ

एआई के संभावित परिणामों में से एक है नौकरियों का विस्थापन। एआई प्रणालियों के उपयोग से विशिष्ट नौकरियों और प्रक्रियाओं का स्वचालन विशिष्ट स्थानों पर श्रमिकों के विस्थापन का कारण बन सकता है। जैसे-जैसे एआई प्रणालियाँ अधिक उन्नत होती जाती हैं, कुछ कार्य पुराने पड़ सकते हैं, जिससे कुछ क्षेत्रों में व्यापक बेरोजगारी बढ़ सकती है। यह उन लोगों के लिए विशेष रूप से समस्याग्रस्त हो सकता है जो नई नौकरी की ज़िम्मेदारियों को स्वीकार करने में सक्षम नहीं हैं। कंपनियों और सरकारों के लिए श्रम बाजार पर एआई के संभावित प्रभाव का आकलन करना और नौकरी के विस्थापन के नकारात्मक परिणामों को रोकने के लिए कदम उठाना बेहद ज़रूरी है। इसके लिए उन लोगों के लिए पुनर्प्रशिक्षण पहल की आवश्यकता हो सकती है जिनके व्यवसायों के स्वचालित होने का खतरा है, साथ ही नौकरी के विस्थापन से प्रभावित श्रमिकों की मदद करने के प्रयास भी किए जा सकते हैं। एआई का एक और संभावित नुकसान तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता है। हालाँकि एआई प्रणालियाँ कई लाभ ला सकती हैं, लेकिन उन पर बहुत अधिक निर्भरता, अगर प्रणालियाँ विफल हो जाती हैं या उनमें खराबी आ जाती है, तो गंभीर चिंताएँ पैदा कर सकती हैं। यह स्वास्थ्य सेवा या वित्त जैसे महत्वपूर्ण उद्योगों में विशेष रूप से परेशानी का कारण बन सकता है, जहाँ त्रुटियों के विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, कुछ AI प्रणालियों में मानवीय नियंत्रण का अभाव अप्रत्याशित परिणामों को जन्म दे सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि AI प्रणालियाँ उतनी ही अच्छी होती हैं जितना कि वे जिस डेटा पर प्रशिक्षित होती हैं, और यदि वह डेटा पक्षपाती या अपर्याप्त है, तो इससे गलत निर्णय या कार्यवाहियाँ हो सकती हैं। AI के लाभ और हानि के बीच संतुलन स्थापित करना और साथ ही कुछ मानवीय निगरानी बनाए रखना महत्वपूर्ण है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि इसका उपयोग जिम्मेदारी और नैतिकता के साथ किया जाए।

एआई का इस्तेमाल अनैतिक उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है, जैसे डीप फेक (जो संशोधित फ़िल्में या तस्वीरें होती हैं जिनका इस्तेमाल झूठी जानकारी फैलाने या लोगों को बदनाम करने के लिए किया जा सकता है)। इसके अलावा, एआई से संचालित स्वायत्त हथियारों के विकास से यह चिंता भी बढ़ जाती है कि ये हथियार ऐसे फैसले ले सकते हैं जिनसे चोट लग सकती है या जान जा सकती है।

इसी तरह, विशेष रूप से कठिन या खतरनाक कार्यों को पूरा करने के लिए एआई का उपयोग करने से मनुष्यों को चोट या नुकसान के जोखिम को कम करने में मदद मिल सकती है। मनुष्यों की जगह एआई द्वारा जोखिम उठाने का एक उदाहरण उच्च विकिरण वाले क्षेत्रों में रोबोट का उपयोग होगा। मनुष्य विकिरण से गंभीर रूप से बीमार हो सकते हैं या मर सकते हैं, लेकिन रोबोट अप्रभावित रहेंगे। और यदि कोई घातक त्रुटि हो जाती है, तो रोबोट को फिर से बनाया जा सकता है।

एआई प्रोग्राम हर समय उपलब्ध हैं, जबकि इंसान दिन में 8 घंटे काम करते हैं। मशीनें दिन-रात काम कर सकती हैं, और एआई-संचालित चैटबॉट ऑफ़-ऑवर्स में भी ग्राहक सेवा प्रदान कर सकते हैं। इससे कंपनियों को ज़्यादा उत्पादन करने और बेहतर ग्राहक अनुभव प्रदान करने में मदद मिल सकती है, जो अकेले इंसान नहीं दे सकते।

मनुष्य हमेशा असहमत होते हैं और अपने पूर्वाग्रहों को अपने निर्णयों में झलकने देते हैं। सभी मनुष्यों में पूर्वाग्रह होते हैं, और अगर हम उन्हें सुलझाने की कोशिश भी करें, तो भी वे कभी-कभी दरारों से निकल ही आते हैं।

दूसरी ओर, अगर एआई एल्गोरिथम को निष्पक्ष डेटासेट का उपयोग करके प्रशिक्षित किया गया हो और प्रोग्रामिंग पूर्वाग्रह के लिए परीक्षण किया गया हो, तो प्रोग्राम पूर्वाग्रह के प्रभाव के बिना निर्णय लेने में सक्षम होगा। इससे नौकरी के आवेदनों के चयन, ऋण स्वीकृत करने या क्रेडिट आवेदनों जैसे मामलों में अधिक निष्पक्षता प्रदान करने में मदद मिल सकती है।

दुनिया की सबसे दिलचस्प नौकरी में भी कुछ नीरस या दोहराव वाला काम होता है। इसमें डेटा दर्ज करना और उसका विश्लेषण करना, रिपोर्ट तैयार करना, जानकारी की पुष्टि करना वगैरह शामिल हो सकते हैं। एआई प्रोग्राम का इस्तेमाल इंसानों को बार-बार दोहराए जाने वाले कामों की बोरियत से बचा सकता है और उनकी ऊर्जा को ऐसे कामों के लिए बचा सकता है जिनमें ज़्यादा रचनात्मक ऊर्जा की ज़रूरत होती है।

जैसा कि हमने ऊपर बताया, एआई चौबीसों घंटे काम कर सकता है और एक ही दिन में मानव कार्यकर्ता जितना ही अधिक मूल्य सृजित कर सकता है। और चूँकि एआई मैनुअल और थकाऊ कामों को संभालने में मदद कर सकता है, यह श्रमिकों को उच्च-कुशल कार्यों के लिए मुक्त करता है। इससे अंततः अंतिम उपयोगकर्ता या उपभोक्ता के लिए अधिक मूल्य सृजित होता है।

जब डेटा प्रोसेसिंग की बात आती है, तो उत्पन्न डेटा का पैमाना उसे समझने और उसका विश्लेषण करने की मानवीय क्षमता से कहीं अधिक होता है। एआई एल्गोरिथम जटिल डेटा की बड़ी मात्रा को प्रोसेस करने में मदद कर सकते हैं, जिससे वह विश्लेषण के लिए उपयोगी हो जाता है।

एआई, खासकर जनरेटिव एआई, ने पहले ही कई व्यवसायों के लिए कार्य स्वचालन को बढ़ा दिया है और संभवतः भविष्य में भी ऐसा ही होता रहेगा। चैटबॉट्स और डिजिटल असिस्टेंट के उदय के साथ, कंपनियां ग्राहकों के साथ साधारण बातचीत को संभालने और कर्मचारियों के बुनियादी सवालों के जवाब देने के लिए एआई पर भरोसा कर सकती हैं।

व्यावसायिक स्वचालन ने स्वाभाविक रूप से नौकरी छूटने की आशंकाओं को जन्म दिया है। हालाँकि कार्यस्थल पर AI ने लाभ कमाया है, लेकिन विभिन्न उद्योगों और व्यवसायों पर इसका असमान प्रभाव पड़ा है। उदाहरण के लिए, डेटा एंट्री या प्रोसेसिंग और ग्राहक सेवा जैसी दोहराव

वाली नौकरियों को पहले ही स्वचालित किया जा रहा है, लेकिन मशीन लर्निंग विशेषज्ञों और सूचना सुरक्षा विश्लेषकों जैसी अन्य नौकरियों की माँग बढ़ी है।

रचनात्मक पदों पर कार्यरत कर्मचारियों की नौकरियों में एआई के ज़रिए वृद्धि होने की संभावना ज़्यादा है , बजाय इसके कि उन्हें पूरी तरह से बदल दिया जाए। चाहे कर्मचारियों को नए उपकरण सीखने के लिए मजबूर करना हो या उनकी भूमिकाएँ अपने हाथ में लेना हो, एआई व्यक्तिगत और कंपनी, दोनों स्तरों पर कौशल उन्नयन के प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए तैयार है।

कंपनियों को जनरेटिव एआई टूल्स को संचालित करने वाले मॉडलों को प्रशिक्षित करने के लिए बड़ी मात्रा में डेटा की आवश्यकता होती है, और यह प्रक्रिया गहन जांच के दायरे में आ गई है। कंपनियों द्वारा उपभोक्ताओं का व्यक्तिगत डेटा एकत्र करने की चिंताओं के कारण, FTC ने 2023 में एक जांच शुरू की थी कि क्या OpenAI ने अपने डेटा संग्रह विधियों के माध्यम से उपभोक्ताओं पर नकारात्मक प्रभाव डाला है, क्योंकि कंपनी ने यूरोपीय डेटा सुरक्षा कानूनों का संभावित रूप से उल्लंघन किया है। इसके जवाब में, बाइडेन-हैरिस प्रशासन ने अक्टूबर 2023 में एक एआई अधिकार विधेयक तैयार किया , जिसमें डेटा गोपनीयता को इसके मूल सिद्धांतों में से एक बताया गया। हालाँकि इस कानून का कानूनी महत्व ज़्यादा नहीं है, लेकिन यह डेटा गोपनीयता को प्राथमिकता देने और एआई कंपनियों को प्रशिक्षण डेटा संकलित करने के तरीके के बारे में अधिक पारदर्शी और सतर्क रहने के लिए मजबूर करने की बढ़ती मांग को दर्शाता है।

एआई कुछ कानूनी सवालों पर नज़रिया बदल सकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि जनरेटिव एआई से जुड़े मुकदमे कैसे आगे बढ़ते हैं। उदाहरण के लिए, ओपनएआई और एंथ्रोपिक के खिलाफ लेखकों, संगीतकारों और द न्यू यॉर्क टाइम्स जैसी कंपनियों द्वारा दायर कॉपीराइट मुकदमों के मद्देनजर बौद्धिक संपदा का मुद्दा सबसे आगे आ गया है। ये मुकदमे अमेरिकी कानूनी व्यवस्था द्वारा निजी और सार्वजनिक संपत्ति की व्याख्या को प्रभावित करते हैं, और इसमें कोई भी नुकसान ओपनएआई और उसके प्रतिस्पर्धियों के लिए बड़ा झटका साबित हो सकता है।

आज, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और इसकी उप-शाखा, जनरेटिव एआई, व्यवसायों में सामग्री निर्माण, बाज़ार अनुसंधान, प्रक्रियाओं को स्वचालित करने, बार-बार बिक्री करने और कई अन्य आवश्यक कार्यों के लिए अभिन्न अंग बन गए हैं। यह क्रांतिकारी तकनीक व्यवसायों को मैन्युअल कार्यों को कम करने, लागत कम करने और व्यावसायिक संचालन एवं दक्षता में सुधार के लिए एआई के अन्य नैतिक तरीकों का उपयोग करने में मदद कर रही है। हालाँकि, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से जुड़ी कई चुनौतियाँ वैश्विक स्तर पर व्यवसायों के लिए चिंता का विषय हैं।

कई एआई तकनीकों, खासकर मशीन लर्निंग, की प्रकृति ही एल्गोरिथम को प्रशिक्षित और परखने के लिए भारी मात्रा में डेटा ग्रहण करने पर निर्भर करती है। इतनी बड़ी मात्रा में डेटा एकत्र करना एआई के विकास में सहायक हो सकता है, लेकिन यह संग्रहण सीमा सिद्धांत के सीधे विपरीत भी हो सकता है। IoT उपकरणों, स्मार्टफ़ोन और वेब ट्रैकिंग में तकनीकी विकास का अर्थ है कि एआई प्रणालियों में डाला जा रहा डेटा अक्सर पारंपरिक लेनदेन के रूप में एकत्र नहीं किया जाता है।

संग्रह के उद्देश्य की व्याख्या प्रदान करना (आमतौर पर एक संग्रह नोटिस के माध्यम से) वह तरीका है जिससे अधिकांश संगठन उद्देश्य विनिर्देश सिद्धांत का पालन करते हैं। शुरू में एकत्र किए गए डेटा से परे अर्थ निकालने की एआई की क्षमता इस सिद्धांत के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती प्रस्तुत करती है

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. https://bharatdiscovery.org,
2. https://ebooks.inflibnet.ac.in
3. https://en.wikipedia.org,
4. https://www.calmu.edu
5. https://trainings.internshala.com,
6. https:// builtin.com

। एम.ए

संत थॉमस कॉलेज , पाला

हिंदी साहित्य की प्रगति और कृत्रिम मेधा का योगदान

जानिया जॉन

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) हमारे जीवन के हर पहलू को बदल रही है और आनेवाले दशकों में यह हमारी दुनिया को पूरी तरह से नया रूप देने वाली है। इस बड़े बदलाव से हमारी भाषाएँ भी अछूती नहीं रह सकतीं, और न ही उन्हें रहना चाहिए क्योंकि जो भाषाएँ समय के साथ नहीं चलती, वे धीरे-धीरे अपनी पहचान और प्रासंगिकता खो बैठती हैं। ठीक उसी तरह, जिस तरह जो समाज, विज्ञान, तकनीक और जरा विचारों को अपनाते नहीं हैं, वे प्रगति की दौड़ में पीछे रह जाते हैं। यह समझना जरूरी है कि विज्ञान, तकनीक और बाज़ार एक सच्चाई है। इनका विरोध करने से हमें कोई फायदा नहीं होगा। हाँ, अगर हम इनके साथ मिलकर चलें, तो हमारे समाज का और हमारी हिन्दी जैसी भाषाओं का भी फायदा है। अगर हम अपनी भाषाओं को ए.आई. के साथ जोड़ें, तो वे और भी शक्तिशाली हो सकती हैं।

ट्यूरिंग के काम, खासकर उनके शोधपत्र, "कंप्यूटिंग मशीनरी और इंटेलिजेंस" ने प्रभावी ढंग से यह प्रदर्शित किया कि किसी प्रकार की मशीन या कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक संभावित वास्तविकता है। बाद के वर्षों में, कई और शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों ने उनकी खोजों पर काम किया। उन्होंने मुख्य रूप से "मशीन लर्निंग के विज्ञान पर ध्यान केंद्रित किया। यह विशिष्ट प्रोग्रामिंग की आवश्यकता के बिना, मशीनों को डेटा से नए कौशल सीखने के लिए प्रभावी ढंग से सिखाने की प्रक्रिया है, जिससे मानव मस्तिष्क की शक्ति को मशीन के रूप में पुनः निर्मित किया जाता है। फिर भी, तमाम शोध प्रयासों के बावजूद, कार्यात्मक एआई का विचार कई दशकों तक एक सपना ही बना रहा। इसके बारे में विज्ञान-कथाओं की किताबों में लिखा गया या फिल्मों और टीवी पर कल्पना की गई, लेकिन वास्तविक जीवन पर इसका कोई ठोस प्रभाव नहीं पड़ा।

हालाँकि, इतने सालों और प्रयासों के बाद, वह सपना अब हकीकत बन गया है। ओपन ए.आई. के चैटजीपीटी और अन्य एआई संसाधनों जैसे लोकप्रिय जनरेटिव एआई टूल्स के आने से ए.आई. का एक आधुनिक युग शुरू हो गया है, और यह तकनीक अब उल्लेखनीय गति से विकसित हो रही है, और इसके रोज़ाना नए उपयोग सामने आ रहे हैं। "जनरेटिव ए.आई. को वेबपेज, सोशल मीडिया पर बातचीत और अन्य ऑनलाइन मीडिया से एकत्र किए गए डेटा का उपयोग करके प्रशिक्षित किया जाता है। यह अपने द्वारा लिए गए डेटा में शब्दों, पिक्सेल या अन्य तत्वों के वितरण का सांख्यिकीय विश्लेषण करके और सामान्य पैटर्न की पहचान करके और उन्हें दोहराकर (उदाहरण के लिए, कौन से शब्द आमतौर पर किन अन्य शब्दों के बाद आते हैं) अपनी सामग्री उत्पन्न करता है। जबकि जनरेटिव ए.आई. नई सामग्री का उत्पादन कर सकता है, यह वास्तविक दुनिया की चुनौतियों के लिए नए विचार या समाधान उत्पन्न नहीं कर सकता है, क्योंकि यह वास्तविक दुनिया की वस्तुओं या सामाजिक संबंधों को नहीं समझता है जो भाषा को आधार देते हैं। इसके अलावा, इसके धाराप्रवाह और प्रभावशाली आउटपुट के बावजूद, जनरेटिव एआई पर सटीक होने के लिए भरोसा नहीं किया जा सकता है।"5 अब जब आपके पास कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उत्तर है, तो आप इसके कार्य करने के तरीके के बारे में अधिक जानने के लिए उत्सुक हो सकते हैं। मूलतः, ए.आई. की कार्यक्षमता एल्गोरिथम और डेटा के इर्द-गिर्द घूमती है। पहले भारी मात्रा में डेटा एकत्र किया जाता है और फिर एल्गोरिथम (गणितीय मॉडल) पर लागू किया जाता है, जो उस डेटा का विश्लेषण करते हैं, पैटर्न और रुझानों पर ध्यान देते हैं। यह ए.आई. के लिए "प्रशिक्षण" प्रक्रिया है, जो ए.आई. मॉडल और सिस्टम को कुछ कार्य करने के लिए प्रभावी ढंग से सिखाती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता में भी हिंदी भाषा प्रासंगिक है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सिर्फ एक तकनीक नहीं, बाल्कि एक ऐसी शक्ति है जो इंसान की तरह ही सीख सकती है, लेकिन उससे कहीं बड़े पैमाने पर। यह विशाल डेटा का विश्लेषण करती है, चीजों को बारीकी से देखनी है, अलग-अलग स्थितियों पर सोच-विचार करती है, अपनी क्षमताओं को लगातार बढ़ाती है, और सटीक निर्णय लेकर बेहतरीन परिणाम देती है। यह सामान्य टेक्नोलॉजी से बिल्कुल अलग है। सामान्य टेक्नोलॉजी केवल वही काम करती है जो उसे पहले से सिखाया गया हो, वह अपनी सीमाओं में रहकर काम करती है और दिए गए निर्देशों (प्रोग्रामिंग) के आधार पर ही ननीचे देती है। वह खुद को बदल नहीं सकती और समय के साथ खुद को बेहतर बनाने में भी सक्षम नहीं होती। इसके विपरीत, ए.आई. लगातार सीखाती रहती है। यह हिन्दी के लिए एक बड़ी संभावना है। ए.आई. की मदद से हिन्दी भाषा और भी मजबूत हो सकती है। यह अनुवाद को और भी सटीक बना सकती है, शिक्षा में नए तरीके हो सकती है, और हिन्दी में सामग्री के निर्माण को आसान बना सकती है।

ए.आई. के मामले में भी हिंदी भाषा एक वरदान है। आज दुनिया भर में भाषाओं के आस्तित्व पर संकट मंडरा रहा है। युनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया की लगभग 7200 भाषाओं में से आधी से ज्यादा इस सदी के अंत तक खत्म हो सकती हैं। यह एक गंभीर चेतावनी है, और हमें हिन्दी के स्थायी भविष्य को सुनिश्चित करने केलिए इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। कुछ लोगों को लगता है कि हिन्दी जैसी गैर-पाश्चिमी भाषाएँ आनेवाले दशकों में प्राकृत या पालि की तरह इतिहास का हिस्सा बन जाएंगी। वे यह नहीं समझ पाते है कि जहाँ इन भाषाओं के सामने कई तरह की चुनौतियाँ पड़ी हैं, वहीं कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) जैसी आधुनिक तकनीक एक नया समाधान लेकर आई है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता भाषाओं के बीच की दूरियों को मिटा सकती है और अंग्रेज़ी के दबदबे को कम कर सकती है। ब्रिटानिका के अनुसार, "डिजिटल दुनिया" एक आभासी वातावरण है जो इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों से बनता है, जहाँ लोग दुनिया में कहीं से भी तकनीक के माध्यम से जुड़ सकते हैं और सूचना तथा संचार तक पहुँच सकते हैं।' हिंदी डिजिटल दुनिया में, यह अवधारणा तब लागू होती है जब लोग इंटरनेट और स्मार्टफ़ोन जैसे उपकरणों का उपयोग करके डिजिटल रूप से हिंदी में जानकारी प्राप्त करते हैं और उसका आदान-प्रदान करते हैं, जिससे वैश्विक हिंदी समुदाय जुड़ता है। आज हम हर जगह अंग्रेजी की प्रधानता से परेशान हैं। लेकिन ए.आई. की मदद से, हम अंग्रेज़ी की सामग्री को आसानी से और सटीक रूप से हिन्दी में अनुवाद कर सकते हैं। इससे हिन्दी भाषी लोगों को ज्ञान और सूचना के लिए केवल अंग्रेज़ी पर निर्धारित नहीं रहना पड़ेगा। अगर हम हिन्दी को विलुप्त होनेवाली भाषाओं की सूची में नहीं देखना चाहते, तो हमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता को खुले दिल से अपनाना होगा। यह हिन्दी को न केवल बचाएगी बल्कि उसे और भी मजबूत बनाएगी। यह हिन्दी को डिजिटल दुनिया में एक प्रमुख भाषा के रूप में स्थापित करने में मदद कर सकती है, जिससे हिन्दी बोलनेवाले लोगों के लिए अवसरों की कोई कमी नहीं होगी।

अगर हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) में महारत हासिल कर लें, तो यह हमें अब तक की सभी सीमाओं और भाषायी असमानताओं से आजादी दिला सकती है। यह हमें विकास की एक नई दौड़ में सबसे आगे निकलने का मौका देगी। ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार "कंप्यूटर या अन्य मशीनों की बुद्धिमान व्यवहार प्रदर्शित करने या अनुकरण करने की क्षमता; और, इस से संबंधित अध्ययन का क्षेत्र"। जैसे विनिर्माण क्षेत्र में क्रांति लाकर चीन ने अपनी अर्थव्यवस्था को पूरी तरह बदल दिया वैसे ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता भारत को भी पूरी तरह बदल सकती है। यह तकनीक दुनिया के भविष्य को निश्चित रूप से प्रभावित करेगी, और इसका सही इस्तेमाल करके हम एक नई पहचान बना सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ऑक्सफोर्ड लर्नर्स डिक्शनरी
2. एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका
3. chen p chen, artificial intelligence in education: a review, vol8, 2020
4. ट्रेंड्स रिसर्च इश्यूज और एप्लीकेशन ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इन लैंग्वेज एजुकेशन, vol26, पृष्ठ 1
5. यूनेस्को, 2023 पृष्ठ 8
6. युनेस्को (United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization)
7. ब्रिटानिका डिक्शनरी, 8. ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी, 9. www.swadeshnews. In
8. Vaishvikhindi. com

हिंदी स्नातकोत्तर एवं शोध विभाग
संत थॉमस महाविद्यालय, पाला,
कोट्टयम, केरल - 686574
मोबइल नंबर- 7025440324

हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि में कृत्रिम बुद्धि

जैस्मिन कबीर

कृत्रिम बुद्धि (Artificial Intelligence) वह तकनीक है जिसमें मशीनों को इस तरह बनाया जाता है कि वे इंसानों की तरह सोचने और सीखने का काम कर सकें। इसे "कृत्रिम" इसलिए कहा गया क्योंकि यह इंसानों द्वारा बनाई गई है, और "बुद्धि" इसलिए क्योंकि यह ज्ञान और समझ की तरह काम करती है। आज हमारे जीवन के कई क्षेत्रों जैसे शिक्षा, साहित्य, चिकित्सा और संचार में इसका उपयोग हो रही है। कृत्रिम बुद्धि न केवल समय बचाती है बल्कि नए विचारों और अवसरों को भी जन्म देती है।

कृत्रिम बुद्धि (एआई) आज के समय की सबसे बड़ी तकनीकी उपलब्धियों में से एक है। यह केवल विज्ञान और तकनीक तक सीमित नहीं है, बल्कि साहित्य जैसे रचनात्मक क्षेत्रों में भी अपनी जगह बना रही है। एआई की मदद से अनुवाद, लेखन और पाठों का विश्लेषण आसान हो गया है, जिससे लेखक और पाठक दोनों को नई सुविधाएँ मिल रही हैं। साहित्य भावनाओं और कल्पनाओं की दुनिया है, और एआई इस दुनिया को और व्यापक बना रहा है, क्योंकि इसके माध्यम से हिंदी साहित्य को नई पीढ़ी तक तेजी से पहुँचाया जा सकता है। हालाँकि मशीन मानवीय संवेदनाओं की गहराई को पूरी तरह नहीं समझ सकती, फिर भी यह साहित्य की प्रगति में एक सहायक साथी साबित हो रही है। "साहित्य के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संबंध पर होने वाली चर्चाएँ हमें मानव जीवन के बारे में हमारी कुछ मौलिक धारणाओं की आलोचनात्मक जाँच करने का अवसर प्रदान करती हैं। बुद्धिमत्ता, भाषा और अर्थ के बीच के संबंध की पड़ताल करके हम न केवल समकालीन तकनीक को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं, बल्कि यह भी गहराई से जान सकते हैं कि वास्तव में हमें मानव क्या बनाता है।"[2]

हिंदी साहित्य में कृत्रिम बुद्धि का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। अब कई डिजिटल साधन ऐसे हैं जो लेखन, संपादन और अनुवाद में मदद करते हैं। उदाहरण के लिए, एआई आधारित अनुवादक किसी हिंदी कविता या कहानी को तुरंत अंग्रेज़ी या अन्य भाषाओं में बदल सकते हैं, जिससे हिंदी साहित्य को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नए पाठक मिल रहे हैं और इसका दायरा बढ़ रहा है। एआई साहित्यिक रचनाओं के निर्माण में भी सहायक है, क्योंकि आज कई लेखक इसकी मदद से विचार, शीर्षक या प्रारंभिक मसौदा तैयार करते हैं। किसी कहानी का पहला खाका एआई से लिखवाकर लेखक उसमें अपनी संवेदनाएँ जोड़कर उसे और प्रभावशाली बना सकता है। इस तरह कृत्रिम बुद्धि रचनात्मकता को कम नहीं करती, बल्कि हिंदी साहित्य को आधुनिक तकनीक से जोड़कर और भी समृद्ध बनाती है। "स्मार्ट उपकरण, जैसे शब्दकोश और व्याकरण की किताबें, हमेशा लेखन, चिंतन और संप्रेषण की प्रक्रिया के साथ रही हैं। यह तथ्य कि ये कागज़ी मशीनें अब स्वचालित हो गई हैं, उन्हें जीवन नहीं दे देता। न ही हम रचनात्मक प्रक्रिया पर अपनी सक्रियता (एजेंसी) छोड़ सकते हैं।"[3]

हिंदी साहित्य में कृत्रिम बुद्धि का उपयोग नई संभावनाएँ खोल रहा है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह लेखन, संपादन और अनुवाद को सरल और तेज़ बना देता है। उदाहरण के लिए, एआई आधारित अनुवादक किसी हिंदी कहानी या कविता को तुरंत अंग्रेज़ी या अन्य भाषाओं में प्रस्तुत कर सकते हैं। इससे हिंदी साहित्य का प्रसार अंतरराष्ट्रीय स्तर तक हो रहा है। साथ ही, एआई लेखक को नए विचार, शीर्षक और प्रारंभिक मसौदा तैयार करने में मदद करता है। इसका महत्व इसलिए भी है क्योंकि यह हिंदी साहित्य को आधुनिक तकनीक से जोड़ता है और नई पीढ़ी तक पहुँचाना आसान बनाता है। हालाँकि यह मानवीय संवेदनाओं की गहराई को पूरी तरह व्यक्त नहीं कर सकता, फिर भी यह साहित्य की प्रगति का एक महत्वपूर्ण साधन बन गया है। पुस्तक AI Narratives: A History of Imaginative Thinking about Intelligent Machines (स्टीफन केव और कांता डिहाल, 2020) में ए.आई के बारे में इस प्रकार कहा गया है। "कृत्रिम बुद्धिमत्ता उतनी ही मानव कल्पना का दर्पण है, जितनी वह विज्ञान की उपज है यह उन मिथकों, कहानियों और स्वप्नों से आकार पाती है जो पहली मशीन से बहुत पहले से अस्तित्व में थे।"[4]

कृत्रिम बुद्धि ने अनुवाद की प्रक्रिया को तेज़ और आसान बना दिया है। पहले जहाँ किसी भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करने में काफी समय और श्रम लगता था, वहीं अब एआई आधारित टूल्स कुछ ही क्षणों में पाठ का अनुवाद कर देते हैं। उदाहरण के लिए, हिंदी की किसी कहानी या कविता

को अंग्रेज़ी, फ्रेंच या अन्य भाषाओं में तुरंत बदला जा सकता है। इससे न केवल साहित्य का प्रसार बढ़ रहा है, बल्कि विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच संवाद भी आसान हो रहा है। हालाँकि एआई भावनाओं और सांस्कृतिक संदर्भों को पूरी तरह नहीं समझ पाता, फिर भी यह अनुवाद के क्षेत्र में एक उपयोगी और प्रभावशाली साधन है। "भाषा स्वभावतः अस्पष्ट होती है, वह गहराई से संदर्भ पर निर्भर करती है, और संचार करने वाले पक्षों के बीच साझा किए गए व्यापक पृष्ठभूमि ज्ञान को मानकर चलती है।"[5]

कृत्रिम बुद्धि आज कई क्षेत्रों में मदद कर रही है, लेकिन इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं। सबसे बड़ी समस्या यह है कि मशीनें मानवीय भावनाओं और संवेदनाओं को पूरी तरह नहीं समझ सकतीं। कई बार अनुवाद या लेखन में अर्थ बदल जाता है और भावनाएँ कमज़ोर हो जाती हैं। इसके अलावा, एआई पर अधिक निर्भरता से मनुष्य की रचनात्मकता और मौलिकता भी प्रभावित हो सकती है। इसलिए ज़रूरी है कि एआई को सहायक साधन के रूप में इस्तेमाल किया जाए, न कि पूरी तरह उसके भरोसे रहा जाए।

निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि हिंदी साहित्य की प्रगति में कृत्रिम मेधा (एआई) एक नए युग का द्वार खोल रही है। एआई-आधारित अनुवाद, लेखन और विश्लेषण उपकरणों ने साहित्य के सृजन, अध्ययन और प्रसार की संभावनाओं को व्यापक बना दिया है। इससे न केवल हिंदी साहित्य को वैश्विक स्तर पर पहुँच मिल रही है, बल्कि नए रचनात्मक प्रयोगों के लिए भी अवसर पैदा हो रहे हैं। हालाँकि, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि साहित्य केवल शब्दों का खेल नहीं है, बल्कि उसमें भावनाएँ, संस्कृति और संवेदनाएँ भी निहित होती हैं। इसलिए हिंदी साहित्य की वास्तविक प्रगति तभी संभव है जब एआई की तकनीक और मानवीय रचनात्मकता साथ मिलकर काम करें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सुंदर पिचाई, सीईओ ऑफ गूगल।,
2. डॉ. माइकल मार्सिन्कॉव्स्की, अध्याय "कभी कोई बुद्धिमान साहित्य नहीं रहा"।
3. द राउटलेज हैंडबुक ऑफ लिटरेरी राइटिंग एंड आर्टिफिशियल (2023), संपादकः माइकल बर्क और एमिली इंटेलिजेंस ट्रॉस्चियान्को।
4. Al Narratives: A History of Imaginative Thinking about Intelligent Machines (स्टीफन केव और कांता डिहाल, 2020)।
5. मेलानी मिशेल, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (अध्याय 13)

द्वितीय वर्ष स्नातकोत्तर छात्र
हिंदी विभाग संत थॉमस महाविद्यालय, पाला कोट्टयम, केरल 686574
Mobile 9947424946

— continued from Page 40

का विकास मानव जाति के अंत का कारण बन सकता है... यह अपने आप आगे बढ़ेगी, और लगातार बढ़ती दर से खुद को नया रूप देगी। धीमी जैविक विकास दर से सीमित मनुष्य प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाएँगे और पीछे छूट जाएँगे।"[3]

भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) हिंदी साहित्य को किन-किन रूपों में बदल सकती है? यह प्रश्न न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि सांस्कृतिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत विचारणीय है। कृत्रिम मेघा से अनेक प्रकार का लाभ और नुक्सान भी है। साहित्यिक आलोचना और विश्लेषण का स्वचालन, ए.आई. आधारित टूल्स जैसे टेक्स्ट एनालिसिस मॉडल साहित्यिक कृतियों की संरचना, प्रतीकों और विषयवस्तु का विश्लेषण कर सकते हैं, जिससे शोधकर्ताओं को गहराई से समझने में सहायता मिलेगी। भाषाई सीमाओं का अंत, एआई अनुवाद तकनीकों के माध्यम से हिंदी साहित्य को वैश्विक स्तर पर पहुँचाया जा सकता है। कबीर, तुलसी, महादेवी वर्मा जैसे रचनाकारों की रचनाएँ अब विश्व के किसी भी कोने में पढ़ी जा सकेंगी। इंटरैक्टिव साहित्य और वर्चुअल अनुभव, भविष्य में एआई आधारित साहित्यिक पात्रों से संवाद संभव होगा- जैसे आप सूरदास से उनके दृष्टिकोण पर बात कर सकें। यह साहित्य को जीवंत और संवादात्मक बना देगा। रचनात्मकता बनाम यांत्रिकता की बहस – ए.आई. की रचनाएँ तकनीकी रूप से प्रभावशाली हो सकती हैं, परंतु उनमें मानवीय संवेदना, संघर्ष और आत्मानुभूति की गहराई की कमी हो सकती है। यह प्रश्न उठेगा क्या साहित्य केवल शब्दों का सौंदर्य है या आत्मा की पुकार ?

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि ए.आई. हिंदी साहित्य को अधिक समावेशी, वैश्विक और तकनीकी रूप से समृद्ध बना सकता है, परंतु यह भी आवश्यक होगा कि हम मानवीय संवेदनाओं और सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित रखें। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) द्वारा रचित हिंदी साहित्य अब एक उभरता हुआ क्षेत्र है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Nilsson, Artificial intelligence a new synthesis, page no: 1
2. Roger Bootle, The Al Economy, page no:20
3. News paper, The Hindu, 8/8/25, 4. साहित्य कुंज, 5. अपनी माटी - डॉ रुबल रानी शर्मा

स्नातकोतर छात्रा,
हिंदी विभाग, संत थॉमस महाविद्यालय पाला,
Mobile 9072782532

हिंदी साहित्य का विकास और ए.आई.

नमिता के. एम.

मानव सभ्यता निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रही है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की खोजों ने न केवल जीवन को सरल बनाया है, बल्कि उसे नई दिशा भी दी है। वर्तमान समय में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) का युग है। इसी का एक अद्वितीय और क्रांतिकारी योगदान है कृत्रिम बुद्धिमत्ता यह ऐसी तकनीक है जो मानव मस्तिष्क की कार्यप्रणाली का अनुकरण करती है। जिस प्रकार मनुष्य अनुभव से सीखता है और निर्णय करता है, उसी प्रकार कृत्रिम बुद्धिमता आधारित मशीनें भी सीखने, समझने और निर्णय लेने की क्षमता अर्जित करती हैं।

वर्तमान ChatGPT, स्वचालित वाहन, चिकित्सा रोबोट, स्मार्टफोन असिस्टेंट, साइबर सुरक्षा आदि में AI का व्यापक उपयोग हो रहा है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का महत्वः कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल तकनीकी साधन नहीं है, बल्कि यह आधुनिक समाज के विकास का आधार भी बनती जा रही है। यह कार्यों की द्रुतगति और सटीकता को सुनिश्चित करती है। मनुष्य की श्रमशक्ति को कम कर उत्पादकता बढ़ाती है। यह समस्या समाधान और अनुसंधान में सहायक है। चिकित्सा, शिक्षा, कृषि, परिवहन, व्यापार, रक्षा, संचार आदि हर क्षेत्र में इसका महत्व बढ़ता जा रहा है।

कृत्रिम बुद्धिमता के लाभ हैं कि 1. गति और दक्षता – मशीनें मनुष्य की अपेक्षा कहीं अधिक तीव्र गति से कार्य कर सकती हैं। 2. त्रुटि की संभावना कम-कम्प्यूटर आधारित निर्णय अधिक सटीक और विश्वसनीय होते हैं। 3. 24x7 कार्यक्षमता - AI मशीनें बिना थके निरंतर कार्य कर सकती हैं। 4. जटिल समस्याओं का समाधान चिकित्सा निदान, मौसम पूर्वानुमान, अंतरिक्ष अनुसंधान आदि क्षेत्रों में अत्यंत सहायक। 5. मानव जीवन में सुविधा चैटबॉट्स, नेविगेशन, डिजिटल असिस्टेंट, ऑनलाइन शिक्षा इत्यादि से दैनिक जीवन सरल।

कृत्रिम बुद्धिमता की हानियाँ हैं कि 1. रोज़गार की समस्या मशीनों के कारण मानव श्रम की आवश्यकता कम हो रही है। 2. मानवीय संवेदना का अभाव-मशीनें भावनाओं को नहीं समझ सकर्ती। 3 गोपनीयता का संकट डेटा चोरी और साइबर अपराध बढ़ने की संभावना। 4. निर्भरता की प्रवृति-अधिक उपयोग से मनुष्य अपनी बौद्धिक क्षमता खो सकता है

भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का दायरा और विस्तृत होगा। शिक्षा में वैयक्तिकरण, कृषि में स्मार्ट खेती, स्वास्थ्य में नैनो-रोबोट, परिवहन में पूर्णतः स्वचालित वाहन, तथा रक्षा क्षेत्र में सुरक्षा प्रणालियों का विकास होगा। किन्तु साथ ही नैतिकता, सुरक्षा और रोजगार जैसे मुद्दों पर संतुलित दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक होगा।

हिंदी साहित्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभावः हिंदी साहित्य भारतीय समाज की भावनाओं, संवेदनाओं और सांस्कृतिक जीवन का जीवंत दर्पण रहा है। इसमें युग-युगांतर से मनुष्य की चेतना और सामाजिक परिवर्तनों का प्रतिबिंब मिलता है। 21वीं सदी में हिंदी साहित्य भी तकनीकी परिवर्तनों से अछूता नहीं रहा है। इंटरनेट, ई-पुस्तकें और डिजिटल मंचों ने हिंदी साहित्य के प्रसार को नया आयाम दिया है। इसी कड़ी में कृत्रिम बुद्धिमता ने हिंदी साहित्य में रचना, आलोचना, शोध और प्रसार की नई संभावनाएँ खोल दी हैं।

हिंदी साहित्य और तकनीकी प्रगतिः मुद्रण कला ने हिंदी साहित्य को पाठकों तक पहुँचाया। रेडियो और टेलीविज़न ने काव्य और नाटकों को लोकप्रिय बनाया। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने हिंदी साहित्य को वैश्विक स्तर पर स्थापित किया। अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी साहित्य में लेखन, अनुवाद, आलोचना और पठन-पाठन के नए मार्ग प्रशस्त कर रहा है।

हिंदी साहित्य में कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग अनेक रूपों में देखने को मिल रहा है। आज AI आधारित टूल्स

हिंदी में कहानियाँ, कविताएँ और निबंध लिखने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। अनुवाद और भाषा विकास के क्षेत्र में भी इसका योगदान उल्लेखनीय है, क्योंकि मशीन लर्निंग की सहायता से अंग्रेज़ी से हिंदी या हिंदी से अन्य भाषाओं में साहित्य का अनुवाद सरल हो गया है। इसी प्रकार वर्तनी जाँच और व्याकरण सुधारक जैसे AI उपकरण हिंदी लेखन को अधिक शुद्ध एवं व्यवस्थित बनाने में मदद कर रहे हैं। साहित्यिक शोध की दृष्टि से भी AI महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसके माध्यम से पाठ विश्लेषण, शब्दावली अध्ययन और शैलीगत प्रवृत्तियों का वैज्ञानिक परीक्षण संभव हो रहा है। साथ ही हिंदी की पुरानी पांडुलिपियों और पत्र-पत्रिकाओं को OCR (Optical Character Recognition) तकनीक द्वारा स्कैन करके डिजिटल स्वरूप प्रदान किया जा रहा है, जिससे साहित्य का संरक्षण और भावी पीढ़ियों तक उसका सहज प्रसार संभव हो पा रहा है। हिंदी साहित्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनेक प्रकार के लाभ प्रदान कर रही है। सबसे पहला लाभ यह है कि साहित्य अब डिजिटल रूप में विश्व के किसी भी कोने में सहज रूप से उपलब्ध हो गया है, जिससे इसकी पहुँच अत्यधिक व्यापक हो गई है। AI लेखन में नवीनता भी लाता है, क्योंकि यह नए-नए विचारों और कथानकों के सुझाव देकर साहित्य को समृद्ध करता है। शोध के क्षेत्र में भी इसका योगदान महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि शोधार्थियों को बड़े पैमाने पर हिंदी साहित्यिक डेटा का विश्लेषण करने और प्रवृत्तियों की पहचान करने में सुविधा मिलती है। अनुवाद तकनीक के माध्यम से हिंदी साहित्य का संपर्क अन्य भाषाओं और विश्व साहित्य से बढ़ रहा है, जिससे भाषाई एकता को बल मिलता है। साथ ही, AI आधारित ऐप्स और ई-लाइब्रेरी जैसी सुविधाएँ युवाओं को हिंदी साहित्य की ओर आकर्षित कर रही हैं और उनके भीतर साहित्यिक रुचि जागृत कर रही है।

हिंदी साहित्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रयोग से जहाँ अनेक लाभ प्राप्त हो रहे हैं, वहीं इसके साथ कुछ हानियाँ और चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं। सबसे बड़ी समस्या मौलिकता के संकट की है, क्योंकि AI द्वारा लिखे गए साहित्य में मानवीय संवेदनाओं की गहराई और भावनात्मक ताप कम दिखाई देता है। इसके साथ ही यदि मशीनें कविताएँ और कहानियाँ रचने लगें तो लेखक की पहचान और उसकी रचनात्मक भूमिका पर प्रश्नचिह्न खड़ा हो सकता है। हिंदी साहित्य केवल भाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, परंपरा और जीवन मूल्यों का संवाहक भी है, जिसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता पूरी तरह से नहीं पकड़ सकती। तकनीकी दृष्टि से भी हिंदी भाषा की जटिलता, विशेषकर मुहावरों, लोकोक्तियों और भावबोध की बारीकियों को समझने में AI अभी भी सीमित है। इसके अतिरिक्त, बौद्धिक संपदा और कॉपीराइट का संकट भी बड़ा प्रश्न है, क्योंकि यदि कोई साहित्यिक रचना AI द्वारा तैयार की जाती है, तो उसके अधिकार किसके पास होंगे यह स्पष्ट नहीं है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) शिक्षा के क्षेत्र में तेजी से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके उपयोग से न केवल प्रशासनिक कार्य आसान हुए हैं बल्कि शिक्षण और अधिगम (Teaching & Learning) की गुणवत्ता भी बेहतर हुई है।

कहा जा सकता है कि कृत्रिम बुद्धिमता हिंदी साहित्य के लिए अवसर और चुनौती दोनों है। यह जहाँ साहित्य के प्रसार, अनुवाद और शोध को नई दिशा देती है, वहीं मौलिकता और संवेदनशीलता के प्रश्न भी उठाती है। यदि हिंदी साहित्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता को सहायक उपकरण के रूप में प्रयोग किया जाए और मानवीय भावनाओं को केंद्र में रखा जाए, तो निश्चित ही यह तकनीक हिंदी साहित्य को विश्व साहित्य की मुख्यधारा में और अधिक सशक्त रूप से स्थापित करेगी। AI ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। यह प्रशासनिक कार्यों को सरल करता है, शिक्षण विधियों को प्रभावी बनाता है और छात्रों के अधिगम अनुभव को व्यक्तिगत व आकर्षक बनाता है। हालाँकि कुछ चुनौतियाँ मौजूद हैं, लेकिन अनुसंधान दर्शाता है कि AI के लाभ इसकी सीमाओं से कहीं अधिक हैं। भविष्य में AI शिक्षा को और अधिक सुलभ, गुणवत्तापूर्ण और नवाचारी बनाएगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. जॉन मैकार्थी Artificial Intelligence (1956 की मूल परिकल्पना पर आधारित शोधपत्र)
2. एलन ट्यूरिंग Computing Machinery and Intelligence (Mind Journal, 1950
3. उनवीन ऑनलाइन शोध-पत्र Google Scholar और Shodhganga (AI और हिंदी साहित्य पर शोध सामग्री)।

स्नातकोत्तर छात्रा, हिंदी विभाग
संत थॉमस महाविद्यालय,
पाला, कोट्टयम,
केरल 686574
Mobile : 8848201043

कृत्रिम मेधा और हिंदी साहित्य

संध्या मैलाटी

आधुनिक युग में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्रांतिकारी पारवर्तन लेनेवाली एक चीज़ है- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए आई) "वह एक मशीन है। इनसानों की तरह सोच समझकर काम करते हैं। लोकन वह एक जादूगर नहीं है। रचनात्मकता भी करते हैं, और फैसला भी देते हैं।" मनुष्य की तरह व्यवहार करना, निर्णय लेना, समस्याओं को सुधार करना, और हमारे मन की इच्छा के अनुसार भी वह काम भी करते हैं। कहा जाता है कि आज रोबोट बच्चों और बूढ़ों की देखभाल करने वाले के रूप में कार्य करते हैं, और बुद्धिमता में मनुष्यों को पीछे छोड़ दे रहे हैं। गाड़ी से लेकर घर तक सभी स्तर में इसका उपयोग भी करते हैं।

हिंदी साहित्य की प्रगति में ए आई का सकारात्मक प्रभाव:-

- © ए आई के माध्यम से प्रौराणिक ग्रंथों को आज अपनी भाषा में पठन करने का अवसर मिलते हैं।
- © अन्य भाषा ग्रथों को अनुवाद करने के लिए एआई के माध्यम से आसान हो सकते हैं।
- © अनेक शब्द भंडार इसके माध्यम से मिलते हैं।
- © अगर एक कहानी लिखते है तो इसमें नया बदलाव लेने के लिए एआई के माध्यम से संभव हो सकता है।
- © अगर एक शंका है तो एआई एक सलाहकार के रूप में शंकाओं का समाधान भी करते हैं।
- © साहित्य विधाओं का संपादन और फ्रूफ रीडिंग भी आसानी से करते हैं। *(2)

हिंदी साहित्य में कृत्रिम बुद्धि का नकारात्मक प्रभाव:-

- © हमारी चिन्तन क्षमता धीरे -धीरे कम होती है।
- © साहित्य में रोचकता कम होती है।
- © साहित्य और समाज दोनों में भिन्नता होती है।

एआई-जनरेटेड टेक्स्ट, जीपीटी-3 जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस भाषा मॉडल, सुसंगत और प्रासंगिक पाठ उत्पन्न करने की क्षमता प्रदर्शित कर चुके हैं। हालाँकि यह आउटपुट मूलतः रचनात्मक नहीं होता, फिर भी यह लघु कथाएँ, कविताएँ और अन्य साहित्यिक कृतियाँ उत्पन्न कर सकता है। एआई-जनरेटेड लेखन का उपयोग रचनात्मक और प्रयोगात्मक उद्देश्यों के लिए किया जाता है, जिससे नए दृष्टिकोण और अंतर्दृष्टिप्राप्त होती है।

अल-आधारित लेखन उपकरण और सॉफ़्टवेयर लेखकों को उनके काम को बेहतर बनाने में मदद कर सकते हैं। ये प्रोग्राम व्याकरण और शैली संबंधी सलाह, पर्यायवाची शब्द और प्रूफ़रीडिंग सहायता प्रदान करते हैं, जिससे उच्च-गुणवत्ता वाली रचनाएँ तैयार होती हैं। अल-आधारित भाषा अनुवाद सेवाओं ने साहित्य को दुनिया भर के पाठकों के लिए अधिक सुलभ बना दिया है। साहित्यिक कृतियों का अधिक कुशलतापूर्वक और उचित अनुवाद किया जा सकता है, जिससे अंतर-सांस्कृतिक समझ और प्रशंसा को बढ़ावा मिलता है।

सामग्री निर्माण: कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) एल्गोरिथम विशाल डेटाबेस का विश्लेषण करके पैटर्न, विषय और लोकप्रिय साहित्यिक विषयों का पता लगा सकते हैं। यह डेटा लेखकों और प्रकाशकों को वर्तमान पाठकों की रुचियों के अनुरूप सामग्री तैयार करने में मदद कर सकता है। साहित्यिक विश्लेषण: कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) विशाल मात्रा में साहित्यिक ग्रंथों का विश्लेषण कर सकती है, जिससे विद्वानों को विभिन्न शैलियों और कालखंडों में पैटर्न, प्रवृत्तियों और भाषाई विशेषताओं का पता लगाने में मदद मिलती है। यह साहित्य और उसके ऐतिहासिक विकास के अध्ययन में सहायक है।

व्यक्तिगत पठन अनुशंसाएँ, AI-संचालित अनुशंसा प्रणालियाँ व्यक्तिगत पाठकों की रुचि के आधार पर पुस्तकों

और लेखकों की अनुशंसा कर सकती हैं, जिससे पठन अनुभव बेहतर होता है और पाठकों को नई साहित्यिक कृतियों की खोज करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। AI का उपयोग इंटरैक्टिव कहानी सुनाने के अनुभव बनाने के लिए किया गया है जिसमें पाठक कथा के साथ जुड़ सकते हैं और अपनी पसंद के माध्यम से कहानी के अंत को प्रभावित कर सकते हैं। यह साहित्यिक कृतियों में एक इंटरैक्टिव और आकर्षक तत्व जोड़ता है।

सामग्री का संग्रह और खोज: एआई एल्गोरिथम बड़ी सामग्री को व्यवस्थित और कर सकते हैं। डिजिटल साहित्य के पुस्तकालय, पाठकों को विशिष्ट या कम-ज्ञात साहित्यिक कृतियों को खोजने की सुविधा प्रदान करते हैं।

कॉपीराइट और साहित्यिक चोरी का पता लगाना: एआई तकनीकें साहित्यिक कृतियों में साहित्यिक चोरी के संभावित उदाहरणों की पहचान करने में मदद कर सकती हैं, जिससे लेखकों के बौद्धिक संपदा अधिकारों का संरक्षण होता है।

कृत्रिम बुद्धिमता का मुख्य उद्देश्य मनुष्यों के संज्ञानात्मक कार्यों की नकल करना और वे गतिविधियां करना है जो आम तौर पर मनुष्य करते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में बडा योगदान भी दिया है। इससे लेखन कार्य आसानी से करते हैं। कागज़ की आवश्य कता भी इसमें नहीं होती है। ए.आई हमारी दुनिया को तेज़ी से बदला रही है।

संदर्भग्रन्थ सूची:-

1. आर्टिफिशयल इंटोलिजेंस ए 'मोडेन एप्परोच- स्टारट रूस्सेल & पीटटर नोरवींग (1)
2. साप्ताहिक पत्रिका:- यूनिवर्सिटी न्यूस- जून 26, 2024 (2)
3. इन्पो कैरली - आगस्त 2025 योजना- मई 2025, 4. एआई आन्ट इल्क्शन इंडिया- जून 2024

सेंट थॉमस कॉलेज स्वायत्त) पाला
हिंदी द्वितीय एम ए छात्र
मो : 949505 6843

— continued from Page 39

रोजगार विस्थापन (Job Displacement): एआई और ऑटोमेशन से दोहराए जाने वाले काम मशीनों द्वारा किए जाएंगे, जिससे इंसानों के लिए कुछ नौकरियाँ खत्म हो जाएंगी। गोपनीयता और सुरक्षा जोखिम। डेटा गोपनीयता (Data Privacy): एआई सिस्टम बड़ी मात्रा में डेटा संग्रहीत करते हैं, जिससे व्यक्तिगत डेटा के दुरुपयोग और उल्लंघन का खतरा बढ़ जाता है। सुरक्षा जोखिम (Security Risks): एआई सिस्टम्स को हैक किया जा सकता है या उनका दुरुपयोग किया जा सकता है, जिससे गंभीर सुरक्षा जोखिम पैदा हो सकते हैं।

यदि एआई को गलत या पक्षपातपूर्ण डेटा पर प्रशिक्षित किया जाता है, तो वह भी पक्षपाती निर्णय ले सकता है और भेदभाव कर सकता है। नियंत्रण की चुनौतियाँ (Control Challenges): अत्यधिक उन्नत एआई सिस्टम्स को नियंत्रित करना मुश्किल हो सकता है, और उनके निर्णयों को समझना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। मानवीय क्षमता का अभाव:निर्णय लेने में मानवीय क्षमता (Lack of Human Decision-Making): एआई में भावनाओं, सहानुभूति और वास्तविक मानवीय निर्णय लेने की क्षमता नहीं होती है. रचनात्मकता का अभाव (Lack of Creativity): एआई में इंसानों जैसी रचनात्मकता और मौलिकता की कमी होती है. अन्य नुकसानः उच्च लागत (High Cost): एआई सिस्टम को लागू करना और बनाए रखना महंगा हो सकता है।

निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि, मानव जैसी समस्या समाधान और निर्णय लेने की क्षमताएं मशीनों को दी जाती हैं, जिससे यह जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में क्रांति ला रहा है, लेकिन इसके नैतिक प्रभाव, निजता और पूर्वाग्रह जैसे जोखिम भी हैं जिन पर सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। जिम्मेदार विकास और समावेशी भविष्य के लिए एआई का उपयोग सामाजिक भलाई के लिए एक 'संपूर्ण समाज' और 'संपूर्ण विश्व' के दृष्टिकोण से होना चाहिए, जिसमें एआई शासन और वैश्विक सहयोग शामिल हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. Nilsson, Artificial intelligence a new synthesis, page no:10
2. Newspaper: The Hindu:8/8/25
3. एलन ट्यूरिंग - "कंप्यूटर मशीनरी एंड इंटेलिजेंस"
4. साहित्य कुंज।

II MA HINDI
सेंट थॉमस कॉलेज पाला, स्वायत्त
Christojose0899@gmail.com

हिंदी साहित्य की उन्नति और कृत्रिम बुद्धि

सुचित्रा वेणुगोपाल

आज का युग तकनीक और नवाचार का युग है। कृत्रिम मेधा (Artificial Intelligence - AI) ने मानव जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। बालेन्दु शर्मा दाधीच के अनुसार "कृत्रिम बुद्धिमत्ता जीवन के हर पहलू को प्रभावित कर रही है और ऐसा माना जा रहा है कि अगले एकाध दशक में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की बदौलत हमारी दुनिया का कायाकल्प होनेवाला है।"[1]

शिक्षा, चिकित्सा, व्यापार, कला और संस्कृति - सभी क्षेत्रों में इसकी गहरी छाप देखी जा सकती है। साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा है। साहित्य सदैव समाज का दर्पण माना गया है, और जब समाज बदलता है तो उसकी रचनात्मक अभिव्यक्ति भी नए रूप ग्रहण करती है। साहित्य सृजन का क्षेत्र हमेशा से मानवीय संवेदनाओं, भावनाओं और अनुभवों से जुड़ा रहा है। परंतु अब एआई कविता लिखने, कहानियाँ गढ़ने, उपन्यास के विचार देने और आलोचना प्रस्तुत करने जैसे कार्य करने लगी है। हिंदी भाषा कृत्रिम मेधा के साथ जुड़कर भविष्य की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो सकती है। इस दिशा में कुछ प्रगति हुई है और बहुत कुछ अभी शेष है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी भाषा के लिए नए रास्ते खोल सकती हैऔर अस्तित्व को सुरक्षित रखने में योगदान दे सकती है। माइक्रोसॉफ्ट में भारतीय भाषाओं के प्रभारी श्री बालेंदु शर्मा दाधीच लिखते हैं- "कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी के स्थायी भविष्य को सुनिश्चित कर सकती है। यूनेस्को ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा था कि दुनिया की 7200 भाषाओं में से लगभग आधी इस शताब्दी के अंत तक विलुप्त हो जाएगी। अगर हम हिंदी को विलुप्त होने वाली इन भाषाओं की सूची में नहीं देखना चाहते तो हमें कृत्रिम मेधा को खुले दिल से अपनाना चाहिए। वजह यह है कि यह प्रौद्योगिकी भाषाओं के बीच दूरियाँ समाप्त करने में सक्षम है। आज हम अंग्रेजी की प्रधानता से त्रस्त हैं और कृत्रिम मेधा तथा दूसरी आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ अंग्रेजी के दबदबे से मुक्त होने में हमारी मदद कर सकती हैं।"[2]

रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता, वेद, पुराण, उपनिषद जैसे ग्रंथ, आयुर्वेद, योग जैसी ज्ञान संपदा आदि दुनिया भर में गैर हिंदी पाठकों तक पहुँच सकती हैं। इससे कहीं अधिक आवश्यक और महत्वपूर्ण है विश्व के ज्ञान, शोध, साहित्य का हिंदी भाषी लोगों तक पहुँचना। हिंदी में विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, अर्थव्यवस्था आदि विषयों पर विश्व-स्तरीय सामग्री की कमी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मदद से ऐसी सामग्री हिंदी में तैयार की जा सकती है और मशीन अनुवाद के माध्यम से वैश्विक ज्ञान को हिंदी भाषा में ग्रहण किया जा सकता है। यह ज्ञान अंग्रेजी से भी आगे बढ़कर अन्य क्षेत्रों- पूर्वी-पश्चिमी, उत्तरी तथा दक्षिणी से भी प्राप्त किया जा सकेगा। मशीन अनुवाद कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एक हिस्सा है। मशीन अनुवाद की मदद से भाषाओं के बीच दूरियाँ कम हो रही है। यह मशीन अनुवाद निरंतर बेहतर हो रहा है क्योंकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव-व्यवहार, कामकाज, डेटा भंडारों, फीडबैक आदि से सीखने तथा स्वयं को निरंतर निखारने में सक्षम है। बालेन्दु शर्मा दाधीच लिखते हैं-"कुछ वर्षों के भीतर हम ऐसे मशीन अनुवाद की स्थिति में पहुँच सकते हैं जो मानवीय अनुवाद की ही टक्कर का होगा। सबसे बड़ी बात यह है कि यह अत्यंत स्वाभाविक रूप से उपलब्ध होगा कंप्यूटर तथा मोबाइल के जरिए ही नहीं बल्कि दर्जनों किस्म के डिजीटल उपकरणों के जरिए जो हमारे घरों, दफ्तरों, विद्यालयों और यहाँ तक कि रास्तों और इमारतों में भी मौजूद होंगे। "[3]

कृत्रिम मेधा हिंदी भाषा और साहित्य के लिए नई संभावनाएँ लेकर आई है। पहले जहाँ कविता, कहानी, निबंध या आलेख लिखने में दिनों का समय लग जाता था, वहीं आज मशीनें यह कार्य कुछ ही मिनटों में कर सकती हैं। इससे छात्रों, शोधकर्ताओं और नए लेखकों को तुरंत सामग्री उपलब्ध हो जाती है। इसके अतिरिक्त, ए.आई हिंदी लेखन में सही व्याकरण, शुद्ध वर्तनी और उपयुक्त शब्दावली प्रदान करता है, जिससे भाषा की शुद्धता बनी रहती है। अंग्रेज़ी और अन्य भाषाओं की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद आसान होने से हिंदी साहित्य का दायरा भी वैश्विक स्तर पर बढ़ा है और भारतीय संस्कृति को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली

continued to Page 56

हिंदी साहित्य की प्रगति में कृत्रिम बुद्धिमत्ता

उम्मु आमिना पी.एन

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई) कंप्यूटर विज्ञान की वह शाखा है जो कंप्यूटरों को मानव व्यवहार की नकल कर जटिल कार्य हल करने और स्वयं सीखने में सक्षम बनाती है। इसके प्रमुख उपसमूह मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग हैं, जो उच्च प्रदर्शन एल्गोरिथम और तंत्रिका नेटवर्क के माध्यम से समस्याओं का समाधान करते हैं। ए. आई का उपयोग चिकित्सा निदान, दवा डिजाइनिंग, टेली-ट्रीटमेंट, चैटबॉक्स और स्वास्थ्य सेवाओं में रोग विश्लेषण व बेहतर चिकित्सक रोगी संचार के लिए व्यापक रूप से किया जाता है।

टिम कुक के अनुसार 'हम सभी को यह सुनिश्चित करना होगा कि हम AI का उपयोग मानवता के लाभ के लिए करें, न कि मानवता के लिए हानिकारक।' एंड्रयू एनजी ने इस प्रकार कहा है कि "कृत्रिम मेघा का उपयोग विभिन्न उद्योगों में क्रांति लाने के लिए किया जा सकता है।"[1] जरस अल्लस, युज्ञाउएल कहते हैं कि 'मेरा मानना है कि बुद्धिमता को समझने में यह समझना शामिल है कि जान को कैसे प्राप्त किया जाता है, प्रतिनिधित्व किया जाता है, और संग्रहीत किया जाता है, कैसे बुद्धिमान व्यवहार उत्पन्न और सीखा जाता है, कैसे उद्देश्य, और भावनाएं, और प्राथमिकताएं विकसित और उपयोग की जाती है; संवेदी संकेतों को प्रतीकों में कैसे बदल दिया जाता है, कैसे प्रतीकों को तर्क करने के लिए हेरफेर किया जाता है, अतीत के बारे में तर्क करने के लिए, और भविष्य के लिए योजना, और कैसे बुद्धि के तंत्र श्रम, विश्वास, आशा, भय की घटना का उत्पादन करते हैं। और सपने और हाँ दयालुता और प्यार भी। मौलिक स्तर पर इन कार्यों को समझने के लिए, मेरा मानना है कि परमाणु भौतिकी, सापेक्षता और आणविक आनुवंशिकी के पैमाने पर एक वैज्ञानिक उपलब्धि होगी।"[2]

भाषा का विकास तब होता है जब किसी भाषा समूह में अधिक लोगों से संपर्क बढ़ता है, और यही प्रक्रिया कंप्यूटर व मोबाइल जैसे उपकरणों में कृत्रिम बुद्धि के माध्यम से भी होती है। ए. आई मानव की आशा को समझने और बोलने की क्षमता विकसित कर रही है, इसलिए तकनीक को समझकर मशीन से संवाद बढ़ाना आवश्यक है। आधुनिक दौर में मानव और मशीन के बीच बातचीत का यह नया संबंध भाषा के विकास को और आगे बढ़ा रहा है।

कृत्रिम बुद्धि भाषा शिक्षण में उपयोगी तकनीक है, जो छात्रों के स्तर, गति और उद्देश्यों के अनुसार अनुकूल पाठ्यक्रम तैयार करती है। यह अनुवाद, शब्दावली विस्तार, सुनने-बोलने के अभ्यास और सांस्कृतिक विविधता को समझने में मदद करती है। चैटबॉट और जीपीटी जैसी तकनीकें हिंदी सहित अनेक भाषाओं में संवाद को सरल बनाती हैं। माइक्रोसॉफ्ट और गूगल जैसी कंपनियों की ए. आई सेवाएँ अनुवाद, स्क्रीन रीडर और अन्य भाषण तकनीकों के माध्यम से शिक्षा, व्यवसाय, पर्यटन और दिव्यांग सहायता जैसे क्षेत्रों में भाषा के उपयोग को बढ़ावा दे रही हैं, जिससे वैश्विक स्तर पर भाषा का प्रचार-प्रसार सहज हो गया है।

साहित्य, समाज तथा संस्कृति-इसमें ए.आई जनित अवसर तथा चुनौतियाँ हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की जबरदस्त क्षमता के अनगिनत उदाहरण हमारे सामने हैं। इस शक्ति के बारे में बातें अच्छी भी हैं और बुरी भी। कुछ लोगों का मानना है कि यह भविष्य में मानव समाज के लिए विनाश का कारण बनेगा, इसलिए इससे दूर रहना ही बेहतर है। अतः उपयुक्त मार्ग दोनों के मध्य में ही दिखाई देता है।

इसके सकारात्मक प्रभाव इस प्रकार लिख सकते हैं - कृत्रिम आधारित अनुवाद टूल और डिजिटलीकरण ने हिंदी साहित्य को वैश्विक स्तर पर सुलभ बना दिया है। हिंदी में स्वचालित सामग्री निर्माण में मदद कर रहा है, जैसे कि कविताएं, कहानियां, और आलोचनाएं।

नकारात्मक परिणाम, जिन्हें संबोधित किया जाना चाहिए जैसे प्रौद्योगिकी निर्भरता, साइबरबुलिंग और गोपनीयता उल्लंघन इत्यादि। प्रौद्योगिकी में रोजगार के अवसरों को कम करने और आर्थिक असमानता को बढ़ाने की भी क्षमता है। हालाँकि, भारत को अभी भी इस तकनीक को कई अन्य क्षेत्रों में लागू करने के लिए और अधिक प्रयास करने होंगे। इसके अतिरिक्त, यह याद रखना चाहिए कि पर्याप्त कृत्रिम बुद्धिमत्ता सुरक्षा उपायों के अभाव में समाज में सामाजिक और आर्थिक असमानता तेजी से बढ़ सकती है।

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि कृत्रिम मेधा ने हिंदी साहित्य की प्रगति में नए द्वार खोले हैं। इससे साहित्य की रचना, अनुवाद, और आलोचना में नए अवसर पैदा हुए हैं। कृत्रिम मेधा की मदद से हिंदी साहित्य की पहुँच और व्यापकता बढ़ रही है, और नए पाठकों तक पहुँचने का अवसर मिल रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Nilsson.artificial intelligence a new synthesis, page no-1
2. Newspaper, Indian express
3. बालेंदु शर्मा दाधीच 'हिंदी विमर्श की मुख्यधारा में कृत्रिम बुद्धिमता, साहित्य परिक्रमा पृष्ठ 20-21
4. Artificial Intelligence: A Guide for Thinking Humans, Melanie Mitchell, Page-10
5. https://www.nature.com/articles/d41586-024-00639-v

स्नातकोत्तर छात्रा, हिंदी विभाग
सेंट थॉमस कॉलेज,
पाला, कोट्टयम, केरल 686503
Mobile 7591952185

ममता, मेरी माँ की

जानकी पी.एस.

मेरी माँ,
जिसका सान्निध्य मुझे प्रिय है
दर्शन केलिए तरसते मेरे नयन
खुले बाल और लाल बिंदी
बढ़ाती है मनमोहक आँखों की चमक।

आँखों में ममता लिए,
और हम एक पंछी की तरह अपनी क्षितिज की प्रयाण
वह मेरी माँ है,
जिनकी ममता का दीप
अंधकार भगाए, निभाए साथ जीवन के हर मोड़ में।

मेरी माँ
जिसने मुझे दुनिया भर की ममता दी,
हर पल मेरे जीत की प्रतीक्षा में
चुपचाप सबका सहन किया।

जीवन जंग में
उनके तलवार से टपकती लाल रंग,
मेरे गम के सागर से मिला।
उनकी ममता, मिटाये मेरे भय के अंधकार।

हाथ में कठार लिए 'काली' जैसे
माँ तू ने लड़े मेरे जीवन के दानवों से
और दुनिया से भी,
मेरे हर ख्वाहिश,हक केलिए।

3rd SEM FYUGP,
Psychology,
एम.जी.कॉलेज,
तिरुवनंतपुरम

केरल हिंदी साहित्य अकादमी : वार्षिक रिपोर्ट 2024

डॉ.एस. लीलाकुमारी अम्मा

केरल हिंदी साहित्य अकादमी दक्षिण भारत में ही नहीं, पूरे भारत में तथा वैश्विक स्तर पर ख्यातिप्राप्त संस्था है। पिछले बयालीस सालों से अकादमी के संस्थापक अध्यक्ष पद्मश्री एन.चन्द्रशेखरन नायर के कुशल नेतृत्व में सारे कार्यकलाप सुचारू रूप से चल रहे थे। दस जनवरी बीस सौ बाईस को विश्व के सारे देश विश्व हिंदी दिवस मना रहे थे कि आचार्यवर अपनी साधना को विराम देकर वैंकुंठवासी हुए। तब से पद्मश्री डॉ.नायर जी की साहित्यिक सेवा से प्रेरणा लेते हुए डॉ.एस.तंकमणि अम्माजी और पूर्व न्यायमूर्ति हरिहरन नायरजी के नेतृत्व में अकादमी ने साहित्यिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया।

ब्रह्मलीन पद्मश्री डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जन्मदिन समारोह, केरल हिंदी साहित्य अकादमी चौंतालिसवाँ वार्षिक सम्मेलन एवं डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर गवेषणा पुरस्कार समर्पण संयुक्त रूप से अठाईस दिसंबर बीस सौ चौबीस, सुबह दस बजे मन्नम मेम्मोरियल हॉल स्ट्राच्यु में आयोजित हुए। अकादमी के संरक्षक और पूर्व न्यायाधीश उच्च न्यायालय केरल, पूर्व ऑबुड्समैन, अध्यक्ष केरल सरकार, अगाड़ी समुदाय कल्याण कम्मिशन जस्टिस श्री.हरिहरन नायर ने अध्यक्ष का पद अलंकृत किया।

श्रीमती राजपुष्पम के प्रार्थनागीत के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। उसके बाद महासचिव डॉ.एस.सुनन्दा ने मंच व सभागार में उपस्थित सभी विद्वत्जनों का हार्दिक स्वागत किया। पद्मश्री डॉ.अश्वति तिरुनाल तंपुराट्टी उद्घाटक बनी। उन्होंने गुरुवर की क्रान्तदर्शी विचारधारा की सराहना करते हुए कहा कि केरलीय जनता अपनी सहिष्णुता और विशाल मन के लिए स्तुति के पात्र हैं जो किसी भी भाषा को उसकी तन्मयता के साथ स्वीकार कर लेती हैं और अनुवाद कार्य में पूरी तरह तत्पर रहती हैं। तत्पश्चात हिंदी साहित्य अकादमी की पत्रिका का विमोचन कार्य संपन्न हुआ। अध्यक्ष ने अपने भाषण में कहा कि कृत्रिम बुद्धि ने साहित्य के क्षेत्र में तहलका मचा दिया है और कहा कि गुरुवर के परिवारजन उनकी महत्वाकांक्षा को आगे बढ़ाने में तन-मन-धन से जुडे हुए हैं, बिना किसी ट्रस्ट के।

मुख्य वक्ता श्री.टी.के.ए.नायर आई.ए.एस. ने कहा कि भारत की भावात्मक एकता को दृष्टि में रखकर ही डॉ.नायरजी ने केरल हिंदी साहित्य अकादमी की स्थापना की थी। पुरस्कार विजेता डॉ.जे.अजिताकुमारी के शोध प्रबंध की घोषणा करने के पहले पुरस्कार निर्णय समिति के अध्यक्ष डॉ.पी.जे. शिवकुमार ने पुरस्कार निर्णय समिति के सदस्यों का परिचय दिया और पुरस्कार की घोषणा की। गुरुवर की मंशा के मुताबिक एक उत्तम शोधार्थी को उनके उत्तम शोध प्रबंध के लिए पचास हज़ार नकद पुरस्कार एवं स्मृतिफलक प्रदान करना इसका लक्ष्य रहा, इस कामयाबी पर सब खुश थे।

आशीर्वाद भाषण में सभी विद्वानों ने अकादमी की उपलब्धियों की खूब प्रशंसा की। गाँधीस्मारक निधि के अध्यक्ष डॉ.राधाकृष्णन ने डॉ.नायरजी के संपूर्ण व्यक्तित्व का परिचय दिया। श्री.के.रामन पिल्लै की राय में डॉ.नायरजी साहित्य को संस्कृति का कवच मानते हैं तथा इसका सीधा संबंध जीवन के साथ जोड़ते हैं। संग्रथन पत्रिका के मुख्य संपादक प्रो.डॉ.वी.वी.विश्वम ने कहा कि यशस्वी गुरुवर स्वयं एक इतिहास है। वे भारतीय संस्कृति के वक्ता रहे। पूर्व प्राचार्य एवं संग्रथन पत्रिका के संपादक डॉ.एम.एस. विनयचन्द्रन ने उन्हें हिंदी–मलयाळम साहित्य के शब्द शिल्पी एवं तपोनिष्ठ आचार्य माना। श्रीशंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफसर डॉ.श्रीलता विष्णु ने उनको साहित्य के आख्याता, व्याख्याता तथा प्रतिष्ठाता के रूप में

चित्रित किया। गुरुवर की प्रियपुत्री नीरजा राजेन्द्रन ने पिता से प्राप्त प्रत्येक मानवीय गुण का गिन-गिनकर वर्णन किया। फिर पुरस्कृत शोधार्थी का जवाबी भाषण हुआ। सभा का संचालन और कृतज्ञता ज्ञापन हिंदी प्रशिक्षण केन्द्र की पूर्व अध्यापिका श्रीमती.गीताकुमारी ने किया था। राष्ट्रगीत के गीत के बाद सभा की परिसमाप्ति हुई।

हर वर्ष विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम अकादमी में संपन्न होते रहते हैं। इस साल अकादमी द्वारा संपन्न कार्यक्रम क्रमश: इस प्रकार हैं- स्मृति दिन समारोह, विश्व हिंदी दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस, हिंदी पखवाडा समारोह, और हिन्दी साहित्य की प्रगति और कृत्रिम मेधा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी। इसमें उत्तर और दक्षिण के साहित्यकारों एवं हिंदी प्रेमियों की सक्रिय भागीदारी हुई थी।

अकादमी को सदैव उसके संरक्षक न्यायमूर्ति श्री. एम.आर.हरिहरन नायर के परामर्श मिलते रहते हैं। महासचिव एवं नायर जी की पुत्री डॉ.एस.सुनन्दा तथा कार्यकारिणी समिति के सदस्यों के सहयोग से अकादमी के कार्य अच्छी तरह चल रहे हैं। आगे भी सभी हिंदी प्रेमियों, हिंदी सेवियों और हिंदी साहित्यकारों के पूरे सहयोग से अकादमी के कार्य निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर होंगे, ऐसी कामना के साथ वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत सभा के सामने समर्पित है

— continued from Page 52

है। गिन्नी रोमेटी के अनुसार “कुछ लोग इसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता कहते हैं, लेकिन हकीकत यह है कि यह तकनीक हमें बेहतर बनाएगी। इसलिए, मुझे लगता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बजाय, हम अपनी बुद्धिमत्ता को बढ़ाएँगे।”[4]

ज्ञान और जानकारी के विशाल भंडार तक पहुँच ने साहित्यकारों को किसी भी विषय पर लिखने से पहले तथ्यों, उद्धरणों और पृष्ठभूमि को आसानी से जुटाने में सक्षम बनाया है। यह शोध, आलोचना और अकादमिक लेखन के क्षेत्र में विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध हो रहा है। साथ ही, यह उन नए लेखकों के लिए भी अवसर प्रदान करता है जिनके पास विचार तो हैं पर अभिव्यक्ति की कमी है। ए.आई की मदद से वे अपने विचारों को शब्दों में ढाल सकते हैं, जिससे साहित्य में नई प्रतिभाओं का प्रवेश आसान हो गया है। फिर भी इसके साथ कई चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं। सबसे बड़ी समस्या मौलिकता का संकट है क्योंकि एआई मौजूदा डाटा से सामग्री तैयार करता है। साहित्य का असली मूल्य उसकी मौलिकता और भावनात्मक गहराई में होता है, पर मशीन निर्मित लेखन अक्सर इस कसौटी पर खरा नहीं उतरता। यदि लेखक अत्यधिक एआई पर निर्भर हो जाए तो उसकी खुद की सृजनात्मकता कम हो सकती है और साहित्य अपनी संवेदनात्मक आत्मा खो सकता है। इसके अलावा, पाठकों के लिए यह पहचानना कठिन होता जा रहा है कि रचना लेखक की है या मशीन द्वारा तैयार की गई। एआई तथ्यों को जोड़ने में सक्षम है, पर उसमें जीवन का अनुभव और भावनात्मक गहराई नहीं होती, जिससे रचनाएँ कभी-कभी यांत्रिक और शुष्क प्रतीत होती हैं। सबसे गंभीर चुनौती यह है कि हिंदी साहित्य की जड़ें लोककथाओं, लोकगीतों और सांस्कृतिक अनुभवों में हैं, जबकि एआई मुख्यतः इंटरनेट-आधारित डाटा पर निर्भर करता है। इससे परंपरागत और सांस्कृतिक गहराई का अभाव रह सकता है और भविष्य में भारतीय साहित्य की मौलिकता एवं सांस्कृतिक धरोहर को खतरा हो सकता है। फिर भी यह कहा जा सकता है कि भाषा किसी भी समाज और संस्कृति की पहचान होती है और तकनीक हिंदी को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने में बड़ी भूमिका निभा रही है। स्टीफन हॉकिंग के अनुसार “कुछ लोग इसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता कहते हैं, लेकिन हकीकत यह है कि यह तकनीक हमें बेहतर बनाएगी। इसलिए, मुझे लगता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बजाय, हम अपनी बुद्धिमत्ता को बढ़ाएँगे।”[5]

कृत्रिम मेधा ने हिंदी को अधिक सक्षम और व्यापक बनाया है और यह भारतीय ज्ञान को विश्व की बड़ी जनसंख्या तक पहुँचाने का माध्यम बन सकती है। प्रतिस्पर्धा और प्रतियोगिता पर आधारित विश्व व्यवस्था को सह-अस्तित्व और समावेशन की दृष्टि प्रदान करने में हिंदी की भूमिका निश्चित ही और अधिक सशक्त हो सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बालेन्दु शर्मा दाधीच, ‘हिंदी विमर्श की मुख्यधारा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता’, साहित्य परिक्रमा, जुलाई- 2023, पृष्ठ 12,
2. ‘हिंदी विमर्श की मुख्यधारा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता’, पृष्ठ 20,
3. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसः भविष्य का विज्ञान”- बालेन्दु शर्मा दाधीच,
4. Introduction to artificial intelligence Book by wolfgang ertel

स्नातकोत्तर छात्रा,
हिंदी विभाग, संत थॉमस महाविद्यालय
पाला, कोट्टयम, केरल - 68657
Mobile: 7594952175

44वाँ वार्षिक सम्मेलन और डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर हिन्दी गवेषणा पुरस्कार (2024) समर्पण समारोह का कार्यक्रम और दिवंगत पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर 102वाँ जन्मदिन समारोह

डॉ. अजिताकुमारी को प्रमाण पत्र देती हुई तम्पुराट्टी

डॉ. अजिताकुमारी को 50,000 रूपये का ड्राफ्ट देते हुए

डॉ. एन. राधाकृष्णन

श्री. के. रामन पिल्लै

प्रो. (डॉ.) वी.वी. विश्वम

श्रीमती नीरजा राजेन्द्रन

प्रो. (डॉ.) के. श्रीलता

प्रो. (डॉ.) एम.एस. विनयचन्द्रन

डॉ. जे. अजिता कुमारी

डॉ. विष्णु आर.एस.

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के 44वें वार्षिक समारोह में उद्घाटन भाषण देती हुई पद्मश्री डॉ. अश्वति तिरुनाल गौरी लक्ष्मी बाई तम्पुराट्टी

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के 44वें वार्षिक समारोह में तम्पुराट्टी को उत्तरीय पहनाकर आदर करते हुए जस्टिस श्री. एम.आर. हरिहरन नायर

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के 44वें वार्षिक समारोह में मुख्य भाषण देते हुए श्री. टी.के.ए. नायर

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी डी-1, लक्ष्मी नगर, पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर रोड, पट्टम पालस पोस्ट, तिरुवनन्तपुरम 695004
के लिए शोध पत्रिका डॉ. एन. सुनन्दा, महासचिव द्वारा प्रकाशित और टाईप से & ले-आउट प्रोग्रसीव ग्राफिक्स, तिरुवनन्तपुरम, मुद्रण अक्षरा ऑफ्सेट, तिरुवनन्तपुरम